।। ब्रम्हचारी विठ्ठलराव के सम्वाद ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ब्रम्हचारी विठ्ठलराव के सम्वाद का अनुवाद ||

|| चौपाई ||

अथ ब्रम्हचारी विठ्ठलराव को समाद जलोदा मे हुवो ||
बस्ती त्याग बन मे आया || त्राटक ध्यान लगायो ||
उलटी दिस्ट खेंच कर फेरो || वहा जा मे सुख पायो ||
ब्रम्हचारी जी तोभी कच्चा || अे नाहक त्याग कियो तम घर को || गुरु नही मिलिया सच्चा
||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजसे ब्रम्हचारीने कहां की मैंने बस्तीका त्याग किया है,मैं बनमें रहने आया हुँ और बनमें आकर त्राटकका ध्यान लगाता हुँ । दृष्टी उलटी खींचकर भृगुटीमें फेरता हुँ इसकारण उपर भृगुटीमें मुझे आनंद मिलता हैं । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने ब्रम्हचारीजी से कहाँ की तुम बस्ती त्यागकर बनमें आए हो,बन में त्राटक ध्यान लगाते हो,वहाँ ध्यान का सुख लेते हो फिर भी तुम कच्चे हो । रामजी पाने के लिए किसी को भी घर संसार का त्याग करने का कोई कारण ही नही रहता और तुमने घर संसारका त्याग किया है । इसका अर्थ तुम्हे सच्चा गुरु नहीं मिला । सच्चा गुरु मिला होता तो तुम्हे तुम्हारा गुरु घर बारका त्याग करने ही नही देता था । घट में ही रामजी प्रगट करा देता था ।।।१।।

राम तुमारे हें घट माही || प्रेम प्रीत सूं पावो ||
हट तो कियां राम नही रीजे || कोई मूरख समझावो ||२||

अरे ब्रम्हचारी राम सर्व व्यापी हैं । सभी साधु संत तथा वेद कहते हैं । इसका मतलब ही रामजी सभी घट घट में है । जब रामजी सभी घट घट में हैं तो वह तुम्हारे भी घट में हैं । ऐसा राम उससे प्रेम प्रीती करने से ही प्राप्त होता । वह राम जिसने सर्व सृष्टी बनाई हैं,सब के घट बनाएँ,पाँच तत्व बनाएँ और सभी को महासुख देता हैं । वह मन का या तन का तथा तन का हट करना यह किसी मुर्ख को रिझाना हैं । रामजी मुर्ख नहीं । इसलीये यह रीत रामजी को प्रसन्न करने की रीत नही बन सकती ।

ब्रम्हचारी भेद न पाया || अे नाहक त्याग कियो तम घर को || तन कूं बन किंऊं लाया||

ब्रम्हचारी तुमने घरमें रहकर घटमें रामजी पानेका भेद नहीं पाया । घरमें रहकर घटमें ही रामजी पानेका सच्चा गुरु खोजकर भेदमें ही रामजी पाने का सच्चा गुरु खोजकर भेद पाना था । उसकी जगह नाहक ही घरका त्याग किया और तनको बनमें ले आये । ब्रम्हचारी ये तन बनमें क्यो लाया । घरमें बैठकर घटमें ही रामजी मिले ऐसा भेदी गुरु क्यों नही खोजा? ।।२।।

ब्रम्हचारी बुज्यो तम कोण मुद्रा मे रेता हो || तब सुखराम जी महाराज बोलिया ||

|| चोपाई ||

हे ब्रम्हचारी कहुँ में तोई || मुद्रा जे नर साजे सोई ||

ज्यारे प्रेम उमंग नही आयो ।। वां मुद्रा मे मन लगायो ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजको ब्रम्हचारीने पूछा की आप कौनसी मुद्रा में रहते हो– तब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी से बोले की,हे ब्रम्हचारी जीस मनुष्य के हंस के घटमें प्रेम उमंग नही आया ऐसे मनुष्यने ही मन का हट करके मुद्रा साधनेमें मन लगाया हैं ।१।

ज्हां लग मुद्रा साझे कोई ।। तब लग नर बेगारी होई ।।
ब्रम्हचारी पद कदे न पावे ।। साझन हट मुढ कूं भावे ।।२।।

ऐसे मनुष्य जब तक मुद्रा साधने में मन लगाते है,तब तक वे मनुष्य बेगारी ही रहते हैं । मतलब कालके दु:खमें ही रहते हैं । ऐसे मनुष्यको महासुखका आनंदपद कभी नही मिलता । ऐसे मनुष्य चतुर नही रहते,मुर्ख रहते । जगत में हट करके साधना करना यह मुर्ख मनुष्य को ही अच्छा लगता,ऐसा हट करके साधना करना यकातुर मनुष्य को कभी नहीं भाता ।।।२।।

मेरी मुद्रा तोय बताऊँ ।। उमंग्यो प्रेम ब्होत सुख पाऊँ ।।
स्हेज समाध रात दिन होई ।। सूर्त निर्त को काम न कोई ।।३।।

अरे ब्रम्हचारी मैं तुझे मेरी मुद्रा बताता हुँ । मुझे घटमें ही रामजी मिलनेसे मेरे निजमनमें रामजीसे प्रेम उमंग कर आता हैं । जिससे मुझे बहुत सुख मिलता हैं । ऐसे रामजीके साथ सहजमें ही मेरी रात दिन समाधि लगी हुयी रहती है । मुझे मनका हट करके मुद्रा साधनेवालोके समान मुद्रा समाधि बने रहनेके लिए जैसे सुरत निरतका उपयोग सदा करना पडता वैसे मुझे समाधि लगानेमें सुरत निरत का कोई उपयोग ही नहीं करना पडता । (इसलिए मुझे सुरत निरत का कोई काम नही ।) ।।३।।

क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। गिगन मंडळ मे रेण हमारी ।।
ताळी लगे न तूटे कोई ।। मन पवना झूटा मिल दोई।।४।।

अरे ब्रम्हचारी सुनो–मै जगत में बास नहीं करता । मैं गीगन मंड्ल में बास करता हुँ । गीगण मंड्ल में मेरी रामजी के साथ ताली लगी हैं । वह ताली तुटती नही । उस ताली को लगाने के लिए मन व श्वास इन दोनोका भी आधार नही चलता मन व श्वास के आधारसे रामजीसे बिना तुटनेवाली ताली लगेगी,यह समझना झूठा हैं । कारण मन व श्वास के पहुँच के परे रामजी का पद है । वह ताली हंस के घट में प्रेम प्रीत उमंग के आनेसे ही लगती ।।।४।।

मन पवना को काम न कोई ।। कुद्रत कळा घट मे होई ।।
ब्रम्हचारी आ कोई न पावे ।। ज्यां सुण रीत उलट चढ जावे ।।५।।

हे ब्रम्हचारी–कुद्रतकला जिससे हंस घटमें ही उलटकर गीगनमें चढ जाता वह रीत घट में ही हैं । ऐसी कुदरतकला जागृत करनेमें मन व श्वासके साधनोंका उपयोग नहीं होता ।

इसलिए मन व श्वास के आधार से साधना करनेवालो के घट में उलटकर गीगण में चढ जाने की रीत नही मिलती ।।।५।।

मुद्रा पांच हद मे होई ।। जो साझे ज्यां प्रेम न कोई ।।
क्रम करे ब्रम्हचारी सारा ।। सो पवन सुं पचणे हारा ।।६।।

जिन साधकोको रामजीसे प्रेम नही आता वे पाँच प्रकारकी खेचरी,भुचरी,चाचरी अगोचरी व उन्मुनी ये मद्रा तथा माया के कर्मकांड करनेवाले साधक रहते । या माया के कर्मकांड या पचपचकर श्वासो के आधार से योग प्राप्ति के साधन करते हैं । वे सारे मनुष्य हद में याने होणकाल में ही रहते हैं । वे अगम याने रामजी के देश गीगण मंडल में कभी नहीं पहुँचते ।६।

क्रम करे सो तन हट भाई ।। मुद्रा पाच मन हट माही ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। सत्त शब्द की हे बिध न्यारी ।।७।।

ब्रम्हचारी सुनो,मायाका कर्मकांड यह तनका हट हैं,तो पाँच मुद्रा साधना यह मनका हट हैं । सतशब्दकी प्राप्ति सतशब्दकी विधी तन हट और मन हटसे न्यारी हैं । सतशब्द की प्राप्ति हंस के उरसे प्रेम उमंग आने से ही होती हैं ।।।७।।

केई उन्मुनी सूं मन लगावे ।। केई खेचरी सु हट चावे ।।
केई चाचरी साझे भाई ।। केई भूचरी गहे जन आई ।।८।।

ब्रम्हचारी कोई साधक उन्मुनीमें मनको लगाता हैं तो कोई खेचरी में मन का हट करता हैं । तो कोई चाचरी की साधना करता हैं,तो कोई भुचरी को धारण करता हैं,तो कोई अगोचरी में मन का हट करता हैं,इसप्रकार मन का हट करके पाँच प्रकारकी मुद्रा की साधना साधते हैं ।।।८।।

क्हे सुखराम अगोचर आगे ।। ज्हां लग ओ मन जायर लागे ।।
मन छिट कावे जब बिध भाई ।। ब्रम्काारी रेहे रीत न काई ।।९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारीसे कहते है की,जिसका निजमन(हंस निजमन) अगोचरी के आगे जाकर लगता हैं,ऐसे संत का निजमन माया के मन के हट की(मन)सभी मुद्रा साधने की विधियाँ त्याग देता हैं । इसकारण ऐसे संतो में मन के हट की मुद्रा साधने की विधियाँ रहती ही नहीं ।।।९।।

मुद्रा पांच जोग के माही ।। भक्त जोग मे मुद्रा नाही ।।
सप्त भोमका सब जन गावे ।। से जोगारंभ मांय नही पावे ।।१०।।

पवन योग में(श्वास के योगसे)ये पाँच मुद्रा हैं । जब की कुद्रतकला के कैवल्य भक्तयोग में ये पाँच मुद्रा नहीं है । मतलब पाँच मुद्रासे पवन योग की प्राप्ति होती हैं,परंतु इन पाँच मुद्रासे कैवल्य भक्तयोग की कभी प्राप्ति नहीं होती । जैसे कोई जन सप्तभोमका की साधना करते हैं । वह सप्तभोमका की विधी पाँच प्रकारकी मुद्रा साधक के योग प्राप्ति के

विधी में नहीं हैं । वैसे ही पवन योग में जो पाँच मुद्रा हैं । वे मुद्रा कुदरतकला के भक्तयोग में नही हैं ।।।१०।।

द्वादस मंत्र सन्यास बखाणे ।। सो बेराग हिर्दे नही आणे ।।
गीता सकळ अेककर गावे ।। गायत्री सब बेद बतावे ।।११।।

संन्यासी द्वादश मंत्र का जप करता हैं । ऐसे द्वादस मंत्र का जप करना यह बैरागी अपने हृदयमें भी नहीं लाता हैं । इसप्रकार कैवल्य भक्तयोगी के मन में योगारंभीयों के समान की मुद्रा की साधना करना यह आता नहीं है । गीता में कृष्ण सभी चल अचल में एकमात्र हैं ऐसा गाता हैं । तो ब्रम्हा सभी वेदोमें गायत्री ही सबकुछ है ऐसा गाता हैं । जिसप्रकार गीता में कृष्ण एकमात्र है यह बताया है,तथा वेदो में गायत्री सबकुछ है यह बताया हैं । इस तरह पवन-योग पाँच मुद्रा यही सबकुछ है,यह गाता हैं ।।।११।।

पवन जोग क्रम कर साजे ।। भक्त जोग करमा सु लाजे ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। प्रम भक्त युं सब सुं न्यारी ।।१२।।

इसप्रकार पवनयोग माया के कर्म करके साधे जाता हैं,तो भक्तियोग माया के कर्म करके साधे नहीं जाता। इसप्रकार परमभक्तियोग यह पवनयोग,सप्तभोमका,द्वादस मंत्र,गीता,गायत्री साधना इनसे न्यारा हैं । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारीको बता रहे हैं ।१२।

गावे बजावे नाचे कोई ।। सो नवध्या भक्त अंग कहुं तोई ।।
बाचे सुणे अर्थ जो कर हे ।। पूजा अर्चा पात सिर धर हे ।।१३।।

गाना,बजाना,नाचना,बाचना,सुनना,अर्थ करना,पुजा अर्चना करना,पान फूल पानी चढाना ये सभी नवधा भक्ति के अंग हैं ।।।१३।।

बिस्न क्रम अे नाव कहावे ।। नव प्रकार सकळ जन गावे ।।
जोग कर्म इन सुं हे न्यारा ।। पवन जोग का ओर बिचारा ।।१४।।

सभी वैष्णव साधु ये नवप्रकारके कर्म करके विष्णु भक्ति साधते हैं,तो ब्रम्हाके सांख्ययोगी, सांख्ययोगी का कर्म करके साधते हैं । परंतु यह सांख्ययोग कर्म बैष्णव कर्म से न्यारा हैं । इसीप्रकार शंकर का पवनयोग नवप्रकार की विष्णु भक्ति तथा ब्रम्हा के सांख्ययोग इन दोनोसे न्यारा हैं । जैसे विष्णु,ब्रम्हा,शंकर की भक्तियाँ न्यारी न्यारी हैं । उसीप्रकार परम-भक्ति इन सभी,विष्णुभक्ति,ब्रम्हा की भक्ति तथा शंकर की भक्ति से न्यारी हैं ।।।१४।।

आ हद बेहद की क्रिया होई ।। दोन्या परे न जावे कोई ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। निज नाव की भक्ति न्यारी ।।१५।।

पाँच मुद्रा,सप्तभोमका,द्वादस मंत्र,गायत्री,विष्णु भक्ति,सांख्ययोग,पवनयोग इन सभीकी कर्म क्रिया हद बेहदके पहुँच की हैं । हद बेहदके परे पहुँचनेकी नहीं हैं । परंतु

निजनावकी भक्ति हद बेहदके परे अगममें जावे की हैं,इसलिए निजनामकी भक्ति सभी कर्म क्रियासे न्यारी हैं,ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे हैं ।।।१५।।

दुर्वासा तप जोग कमाया ।। गोतम कपल उद्यालक भाया ।।
बिश्वा मिंत्र साज्यो सोई ।। निजनाम की गम न कोई।।१६।।

दुर्वासा,गौतम,कपील,उद्दालक,विश्वमित्र,इन्होने मन तथा तन का तप करके पवनयोग प्राप्त किया परंतु इन किसीको भी निजनाम का अनुभव नहीं हुआ ।।।१६।।

क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। नही मानो तो वसिष्ट मुनिधारी ।।
निज नांव वशिष्ट मुनि पाया ।। ज्या बेद कर्म सबही छिटकाया ।।१७।।

ब्रम्हचारी को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की अगर तु मेरी बातको नही मानते हो तो सुनो,यह मेरी निजनामकी विधी वशिष्ठमुनी ने धारण की । वशिष्ठ मुनीने दुर्वासा, गौतम,कपील,उद्दालक विश्वमित्रके समान वेद कर्म नही किए । वशिष्ठमुनीने वेद कर्म त्यागकर निजनाम की विधी धारन करके निजनाम का अनुभव किया ।।।१७।।

सुखदेव प्रेम प्रीत मे भीना ।। बिना नांव कोई क्रम न कीना ।।
जनक बदे राजा सुण भाई ।। निज नांव की भक्ति पाई ।।१८।।

जैसे वशिष्ठ मुनी वेद के कर्म त्यागकर निजमन में प्रेम प्रित से रंग गया(निजनाव के बिना और कोई इजा नही किया)वैसे ही सुखदेव व राजा जनक विदेही भी निजनाममें भिने और निजनाव की भक्ति करके निजनाम पाये ।।।१८।।

तां प्रताप सुखदेव भीना ।। बिना नांव कोई क्रम न कीना ।।
संक्रा चार्ज के पत आई ।। तब रिष कर्म सब दिया बहाई ।।१९।।

वेद व्यास का पुत्र सुखदेव जनक राजाके प्रतापसे निजनामकी भक्तिमें रंग गया सुखदेवने नाम जप के अलावा दुजा वेद का कोई भी कर्म नही किया । इसीप्रकार शंकराचार्य को जब निजनाम का प्रताप समझा तब शंकराचार्यने ऋषी लोगो के सभी वेद,कर्म छोड दिये ।।।१९।।

हस्तामल कुं दत्त समझायो ।। तब निज नांव को प्रचो आयो ।।
जोगी तपी पिंडत रिष ध्यानी ।। पच पच मुवा बोहोत बिध आनी ।।२०।।

योगी,तपस्वी,पंडीत,ऋषी,ध्यानी ये सभी हस्तामल को समझानेमें वेदकी अनेक विधियोका उपयोग करके खप गये,मर गये परन्तु हस्तामलने इन किसी की बात मानी नही ।।।२०।।

हस्तामल मानी नही काई ।। बेद क्रम काळ मुख माई ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। प्रेम नाव की भक्ति न्यारी ।।२१।।

हस्तामल को काल के मुखसे निकलने की विधी चाहिए थी । उसे वेद के सभी कर्मो की विधीयाँ काल के सुख में ही हैं ऐसा उसे ज्ञान से समझता था,जब हस्तामल को दत्तात्रय

ने निजनाम का पराक्रम समझाया व उसे निजनाम यह काल के परे कैसे है,इसका परचा आया तब हस्तामल निजनाम में रंगा । इसप्रकार प्रेम से प्रगट होनेवाली निजनाम की भक्ति मन के तथा तनके हटके भक्तियोसे न्यारी है । ऐसा ब्रम्हचारी को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।।।२१।।

हणुमान सीता रघुराई ।। निज नाव की वां गत पाई ।।
लिछमण कूं सीया समझायो ।। निज नाव प्रेम तब पायो ।।२२।।

हनुमान,सीता,रघुराजा इन तीनोको निजनामकी गती मिली थी । सीता ने लक्ष्मण को निजनाम की विधी बताई तब लक्ष्मण को निजनाम से प्रेम हुआ । निजनाम का परचा लक्ष्मण को घट में मिला ।।।२२।।

बालमिंक नांव बिध पाई ।। बेद करम कीया नही भाई ।।
बालमीक श्रगरो होई ।। ज्यां बेद क्रम कीयो नही कोई ।।२३।।

रामचंद्रके १०००० साल जन्मके पहले त्रेतायुगमें वाल्मीकने(जो पहले रत्नाकर कोली था) निजनामकी विधी प्राप्त की । इस वाल्मीकने वेदके कोई भी कर्म नही किए । इसीप्रकार द्वापार युगमें कृष्णके समय में वाल्मीक सर्गराने निजनाम की विधी पायी । इस वाल्मीक सर्गरा ने भी वेद के कोई भी कर्म नही किये थे ।।।२३।।

निज नाव प्रेम लिव लाया ।। ज्यां पंचायन संख बजाया ।।
सब हेरान हुवा रिष जोगी ।। मधम जात सकळ रस भोगी ।।२४।।

वाल्मिक की लीव व प्रेम निजनाम से थी जिसके पराक्रमसे वाल्मिकने पांड्वोके राजसूय यज्ञमें पंचायन शंख बजाया । यह पंचायन शंख बजाने के लिए वेदो में के प्रविण बडे बडे ऋषी व जोगी हैराण हुअे,परन्तु पंचायन शंख बजा नही सके । जीसने कभी वेद का पठन किया नही,जो मध्यम जात का था तथा संसार के सभी रसोके भोग मे रचमच था,परन्तु साथ में निजनाम में रंगा था । ऐसे वाल्मिक ने निजनाम के प्रताप से पांड्वों के राजसुय यज्ञ में पंचायन शंख बजाया ।

।। साधु दर्शन जावता ।। जेता धरिये पाव ।। पेंड पेंड अश्वमेघ जिग्य ।। फळे जो मनका भाव ।।

द्रौपदी बोली,मैंने यहाँ आने में जितने कदम(पाऊल)डाले है,उतने अश्वमेध यज्ञ हो गये,उसमें से एक अश्वमेध यज्ञ का फल,आप को दे दिया । बाकी मेरे पास शेष रहे । तब वह वाल्मिक, उठकर इनके साथ आया । फिर वहाँ स्वयं द्रौपदी ने,उसके भोजन के लिए छ:तरहके रस का(नमकीन,खट्ठा,तीखा,फीका,मीठा और अनुप)व्यंजन अनेक तरह के बनाये,उसके बाद वाल्मिक को पीढ्ढे पर बैठाकर,सोने की थाली में खाना परोसा । तब वाल्मिक ने,सभी पदार्थ एक जगह मिश्रण करके,उसमे से पाँच ग्रास लिए । (आमंत्रण देते समय,पाँच ग्रास लो,ऐसा भीम ने कहा था । इसलिए उसने सभी मिश्रण करके,पाँच ग्रास लिए ।)तब द्रौपदी को क्रोध आया,कि,मैंने ऐसा अच्छा व्यंजन बनाया और उसका

अलग-अलग कुछ स्वाद न लेकर,इसने मिश्रण करके दिया । अर्थात जाती का श्वपच ही है,ना । यहा इस प्रकार रस में,क्या समझेगा ? नीच जाती ही ठहरा न । ऐसा द्रौपदी ने,मन में भिन्न भाव लिया । उसके(वाल्मिक के) पाँच ग्रास लेने पर,पंचायन शंख बजा तो ठीक,परन्तु ठहर-ठहर कर(कण्हत-कण्हत)बजा । तब श्रीकृष्ण चक्र सुदर्शन लेकर,पंचायन शंख के उपर दौड़ा और बोला,तेरे टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा,अब संत के भोजन कर लेने पर,जोर से क्यों नही बजा ? तब शंख बोला,कि,हे देव,मुझे दोष मत दो,यह दोष द्रौपदी में है । इसने(द्रौपदी ने)मन में ऊँच और नीच का,भिन्न भाव लाया,(वाल्मिक को द्रौपदी ने नीच समझा,इसलिए मैं कराह-कराह कर बजा ।)इस वाल्मिक ने भी,वेद के कोई भी कर्म नही किए थे ।) ।। २४ ।।

ज्यां आयां संख बाज्यो सोई ।। रिष पच मुवा बज्यो नही कोई ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। नाव जोग प्रीत हर प्यारी ।।२५।।

ऐसे वाल्मिकके पांड्वोके राजसुय यज्ञमें पधारनेके कारण पंचायन शंख बजा । अन्य ऋषी, योगी पचपच कर खप गये,थक गये परन्तु किसीसे भी शंख बजा नही । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे है की जीसे निजनाव के जोग से प्रिती है,वही हरी को प्यारा हैं । यह पांड्वों के राजसुय यज्ञ के परचे से समझो ।।।२५।।

राज जोग ओ कहिये भाई ।। नव जोगेश्वर रहया समाई ।।
सोम रिष ओ जोग कमायो ।। सो जन पछे नाम दे गायो ।।२६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारीको कह रहे कि,मैं कह रहा हुँ वह योग सब योगोका राजा हैं,इसलिए इसे राजयोग कहते हैं । इस राजयोग में नौ जोगेश्वर मगन हुअे थे । इसी राजयोग को आदि में सोमऋषीं ने प्राप्त किया था । तो अभी अभी कलीयुग में नामदेव ने प्रगट किया ।।।२६।।

संत अनेक चडया गढ सोई ।। कहाँ लग गिण बताऊं तोई ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्काारी ।। निज नांव बिध सब सूं न्यारी ।।२७।।

इसप्रकार अनेक संत दसवेद्वारके गढ पर चढ गये । इन्हे गिनके भी बताऊ तो कहाँ तक गिन के बताऊ । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे की इसप्रकार जीस निजनामके आधार से संत दसवेद्वार के गढ पर चढ गये वह विधी ऋषी व योगीयोके कर्मो से न्यारी हैं । वह विधी तुम धारण करो ।।।२७।।

नवध्या भक्त रीत सो होई ।। जोग क्रम न्यारा क्हुं तोई ।।
तीजी रिख रीत सुण भाई ।। चोथी बिध सन्यांस्यां पाई ।।२८।।

जगत में अनेक भक्तियाँ हैं । जैसे नवद्या भक्ति की एक रीत है,तो जोग कर्मीयो की नवद्या भक्तिसे न्यारी ऐसी दुजी रीत हैं । इन दोनोसे ऋषीयोकी तीजी ही न्यारी रीत हैं । तो संन्यासीयो की इन रीतियो से न्यारी ऐसी चौथी ही रीत हैं । इसप्रकार प्रेमजोगी की

इन चारो से न्यारी रीत हैं ।।।२८।।

प्रेम जोग ऊंच पद पावे ।। तो हट जोग सब ही छिटकावे ।।
हट जोग सो बेद बताया ।। नवध्या प्रेम भक्त लग भाया ।।२९।।

ऐसे प्रेमजोगी प्रेमजोग साधकर इन चारो से अलग ऐसा अगम देश का उंचा पद पाते हैं । ऐसे प्रेमयोगी वेद ने बताये हुअे हट योग,नवद्या भक्ति तथा प्रेमभक्ति तक की सभी अन्य माया की भक्तियाँ प्रेमभक्ति पाने छोड देते हैं ।।।२९।।

ग्यान बिग्यान कही सब आणी ।। प्रम हंस बदेह बखाणी ।।
कूंची क्रम जोग की सारी ।। मंत्र ध्यान नव भक्त बिचारी ।।३०।।

वेदमें परमहंस तथा विदेह ज्ञान विज्ञानका बखाण किया हैं । इसीप्रकार योगाभ्यासकी कूंची याने चाबी सभी प्रकार के योग,मंत्र,ध्यान नवविधा भक्ति इन सबका बिचार वेद ने गाया हैं । ।।३०।।

अे तो सकळ बेद ले गाया ।। नाना बिधकर आण सुणाया ।।
पण छुछम बेद बेदां मे नाही ।। सो पावे सो सत्त क्हाही ।।३१।।

इसप्रकार की सभी नाना विधी की भक्तिया वेद ने बताई हैं,परन्तु सुक्ष्म वेद की भक्ति वेद ने बताई नहीं है । यह सुक्ष्म वेद की विधी जो प्राप्त करता है,वही काल के मुख से मुक्त होकर सत्त पद मे जाता हैं ।।।३१।।

बेद भेद तीनुं जुग बांधा ।। छुछम बेद बेदा नही लाधा ।।
कण आयां कूं कसदे बावे ।। यूं छुछंम बेद ज्हां बेद न गावे ।।३२।।

वेद,भेद,लबेद,इन तीन भक्तियो में जगत रंग गया है । छुछ्म वेद की भक्ति वेद में न होने के कारण जगतने वह धारण नही की हैं । जीसको छुछ्म वेदकी भक्ति मिली है वह वेद,भेद, लबेद,की भक्तियाँ करना त्याग देता हैं । जैसे किसान कुटार में से अन्न निकाल लेता है,और कुटार फेक देता हैं,ठीक उसीप्रकार छुछ्म वेद का भेद,वेद,भेद लबेद की कर्म क्रिया की भक्तियाँ त्याग देता हैं ।।।३२।।

बेद भेद केहेता हे कोई ।। से सुण जोग कूंची सब होई ।।
बेद भेद कर सोभा चावे ।। क्रम जोग इधका कर गावे ।।३३।।

जो जो वेद भेदका ज्ञान कहते हैं,वह कर्मयोग साधने तक की ही कुंची याने चाबी हैं । वे ज्ञानी कर्म योग को उंचा समझकर कर्म योग की तथा वेद भेद की शोभा करते है ।।।३३।।

क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। छुछम बेद बिध इन सूं न्यारी ।।
गोरख भर्तरी गोपीचंदा ।। जोगारंभ साज हुवा बंदा ।।३४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे की छुछ्म वेद इन वेद भेद के कर्म योग से न्यारा हैं । वेद भेद के कर्म योग की साधना करके गोरख भर्तरी,गोपीचंद ये

जगतमें वेद भेद के बंदे माने गये ।।।३४।।

कूंची करम साज देहे झाडी ।। पवन दियो गिगन पर चाड़ी ।।
अे तो सिध हुवा जुग माही ।। देही रखी काळ बस नाही ।।३५।।

गोरख,भर्तरी,गोपीचंदने कर्मयोगकी कुंची साधकर देहकी जाँच पड्ताल की और सांसको भृगुटी में चढा दिया । ये ऐसे मायाके कर्म योगकी साधनासे जगतमे सिध्द हो गये । सिध्दाई के बल से इन्होने देहको कालके वशसे बचा लिया व महाप्रलय तक देहको अमर कर दिया ।।।३५।।

चंद सुर धरण मिट जावे ।। तहाँ लग काळ निकट नही आवे ।।
पण ने :छे सुण जम बस होई ।। म्हा प्रळा मे बचे न कोई ।।३६।।

इन गोरखनाथ भृर्तृहरी और गोपीचंद के पास जब तक चांद सुरज धरती प्रलय में नही जाते तब तक काल निकट नही आता परन्तु महाप्रलय में चांद सुरज धरती मिटती उस दिन ये योगी भी काल के वश होकर मिट जाते इसमें कोई फरक नही होता ।।।३६।।

युं छुछम बेद बीन झूटा भाई ।। प्रम मोख हंस कोऊं न जाई ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। बेद भेद ऊला बोहारी ।।३७।।

इसप्रकार छुछ्म वेद छोड्कर वेद,भेद,लबेदसे परममोक्ष में कोई भी नही जा सकता । इसलिए छुछ्म वेद के सिवा परममोखमें जाने के लिए वेद,भेद,लबेद के आधार झूठे हैं । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे की वेद भेद के व्यवहार याने आधार परममोक्ष के इधर होणकाल तक के पहुँच के ही हैं ।।।३७।।

रिष ध्रम ओ कहिये भाई ।। ईंद्रा दवन तप जुग माई ।।
मंत्रा दिक गायत्री साजे ।। देव लोक मे जाय बिराजे ।।३८।।

ऋषी लोगो का धर्म तन का तप करके इंद्रियोका दमन करना व जगत में राजा समान फल पाने का हैं या इसके आगे गायत्री के समान मंत्रादिक की साधना करके देवताके लोगोमें जाकर बिराजमान करना यहाँ तक के पहुँच का हैं ।।।३८।।

अेसी पोंच रिषां की होई ।। बिस्न लोक लग पोंचे सोई ।।
तेज पुंज की काया पावे ।। मन चावे सोई कर्र बतावे ।।३९।।

तो कुछ ऋषी लोग नवविद्या की भक्ति साधके विष्णु लोग में पहुँचते है । विष्णु के देवता लोग में तेजपुंज की काया पाते हैं और उनका मन(मन)चाहे वह परचे चमत्कार करके बताते है । ।।३९।।

अेसी पोंच रिषां की होई ।। सुख दु:ख संग मिटयो नही कोई ।।
छुछम बेद रिष किणीहन पायो ।। प्रम मोख को भेद न आयो ।।४०।।

तेजपुंज की काया पाना व मन चाहे वह परचे चमत्कार करके बताना ऐसी पोहोच ऋषी लोग प्राप्त कर लेते हैं,फिर भी इन ऋषीयोंको सुख के साथ काल का दु:ख भोगना

पड्ता हैं । इन ऋषीयोंका कालका दु:ख मिटता नही हैं । इन ऋषीयोको छुछम वेद न मिलनेके कारण परममोक्षका भेद मिला नही,इसलिए इनका सुख के साथ दु:ख भोगना मिटा नहीं ।।।४०।।

अवागवण रेहेत नही हूवा ।। देव लोक मे सब रिष जूवा ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। यूं छुछम बेद बिना बिधान कारी ।।४१।।

ये सब ऋषी मृत्युलोक छोड्कर देवलोग में गये,परन्तु आवागमन याने जन्मना मरना रहीत नही हुये इसप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारीको कह रहे की छुछम वेद बिन वेद,भेद,लबेदकी सभी विधीयाँ आवागमन से मुक्त होनेके लिए किसी कामकी नही हैं ।।।४१।।

नवद्या अंग नव बिध लावे ।। तो चार मुक्त लग पदवी पावे ।।
आवागवण मिटे नही कोई ।। प्रम मोख लग पोहच न होई ।।४२।।

कुछ लोग नवविद्या भक्तिके नौ तरह के जो अंग है,वे नौ के नौ प्रकारकी भक्ति साधके बैकुण्ड की चार प्रकार की सालोक्य,सामीप्य,सायुज्य,और सारुप तक की विष्णु लोग की पदवी पाते हैं । परन्तु इस नवविद्या भक्ति के आधार से आवागमन मिटता नही । कारण इस नवविद्या भक्ति की इन चार मुक्तियो के परे के परममोक्ष में पहुँचने की पहुँच नही हैं ।।।४२।।

क्हां लग बरण बताऊं भाई ।। अेक अरथ मे समजो आई ।।
बेद भेद हद बेहद तांई ।। छुछम भेद अगम कूं जाई ।।४३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे की मैं ने तुमें अनेक दृष्टांत बताए है और भी मैं अनेक दृष्टांत बता सकता हुँ । परन्तु कितने भी दृष्टांत बताएँ तो भी एक ही समझ मिलेगी की वेद,भेद,लबेद की भक्तियों की पहुँच हद बेहद तक की हैं । छुछम भेद की पहुँच हद बेहद के परे के अगम तक की हैं । इसलिए अगम देश चलना है तो वेद,भेद,लबेद के परे छुछम बेद को धारणा चाहिए यह एक अर्थ में समझ जाना चाहिए ।।।४३।।

छुछम बेद सूं सब कुछ होई ।। मुख सूं बोल कहे जुग लोई ।।
मन पवना चेतन तत्त सारा ।। सुर्त निरत सबही बिस्तारा ।।४४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे है की छुछम वेद के आधार से ही ३ लोक १४ भवन व ३ब्रम्ह के १३ लोग बने हैं । मनुष्य का देह बना हैं । मनुष्य का बोलनेवाला मुख बना हैं । मायाका वेद,भेद,लबेद बना हैं । मनका देह बना हैं । देहमें श्वास ठहरा हैं । देहमें जीव चेतन तत्त ठहरा हैं । सुरत निरतका विस्तार हुआ हैं,इसप्रकार शब्द,स्पर्श,रुप,रस ,गंध का सभी विस्तार सुक्ष्म वेद के आधार से बना हैं ।।।४४।।

बावन हरफ छुछम ने कीया ।। अनंता नांव बेदाँ ने दीया ।।

अनंत नांव बावन के माही ।। बावन हर्फ अेक मे जाही ।।४५।।

५२ शब्द छुछम वेद ने किए है । इन ५२ अक्षरों के आधार से ही वेद ने अनंत नाम दिए हैं । ये अनंत नाम ५२ अक्षरों के आधार से बने हैं । ये ५२ अक्षर एक शब्द याने श्वास के आधार से हैं । यह श्वास सुक्ष्म वेद ने किया हैं,इसप्रकार वेद,भेद,लबेद,तथा श्वास सुक्ष्म वेद के आधार से ही बने हैं ।।।४५।।

अेक नांव सुंइ छुछम न्यारा ।। वो पावे सो सत्त बिचारा ।।
ओर सकळ साधु रिष जोगी ।। तीन लोक लग माया रस भोगी ।।४६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे है की छुछम वेद यह एक नाम याने श्वास से न्यारा हैं । वह सुक्ष्म वेद जो पावेगा वही सत्त का आनंद लेनेवाला सतस्वरुप का निवासी बनेगा । बाकी सभी साधु ऋषीं,योगी मायाके रस भोगनेवाले ३लोक १४ भवनके माया रस भोगी रहेगे ।।।४६।।

छुछम बेद मूळ जिण पाया ।। बेद भेद डाळा छिटकाया ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। यूं छुछम बेद की हे बिध न्यारी ।।४७।।

सब का मुल छुछम वेद जिसने पाया हैं,उसने वेद भेद की डालियाँ छीटकाई है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे है की इसप्रकार सभी वेद भेद का मुल छुछम वेद हैं उसकी विधी व पहुँच सबसे न्यारी हैं ।।।४७।।

बेद भेद तम कहो ब्रम्हचारी ।। कोण बेद लग पोंच तुमारी ।।
बेद लभेद भेद सो होई ।। छुछम बेद न्यारा कहुं तोई ।।४८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने ब्रम्हचारी से पुछा की तुम वेद,भेद बार बार कहते हो तो तुम्हारी किस वेद तक पहुँच है यह बताओ । तुम जो वेद भेद लबेद कह रहे हो इससे,मैं जो सुक्ष्म वेद बता रहा हुँ वह न्यारा है,यह समझो ।।।४८।।

च्यार बेद पिंडत अे गावे ।। आतम ध्रम बाय सो क्रावे ।।
मंत्रा दिक तामे ऋचा होई ।। करामात वां मे कहुँ तोई ।।४९।।

चार वेद पंडीत गाते । आत्मा का धर्म वायु याने श्वास हैं,ऐसा बताते । और उसकी साधना करने लगाते व भृगुटी में श्वास चढाने का बताते । या कुछ पंडीत वेदो में की मंत्रादिक व ऋचा की साधना करने लगाते । इन साधनाओ से करामात जागृत करने लगाते ।।।४९।।

अें दोवुं लभेद उड़ाया ।। करामात इधकी कांहा भाया ।।
अेक जेन ध्रम सूं बांधो आवे ।। काचे कळसे बेद बोलावे ।।५०।।

वेद व भेद दोनो की करामत का पराक्रम लबेद ने उडा दिया तो वेद की करामात अधिक प्रतापी कहाँ रही । उसका एक दृष्टांत–आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने ब्रम्हचारी को दिया की एक बार जैन धर्मवाले का वैदिक पंडीत तथा भेद के योगी से वाद विवाद हुआ ।

तब जैन धर्मी ने एक कच्चा कलश बनाया व उस कलश से वेद उच्चारण करवाया ।।।५०।।

ने:चे कळस कहे आबाणी ।। सिव ध्रम झूट जेन सत्त प्राणी ।।
ज्हाँ संक्रा चार्ज व्हाँ चल आया ।। गधे पुंद मुख बेद बोलाया ।।५१।।

वह कलश जैन धर्म सत्य हैं और शिव धर्म झूठा है,ऐसा कहने लगा । चलते चलते जैन साधु वाद विवाद के लिये शंकराचार्य के पास चल आया । शंकराचार्यने गधे की पुंद से वेद की करामात करके उस कलश का आवाज जैन धर्म सत्य है और शिव धर्म झूठा है यह बंद करने का प्रयास किया परन्तु वेद की करामात का जोर लगा नहीं ।।।५१।।

तो भी कळस कहे आ बाणी ।। जेन ध्रम साचो सुण प्राणी ।।
तब संक्राचार्ज मंत्र संभाया ।। तो भी कळस हटे नही भाया ।।५२।।

गदे की पुंद से उच्चारण करने पर भी कलशका जैन धर्म सत्य है और शिव धर्म झूठा हैं,यह वाणी बोलना बंद हुई नही । शंकराचार्य ने भारीसे भारी वेदके मंत्रोका गदेके पुंद से उच्चारण करवाया फिर भी कलशसे जैन धर्म सत्य है और शिवधर्म झूठा हैं,यह बाणी बोलना हटा नहीं । ।।५२।।

जब लबेद संमाळ्यो आणी ।। तब चुप कळस ना बोले बाणी ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। बेद लभेद की यूं बिध न्यारी ।।५३।।

फिर बादमें शंकराचार्यने गधे के पुंद से वेदके मंत्रोकी करामात छोड्कर अपने मुखसे लबेद का उच्चारण किया तब वह कलश चुपचाप रह गया । व कलशसे जैन धर्म सत्य है,और शिव धर्म झूठा हैं,यह बाणी बोलना बंद कर दिया,इसप्रकार वेद के करामात से व भेद के योग से लबेद की करामात पराक्रमी है यह सिध्द हुआ । जिस प्रकार वेद,भेद,लबेद इनका पराक्रम न्यारा न्यारा है,उसी प्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे है की छुछम वेद का पराक्रम इन सबसे न्यारा हैं ।।।५३।।

अब छुछम बेद भेद युं होई ।। श्रुत ग्यान बिन लखे न कोई ।।
कह्या ग्रज सरे नही कोई ।। मत ग्यान अंध सुण होई ।।५४।।

छुछम वेद इसप्रकार सबसे प्रतापी हैं इसके सिवा आवागमन से निकालने की गरज पूर्ण नही होती । इस वेद,भेद,लबेद व छुछम वेद के पराक्रम को श्रृतज्ञानी होगा,याने ज्ञान के न्यायसे समझनेवाला होगा वही समझेगा । दुजा मतज्ञानी जो ज्ञान के न्याय से समझने में अंधा रहता वह नही समझेगा ।।।५४।।

छुछम बेद बसेष्ट मुनि पायो ।। बिश्वामित्र भेव संभायो ।।
ईन के अड़ी पड़ी जब भाई ।। चूको न्याव सेस पे जाई ।।५५।।

यह सुक्ष्म वेद त्रेतायुग में वशिष्ठ मुनी ने पाया था । उस वशिष्ठ से विश्वमित्र ने सुक्ष्म वेद का भेद धारण किया । इन वशिष्ठ व विश्वमित्र की जब अडी पडी तब शेष के पास

जाकर विश्वमित्र ने न्याय करवाया ।।।५५।।

हार्‍यो बेद जप तप सारो ।। जीत्यो छुछम नाव बिचारो ।।
ब्यास बेद क्रिया सब गाई ।। छुछम बेद ने:चे नही आई ।।५६।।

वहाँ शेष के न्यायगृह में विश्वमित्र के पास का ६०००० साल का वेद का जप तप इन सबका पराक्रम हार गया और वशिष्ठ मुनी का एक पल के सुक्ष्म नाम के संगत का पराक्रम जीत गया । दुजा दाखला वेद व्यास का हैं । वेद व्यास के पास भी वेदो के क्रियाओंकी करामात थी, परन्तु सुक्ष्म वेद का प्रताप नही था ।।।५६।।

आ पारख उण दिन सुण होई ।। ऊभा ब्यास वार क्हुं तोई ।।
पार गूजरी आवे जावे ।। छुछम बेद वां पारख आवे ।।५७।।

यह परीक्षा उस दिन हुई जीस दिन वेद व्यासको गुजरीके साथ यमुना पार करना था । गुजरी छुछम वेद के आधार से बिना नैय्या से यमुना पर धरती के समान आती जाती थी । गुजरीने वेद व्यास के पास भी यही कला है,यह समझकर यमुना को धरती के समान पार करने को कहाँ । वेद व्यासने वेद,भेद,लबेदके करामत से पार होना चाहा,परन्तु पार हो नही सका । जब की गुजरी सहजमें धरती पर चलने समान यमुना से चलकर पार हो गयी । तब वेद व्यास को और जगतके ज्ञानी,ध्यानी,ऋषी,मुनी,योगीयोंको छुछम वेद की पारख हुई ।।।५७।।

क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। अब कोण बेद की मत्त तुमारी ।।
बार बार तम बेद बतावो ।। यां च्यारां मे मोख न पावों ।।५८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी को कह रहे है की अरे ब्रम्हचारी बार बार तुम वेद बताते हो तो तुम्हारी कौनसे वेदकी पहुँच है । ब्रम्हाने बनाअे हुअे चारो वेदोमें परममोक्ष जाने का पराक्रम नही है फिर चारो वेदोका पराक्रम भी तुम पा गये हो तो भी तुम मोक्ष नही पाओगे । ।।५८।।

बेद गाय पूंता जन कोई ।। सो तम सोज बतावो मोई ।।
भेद साज जन मोख सिधाया ।। कोण कोण कहिये मुज भाया ।।५९।।

ब्रम्हचारी वेद की साधना करके कोई साधु परममोक्ष में पहुँचा हैं,यह मुझे खोजकर बताओ । या वेद के परे भेद हैं,ऐसे भेद की साधना करके परममोक्ष सिधारे है ऐसे कौन कौन साधु है यह खोजकर मुझे बताओ ।।।५९।।

फेर लभेद लाय घट माही ।। कोण कोण नर पूगा जाही ।।
ओ कोई आण भेद मुज देवे ।। छुछम बेद सोजी तब लेवें ।।६०।।

वेद व भेद के परे के लबेद को घट में प्रगट कराकर कौन कौन साधु परममोक्ष में सिधारे है यह मुझे खोजकर बताओ । जो साधक वेद,भेद,लबेदसे कोई पहुँचा नही यह न्यायसे खोजकर मुझे बताअेगा वही साधु वेद,भेद,लबेद के परे का परममोक्ष का छुछम वेद का

शोध मेरे अंदर से लेगा और वह धारण करेगा ।।।६०।।

मोख मिल्यां की आ सेनाणी ।। तीन लोक मे रहे न प्राणी ।।
धर पाताळ सुर्ग लग बासा ।। तहाँ लग ग्रभ सकळ की आसा ।।६१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारीको कह रहे की कालसे मोक्ष पाने की यह निशानी है की वह मोक्ष में गया हुआ हंस अमरलोकमें रहता स्वर्ग,मृत्यु,पाताल में नही रहता व गर्भ में नही आता । जब तक प्राणी मृत्युलोग,स्वर्गलोक,पाताल लोग में निवास करता तब तक वह गर्भ मे आता और काल के दु:ख भोगता यह समझो ।।।६१।।

जुग मे मिले किसी बिध आणी ।। अनंत कळा दिख लावे जाणी ।।
वे नर मोख न पूंता भाई ।। देव लोक मे बेठा जाई ।।६२।।

जीन वेद कर्मीयो को,योगीयो को मोक्ष में गये ऐसा तुम समझते हो तो वे धाम पधारे हुए योगी संसारमें आकर लोगो को यहाँ कैसे मिलते हैं ?तथा जगत मे माया के अनंत पर्चे चमत्कार की कला संसारी लोगो को कैसे दिखाते है? इसका अर्थ समझो की वे परममोक्ष में पहुँचे ही नहीं । वे देवता के लोको में ही बैठे है,यह ज्ञान से समझो ।।।६२।।

बळ ऋक्मांगद हरचंद राई ।। पांडव पांच सकळ जुग माई ।।
सुण अमरीष भक्त आ कीनी ।। च्यार मुक्त बैकुंटा लीनी ।।६३।।

बळीराजा,रुखमागंद,हरीश्चद्र,अमरीष राजा–पाँच पांड्व से सभी माया के जगत में ही है । बळीराजा पाताल में पहुँचा,तो रुखमागंद,हरीश्चन्द्र तथा पाँच पांड्व स्वर्गादिक में पहुँचे । अमरीष राजा ने नवविद्या भक्ति की और बैकुण्ठ की चारो मुक्तियाँ सालोक्य,सामीप्य, सायुज्य,तथा सारुप प्राप्त की ।।।६३।।

यूं नवद्या भक्त करे जन होई ।। प्रम मोख पहुंतो नही कोई ।।
रिष ध्रम साज कर भाई ।। देव लोक मे पहूंता जाई ।।६४।।

इसप्रकार नवविद्या भक्ति करके कोई बैकुण्ठ तक पहुँचे तो ऋषीधर्म साधकर कोई देव लोग में पहुँचे । इसप्रकार सभी माया के जगत में ही रहे,माया के जगत के परे परममोक्ष के पद में कोई नही पहुँचे ।।।६४।।

तप ही मोख न पूंचे कोई ।। इधक जोर तो इंदर होई ।।
मेरा बचन न मानो भाई ।। तो भागवत मे सुणलो जाई ।।६५।।

तपस्था करके कोई भी मोक्ष में नही पहुँचता तपस्था करनेवाला कड्क से कड्क तपस्या करेगा तो जादा से जादा इन्द्र बनेगा । तुम्हे मेरे कहनेसे विश्वास नही आता हो तो भागवत में जाकर सुण लो ।।।६५।।

नास्केत य्हाँ आण बताया ।। सब रिख धर्म पुरी मे भाया ।।
जोगी सकळ जुग के मांही ।। देव लोक मे कबु न जाई ।।६६।।

नासीकेत ने सदेह जाकर यमपुरी देखी और यहाँ आकर पिता उद्यालक को बताया की

सभी ऋषी धर्मराय के यहाँ धर्मपुरी में बैठे हूए हैं । यह नासीकेत की बात भागवत में आयी हैं । और कुछ योगी तो संसार में ही रहते है । ये योगी देवलोग में भी कभी नही पहुँचते ।।।६६।।

जिन को भेद कहुँ तुज लाई ।। दे धर मिले जक्त के माही ।।
अे प्रम मोख किम मिलिया जाई ।। सो तुम भेद कहो मुज आई ।।६७।।

ये योगी संसारमें ही रहते इसका भेद मैं तुम्हे लाकर बताता हुँ । ये सभी मच्छिंद्र,गोरखनाथ, गोपीचंद,भर्तृहरी आदि योगी देह धारण करके अभी भी संसार के लोगोको जगत में मिलते हैं । ये सभी योगी मोक्ष में गये होते तो संसार में नही रहते व संसार के लोगोको जगत में नही मिलते थे । जब यह संसार में लोगोको मिलते हैं तो वे मोक्ष में गये यह कैसे मानते हो? इसका मुझे भेद बताओ ।।।६७।।

के सुखराम सुणो ब्रम्काारी ।। मोख मिले वां भक्ति न्यारी ।।
मोख गयो नही आवे कोई ।। तीन लोक मे नकल न होई ।।६८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारी से कहते है कि,जिस भक्ति से मोक्ष मिलता वह भक्ति ही न्यारी हैं । उस भक्ति से हंस परममोक्ष जाता । वह मृत्यु,स्वर्ग,पाताल इन तीन लोगो में नकल के रुप में भी कभी नही रहता । तो असल में देह से कैसे रहेगा ।।।६८।।

कोई पार ब्रम्ह कूं देखे भाई ।। तो मोख मिल्यो आवे जुग माई ।।
मोख मिलण बोहो राहा हन होई ।। ब्होत कहे ज्हाँ गम ना कोई ।।६९।।

जैसे आकाश ,वायु ,अग्नी, जल,पृथ्वी यह तत्व मायाकी आँखसे देखते है,ऐसा सतस्वरुप पारब्रम्ह तत्वको किसीने भी माया की आँखोसे देखा है क्या?अगर सतस्वरुप पारब्रम्ह को माया के चक्षु से देखा है तो समझना की मोक्ष में याने सतस्वरुप पारब्रम्ह में पहुँचे हुअे संत जगत में लौटकर आते है ।जब की मच्छिंद्र,गोरखनाथ,गोपीचंद,भर्तृहरी आदि योगी माया के तीन लोगो में दिखते है । इसका अर्थ ये योगी मोक्षमें गये नही । सतस्वरुप पारब्रम्ह को आजतक भी मायाकी आँखो से किसीने भी देखा नही । इसका अर्थ सतस्वरुप पारब्रम्ह में पहुँचे हुअे संत तीन लोग में आते नही । मोक्ष मे जाने के बहुत से रास्ते है,ऐसा कोई कहता है तो समझो,ऐसा बहुतसे रास्ते बतानेवालेको मोक्ष पद क्या है इसका ज्ञान ही नही समझा ।६९।

गिगन चडण कूं पवन न्यारा ।। यूं मोख मिलण को अेक बिचारा ।।
चहुं दिस उड़याँ गेण नही जावे ।। यूं ब्होत पंथ मे मोख न पावे ।।७०।।

पंछीको गीगनमें चढने के लिए लगनेवाली पवन कला न्यारी रहती । वह पंछी गीगन में सिर्फ उसी एक कला से सिधा गगन में चढ सकता । इसीप्रकार मोक्ष मिलन की कला न्यारी रहती व वह सिर्फ एक प्रकार की ही कला रहती । अनेक प्रकार की कला नही

रहती । चारो दिशा में उड्नेकी पध्दत से पंछी गीगन में नही पहुँचता । इसीप्रकार माया के अनेको पंथ के आधार से हंस मोक्ष नही पाता ।।।७०।।

ब्होत पंथ अे अेकी होई ।। मोख पंथ यामे नही कोई ।।
ब्होत पंथ तज अेक संभावे ।। सोभी मोख कबू नही जावे ।।७१।।

माया के बहुत से पंथ है वे सभी पंथ एक ही है । उससे हद बेहद तक ही पहुँचते आता अगम में पहुँचनेवाला मोक्ष पंथ इन माया के बहुत से पंथ में नही है । वह पंथ इन सभी माया के पंथ से निराला है । कोई साधु माया का एक मात्र पंथ धारण करता है और शेष सभी माया के पंथ त्यागता है तो भी वह साधु मोक्ष में नही पहुँचता ।।।७१।।

यां तो बोत माया सुं स्याई ।। मोख पंथ न्यारो सुण भाई ।।
मोख पंथ थेटी सुं न्यारो ।। ज्यूं पंछी की उड़न बिचारो ।।७२।।

इन दुसरे सभी पंथोने पुरा मायाका ही आसरा लिया हैं । माया की पहुँच हद बेहद तक ही हैं । हद बेहद के परे के अगम देश की नही हैं । मोक्ष पंथ अगम देश पहूँचाता हैं । इसप्रकार मोक्ष पंथ माया के पंथ से न्यारा हैं । जैसे अनड पंछी की गीगन में उड के चढने की कला थेट से ही न्यारी हैं,उसीप्रकार मोक्ष पंथ में,मोक्ष में पहुँचाने की कला थेट से ही न्यारी हैं ।।।७२।।

तिरछी उडण सकळ अंवळाई ।। आडी उड़ण झूट सब भाई ।।
ब्होत पंथ पग का होई ।। जाँहा पपील बेद क्हे सोई ।।७३।।

जैसे पंछीको गीगन चढाना हैं । वह पंछी तिरछी उडाणके कलासे गीगन नहीं पहुँच सकता । तिरछी उडाण पंछी को गीगन पहुँचने के लिए फेरा हैं,मतलब बेकाम हैं । आडी उडाण भी गीगन पहुँचने के लिए झूठी पध्दती हैं । आडी उडाण के आधार से पंछी कभी भी गीगन नहीं पहुँच सकता । चीटीयोके समान जमीनपर बहुतसे पंथ उड्ने के भी नही रहते । सिर्फ पैरो से चलकर जमीन पर ही रहने के रहते । मतलब माया में ही रहने के रहते–गीगन में पहुँचने के नही रहते याने मोक्ष में जाने के नही रहते ।।।७३।।

ज्युं चींटी गेण कोण बिध जावे ।। मोख राहा बिन परां न पावे ।।
बेद भेद मे पाव उपाई ।। बेहद लग नीठ कर जाई ।।७४।।

जैसे चींटी जमीनपर ही चलती,उसे पर नहीं रहते,इसलिए वह गीगनमें नही पहुँच सकती । उसीप्रकार वेदकी विधीयाँ मायामें ही पहुँचने की रहती,उसमे मोक्ष जाने की नही रहती वेद व भेद के सभी उपाय चींटी के पैर से जमीन पर चलने के समान हैं । पैरो से चलनेवाले पैरो के उपाय से साधु बेहद तक मुश्किल से पहुँचते । वे अगम देश कभी नही पहुँचते ।।।७४।।

ज्युं चींटी ब्रछ नीट चड़ जावे ।। अगम गेण कूं क्हो किम पावे ।।
यूं ब्हो पंथ झूट है भाई ।। बिन पांखा कौ गेण न जाई ।।७५।।

जैसे चींटी पैरो के आधार से जमीन पर चलती अधिक से अधिक पेंड पर मुश्किल से चढ जाती पर न होने के कारण पेड छोड्कर गीगन में कभी नहीं जाती । इसीप्रकार माया के सभी पंथ हद याने ३लोक १४ भवन तक पहुँचते जादा से जादा बेहद याने होनकाल तक पहुँचते । होणकाल के परे अगम में नही पहुँचते । इसीप्रकार वेद,भेद के बहुत से पंथ है । परन्तु वे सभी पंथ अगम देश जाने के लिए झूठे आधार हैं । जैसे बिना पंखो से चीटी गीगन नही जाती उसी प्रकार हंस बिना कुद्रत कला से अगम देश नही जाता ।।।७५।।

पांख उपाय काहुं नही पावे ।। बिना लबेद पांख नही आवे ।।
सो ज्या बेद भेद कूं पाया ।। भेद मांय सूं लबेद उपाया ।।७६।।

कुछ चींटीया जमीन पर पैरो से चलती हैं । तो कुछ चींटीयो को पंख आते और वे थोडी दूर तक हवा में उड्ती है । उसके आगे नही उड पाती इसकारण वे चींटीया गीगन में नहीं पहुँच पाती । इसीप्रकार वेद के उपायोंसे वेद का साधक माया के परे अगम नही पहुँच पाता । कुछ साधु वेद में से व भेद में से लबेद खोजते । उनकी स्थिती जमीन पर पैरो से चलनेवाली चीटींयोसे न्यारी होकर पंख से उड्नेवाली चींटी के समान होती । जैसे चीटी को उड्नेवाले पंख की प्राप्ती हुई तो भी वे जमीन से कुछ दूर तक ही उड सकती गीगन नहीं पहुँचती । इसीप्रकार लबेद प्राप्त किया हुआ संत भी मोक्ष के अगम पद में नही पहुँच पाता । माया का उचा पद प्राप्त करता व माया में ही रहता ।।।७६।।

पण छुछम बेद यामे नही कोई ।। ना लबेद बेद पत होई ।।
क्हे सुखराम सुणो ब्रम्हचारी ।। कोण बेद लग मत्त तमारी ।।७७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने ब्रम्हचारी को पुछा की तुमने चार वेद,भेद,तथा लबेद इनमें से किसका पराक्रम प्राप्त किया यह बताओ । अगम देश में पहुँचानेवाली छुछम वेद की कुद्रत कला वेद,भेद,लबेद में नही हैं इसकारण वेद,भेद,लबेद में छुछम बेद का अगम देश में पहुँचाने का पराक्रम नही है ।।।७७।।

विठ्ठलराव वाक्य ।। चोपाई ।।

विठ्ठलराव अब बुज्यो आई ।। कृपा कर दो भेद बताई ।।
अे च्यारूं किण कीण ने कीया ।। पेली मान भेद किण लीया ।।१।।

परन्तु बिचमें ही विठ्ठलराव आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जी से बोला की आप जो चार वेद,भेद,लबेद व सुक्ष्म वेद बताते हो उन चारो वेद,भेद,लबेद को किसने बनाया और सर्व प्रथम किसने मान के भेद लिया इसका कृपा करके मुझे भेद बताओ ।।।१।।

सुखोवाच ।।

च्यार बेद सुण ब्रम्हा कीया ।। नारद सिष श्रवणा लीया ।।
उण उपदेश ब्यास ने गाया ।। इस बिध बेद जग मे आया ।।२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने विठ्ठलराव को कहा की ये ऋगवेद,यजुर्वेद,अथर्ववेद, सामवेद ऐसे चार वेद ब्रम्हाने बनाअे । सर्वप्रथम ब्रम्हासे नारदने सुणा व सिखा । नारदने

वेदव्यासको वेदोका उपदेश दिया । वेदव्यासने नारद से सीखकर संसारमे वेद का प्रसार किया इसप्रकार वेद संसार में आये ।।।२।।

भेद बेद ओ सुण ले भाई ।। गोरख नाथ ब्रणियो आई ।।
सिव सुं मंछ सुण प्रगट कीयो ।। सिव सूं भेद सकल ने लीयो ।।३।।

इसप्रकार भेद शंकरने बनाये । सर्वप्रथम मच्छींद्रनाथने सुना व प्रकट किया । मच्छींद्रनाथ ने गोरखनाथको उपदेश दिया । गोरखनाथने मच्छींद्रनाथसे प्रगट करके संसारमे भेद का प्रसार किया इसप्रकार शिवसे मच्छींद्रनाथ,मच्छींद्रनाथसे गोरखनाथ,गोरखनाथसे सर्व संसारके लोगो को भेद का भेद मिला ।।।३।।

म्हा सेंस लबेद बणायो ।। आद सक्त सें वां बी पायो ।।
बिसकर्मा श्री यादे भाई ।। प्रगट कियो आण जुग माई ।।४।।

जैसे वेद ब्रम्हासे बना,भेद शंकरसे बना इसीप्रकार लबेद आदि शक्तिसे बना । आदि शक्तिसे महाशेषने लबेद प्रगट किया । महाशेषसे विश्वकर्मा तथा श्रीयादे कुंभारीने प्रगट किया । विश्वकर्मा व श्रीयादेने सर्व संसारमें प्रगट किया इसप्रकार आदि शक्तिसे महाशेष,महाशेष से विश्वकर्मा व श्रीयादे,विश्वकर्मा व श्रीयादे से सब संसारके लोगोको लबेद का भेद प्रगट हुआ । ।।४।।

अब छुछम बेद की उत्पत लाऊं ।। महाबिष्ण सूं तोय बताऊं ।।
लिछमी बिस्न ब्होत सुख पाया ।। सनकादिक सुण जग मे लाया ।।५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हचारीको कह रहे की,जैसे वेदकी उत्पत्ती ब्रम्हासे हूई, भेदकी उत्पत्ती शंकरसे हुअी,लबेदकी उत्पत्ती आदिशक्तिसे हुअी इसप्रकार छुछम वेदकी उत्पत्ती महाविष्णुसे हुअी । महाविष्णुसे लक्ष्मीको छुछम वेद मिला । इस सुक्ष्मवेदके योगसे लक्ष्मी और महाविष्णुको बहुत सुख मिला । महाविष्णु लक्ष्मीसे सनक,सनन्दन, सनातन और सनतकुमार इन सनकादिकोने धारण किया । व जगतमे लाया ।।।५।।

ऋषभ देव तामे तत्त छाण्यो ।। छुछम बेद मे तत्त पिछाण्यो ।।
वां प्रगट कीयो जग मे आणी ।। बिध चोबीस तिथंकरा जाणी ।।६।।

जगतमें ऋषभदेव ने छुछमबेदका तत्त छाणा व उस तत्तको प्रगट किया । ऋषभदेवसे २३ तिर्थंकरोने तत्त धारण किया व प्रगट किया । इसप्रकार २४ तिर्थंकरोने छुछम वेदका तत्त प्रकट किया व जगत में प्रसार किया ।।।६।।

बालाजी पंडत उवाच ।।

तब बालाजी पिंडत बोल्या ।।तुम अे ग्यान सकळ गेहे तोल्या ।।
सब का मोल तोल कहो न्यारा ।। तम बोलत हो कोण आधारा ।।७।।

तब बालाजी पंडीत आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजसे बोले की आप ये सभी ज्ञान पकड्कर गिनकर तौल तौलके कहते हो और वेद,भेद,लबेद तथा सुक्ष्मवेद इन सभीका

मोल व तोल अलग अलग करके बताते हो तो तुम किसके आधार से बालते हो ।।।७।।

सुखो ऊवाच ।।

क्हे सुखराम भेद क्हुं लाई ।। बालाजी पिंडत सुण भाई ।।
में बोलुं हूं इण आधारा ।। वो छुछम बेद इण सब सूं न्यारा ।।८।।

तब आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की,हे भाई बालाजी पंडीत,मै जो गीनकर तोल मोलसे बोल रहा हुँ इसका भेद मैं तुम्हें बताता हुँ वह तुम सुणो । मै सुक्ष्मवेदके आधारसे बोल रहा हुँ । मैं जिस सुक्ष्मवेदके आधारसे बोल रहा हुँ वह सुक्ष्मवेद ब्रम्हाका वेद, शंकरका भेद, आदि शक्तीका लबेद,विष्णुका सुक्ष्मवेद इन सभीसे न्यारा है । वह सुक्ष्मवेद परात्परी परमात्मा देव अमर पुरुष अविनाशीसे मुझमें प्रगट हुआ है । मुझमे प्रगट हुआ सुक्ष्म वेद ब्रम्हा,शंकर आदिशक्ती,तथा विष्णु इन त्रिगुणी मायासे प्रगट नही हुआ । वह मायाके परे जो सभीका उत्पत्तीकर्ता परमात्मा है ऐसे सतस्वरुप परमात्मासे प्रगट हुआ ।।।८।।

इण आधारा बेद सब कीया ।। ब्रम्हा भेव जक्त कूं दीया ।।
बोल्या संत छुछम आधारा ।। पिण काम काम मे फरक बिचारा ।।९।।

जिस सुक्ष्मवेद याने सिरजनहार परमात्माके आधारसे ही ब्रम्हा ने चार वेद बनाओ । व वेद के द्वारा मायाके क्रिया करणी तथा योगका भेद जगतके लोगोको दिया । ब्रम्हाने जिस सुक्ष्मवेद याने सिरजनहार परमात्माका आधार लिया ऐसा सुक्ष्मवेद याने सिरजनहार परमात्माका आधार संतोने लिया व जगत में परममोक्ष का भेद याने राजयोग प्रगट किया । इस प्रकार ब्रम्हा जो वेद बोला वह वेद भी सुक्ष्मवेद के आधारसे बोला और संत जो बोले वे भी सुक्ष्मवेद के आधारसे ही बोले,परंन्तु काम काम में दोनो का फरक हैं । ब्रम्हा का काम मायाकी सृष्टी बनाके हंसो को मायाके सृष्टीमे बसानेका है । तो संतो का काम हंसो को माया के सृष्टीसे निकालने का है मतलब काल से मुक्त कर अमर सृष्टीमें ले जानेका है ।।।९।।

अेक हाकम मुलक बसायो जाई ।। वांही अधार भूपको भाई ।।
अेक ब्याव कर राजा के लावे ।। वे ही अधार भूप को गावे ।।१०।।

जैसे राजाने मुलुक बसानेके लिए हाकमको भेजा,उस हकीमने जाकर मुलुमके लोगोकी बस्ती बसाई उस हाकमको भी आधार तो राजा का ही है । उसीप्रकार,एक राजा की तलवार ले जाकर राजाके लिए शादी करके राणी लाता उसको भी आधार राजा का ही है । दोनोके काम काममें फरक हैं परंन्तु दोनोको राजा का ही आधार है इसीप्रकार ब्रम्हा व केवली संतोके काम काम मे फरक है परंतु आधार सत परमात्मा का ही हैं ।।।१०।।

मे आयो इण कारज भाई ।। सो प्रगट सुणले जुग माही ।।
नेःअंछर खांड़ो सुण होई ।। वो नांव ब्रम्ह को कहे न कोई ।।११।।

इस तरह मैं किस काम के लिए संसार मे आया हुँ यह स्पष्ट सुण लो । जैसे राजा किसीको अपनी तलवार देकर होनेवाले राणीसे विवाह करनेके लिए किसीको भेजता है । ठिक उसीप्रकार सतगुरु परमात्माने ने अछंर का नाम देकर मुझे संसार में भेजा है । यह ने अंछर का नाम याने ब्रम्हका नाम,याने सतस्वरुप पारब्रम्ह का नाम,ब्रम्हा,विष्णु, महादेव,शक्ति अिन किसीने भी जगत में प्रगट नहीं बताया हैं ।।।११।।

सो ने:अंछर दे मुज तांई ।। सत्तगुरु भेजो या जुग मांई ।।
आतम हंस जाय के लावो ।। पार ब्रम्ह के लोक पठावो ।।१२।।

जैसे राजा तलवार देकर किसीको राजघरमें राणी लानेको भेजता हैं । उसीप्रकार सतगुरु परमात्माने मुझे ने:अंछर देकर आत्म हंसोको अपने पारब्रम्हके लोक पठानेके लिए भेजा हैं । ।।१२।।

अनंत क्रोड आगे जन आया ।। आतम हंस ब्यावणे भाया ।।
सोही रीत हमारी होई ।। ब्रम्हा रीत ओर क्हुं तोई ।।१३।।

जैसे राजा राणीयोको विवाह करके लानेके लिये अलग अलग समय अलग अलग पुरुषोको भेजता हैं । उसीप्रकार पारब्रम्ह परमात्मा ने हंसो को पारब्रम्ह के लोग मे पठानेके लिये अलग अलग ऐसे अनंत करोड संतोको आज दिन तक भेजा है । पहले भी अनंत कोटी संत आत्म हंसमें ने:अंछर प्रगट कराके पारब्रम्ह के लोग पठाने के लिये आये थे । उसी रित अनुसार मैं भी आज आत्म हंसोको पारब्रम्हके लोक मे पठाने के लिये आया हुँ । मेरी रित आत्म हंस को पारब्रम्ह के अमरलोक मे बसानेकी है तो ब्रम्हा की रित मायाके लोगोमें हंसो को बसानेवाली हैं इस माया के लोगोमें जुलमी काल है । इसप्रकार मेरे रितमें व ब्रम्हाके रित में फरक हैं । ।१३।

अब सुण बालाजी पिंडत आणी ।। बेद भेद अब कहुँ बखाणी ।।
बात सकळ चेतन आधारा ।। पर काम काम पर बचन नियारा ।।१४।।

अब बालाजी पंडीत तुम भी सुनो । वेद,भेद,छुछम वेदका वर्णन करके मै तुम्हें बताता हुँ । ऐ सभी बाते करते है वे सभी बाते हंस चैतन्य के आधारसे ही करते हैं । वेद,भेद,सुक्ष्मवेद की बाते करनेवाले सभी के हंस–चेतन सरीखे हैं । ब्रम्हा का हंस चेतन व मेरा हंस चेतन एक सरीखा हैं । परंन्तु मेरे और ब्रम्हा के काम काम का ज्ञान न्यारा न्यारा हैं ।।।१४।।

यूं ब्रम्हा बेद किया हद तांई ।। बेहद लग बात कही मांई ।।
इण कू हुकम यांहाँ लग हूवा ।। तीनु लोक बसावो जूवा ।।१५।।

ब्रम्हाका चेतन व मेरा चेतन एक सरीखा हैं । फिर भी मैं छुछम वेद का ज्ञान जो अगम देशमें जाता है वह देता हुँ । तो ब्रम्हा वेद का ज्ञान जो हद बेहद तक ही पहुँचता वह देता है । ब्रम्हा को तीन लोक बसावो यहाँ तक का ही हुकुम परात्परी परमात्मासे हुआ हैं

।।।१५।।

तीन लोक मे आवे जावे ।। छोटी बड़ी पदवी सो पावे ।।
ज्हाँ लग ब्रम्हा ताण बताई ।। अगम बात सुगम कर गाई ।।१६।।

ब्रम्हाने बनाअे हुअे वेदकी करणीयोंसे हंस मृत्युलोक,पाताललोक,स्वर्गलोकमें बसते रहते । छोटी बडी माया की पदवी पाकर कभी स्वर्गलोक मे आते जाते रहते । ब्रम्हाने वेद में तीन लोक में पदवी पाने की विधी ताण ताणकर खोल खोलके बताई हैं । साथमें अगम की बात सुगम है याने उंची है ऐसा बताया हैं ।।।१६।।

सोभा करी इसो पद होई ।। पण मिलणे की बिध कही न कोई ।।
तिणको अर्थ सुणियो भाई ।। वा बिध कहयां रद अे जाई ।।१७।।

अगम की बात सुगम है याने उंचे पद की है ऐसी शोभा भी की परंन्तु अगम पदमें मिलने की विधी कही पे भी नही बताई । इसका कारण यह हैं की अगर अगम पदमें मिलने की विधी ब्रम्हाने बतायी होती तो ब्रम्हा का माया में तीन लोक बसानेका काम रद्द हो जाता। सभी जगत के लोगोने अगम की बात धारण की होती व माया में कोई रहता नही था ।।।१७।।

ब्रम्हा को कारज ओ होई ।। तीन लोक मर्जादा सोई ।।
तिण कारण अे ताण बताई ।। भिन भिन्न रीत सकळ जग माई ।।१८।।

परात्परी परमात्माने ब्रम्हा को तीन लोक स्वर्ग,मृत्यु,पाताल तक ही बसानेकी मर्यादा दी हैं। अगम देश में जीव बसाने का ओहदा नही दिया है । इसकारण ब्रम्हा ने जीव तीन लोग मे ही रहे ऐसी बातो को ताण ताणकर कहाँ हैं । इस कारण ब्रम्हा ने तीन लोक में रहनेका ही भिन्न भिन्न तरह का सब भेद सारे संसार में बताया है ।।।१८।।

ओर कछु तम भेद बतावो ।। तो सुण आ बुध हिर्दा मे लावो ।।
ओर बिध्ध सब भिन्न भिन भाकी ।। प्रम मोख की छुछम दाखी ।।१९।।

माया के तीन लोगोमे रहने का भेद ताण ताणकर बताने के अलावा अगम देश में जाने का भेद ब्रम्हाने वेद में बताया हैं क्या?यह बुध्दी तुम हृदयमे लाकर विचार करो । ब्रम्हाने दुसरी सभी विधी भिन्न भिन्न करके बताई और परममोक्ष का पद बडा है यह गाया परंन्तु पाने की विधी हंसो को समजेगी नही ऐसे एकदम सुक्ष्म में बतायी ।।।१९।।

ओ तम भेद हिर्दा मे आणो ।। छुछम बेद तम भेद पिछाणो ।।
सब सांबळ किवो सोभा गाई ।। जामण मरण दोय बिध भाई ।।२०।।

ब्रम्हाने वेद में सुक्ष्म वेद की विधी सुक्ष्ममें दी हैं यह बात जो तुम्हे बता रहा हुँ । यह बात हृदयमे लाओ तथा ब्रम्हा ने बताअें अनुसार सुक्ष्मवेद ये वेद,भेद,लबेद इस सबसे बडा है यह भेद तुम पहचाणो । ब्रम्हाने वेद में सतस्वरुप के ज्ञान की माया के करणीयोके मिलावट के साथ शोभा की हैं । जैसे जगत में जन्मना व मरणा यह दो विधीयाँ अलग

अलग है । वैसेही माया मे बसना व मायासे मुक्त होना यह दो विधीयाँ अलग अलग हैं ।।।२०।।

जनमे ज्हां मरण बिध नांही ।। मोत ज्हां वो ग्यान न कांही ।।
यूं मोख मुक्त का पंथ न्यारा ।। ब्रम्हा संग कहे क्युं प्यारा ।।२१।।

जहाँ जनम होता है वहाँ मरने की विधी नही करते तथा जहाँ मरण होता है वहाँ जन्मने का ज्ञान नही देते । इसप्रकार मायामें जखड्के रखना व माया से मोक्ष करके मुक्त करवाना यह दो रास्ते अलग अलग है । ब्रम्हाको जगत के लोगो को तीन लोक में बांध के रखना हैं । वह मोक्ष में जानेका जो प्यारा रास्ता है वह तीन लोकोमें हंसो को रखनेके साथ कैसे बताअेगा ।।।२१।।

बेद नाव की सोभा गाई ।। प्रम मोख की अेहे उपाई ।।
पिण भेद नाव को न्यारो होई ।। सो बेदां मे कहयो न कोई ।।२२।।

ब्रम्हाने वेदो मे निजनाम की शोभा गाई व परममोक्ष जानेके लिये निजनाम याने सतशब्द याने ने:अंछर यही उपाय है ऐसा भी बताया है परंन्तु निजनाव का भेद जो मायाके नामो के भेद से न्यारा है । वह ब्रम्हा ने वेद में कही पर भी कहाँ नहीं है ।।।२२।।

सुण बालाजी पिंडत कहुं तोई ।। अजू हुं तम नही चीन्हो मोई ।।
सोभा बस्त भेद नही पायो ।। तब लग ग्यान हिर्दे नही आयो ।।२३।।

बालाजी पंडीत मैं तुमे ब्रम्हाने वेदोमे भाती भातीसे माया की करणीयाँ ताण ताणकर बतायी व सुक्ष्म वेदका भेद कही नही वर्णन किया यह भांती भांती से समजाया हुँ,परंन्तु मैं क्या समजा रहा हुँ यह तुम पकड नहीं रहे । वस्तु की शोभा करनेसे वस्तु को पाने का भेद नही आता इसीप्रकार अगम के देश की शोभा सुननेसे अगम के देश पहुँचने की विधी हंस के हृदय में नही प्रगट होती ।।।२३।।

नाव भेद बेद मे नाही ।। ओर बिध सब साझन माही ।।
अेक कुद्रत कळा नाव की न्यारी ।। बेद कही तो कहो उचारी ।।२४।।

बालाजी पंडीत निजनाम का भेद वेद मे क हीपे भी बताया नही हैं । परन्तु मायाके सभी धर्मोकी साधनाअे वेद में ताण ताणकर बताई है यह समझो । इन माया के सभी धर्मो के विधीयोसे कुद्रतकला प्रगट करानेवाले निजनाम की विधि न्यारी है । यह न्यारी विधि वेदने कही उच्चारण की है तो मुझे बताओ ।।।२४।।

पूरब ध्यान बेद मे गायो ।। ओंऊँ सोहं सब्द बतायो ।।
पवन संग गिगन मे जावे ।। नाव चड़े सो भेद न पावे ।।२५।।

वेदमे पुर्वका ध्यान याने मुलद्वारसे भृगुटीमें श्वास चढानेके ध्यानका वर्णन किया है । ओअम व सोहम शब्दसे बने हुअे श्वासके आधारसे गिगनमें चढनेकी विधी खोल खोलकर बताई हैं । परंन्तु जिस विधीसे सतशब्द बंकनालके रास्तेसे(कैसे)चढता वह भेद नही

प्रगट होता ।।।२५।।

नाव चड़े पिछम दिस होई ।। आ कुद्रत कळा तके हे कोई ।।
सब ही साधना जाणे भाई ।। नही नही दोस तुमारे माई ।।२६।।

सतनामसे पश्चिम दिशासे गिगनमें चढनेसे जो कला प्रगट होती है उस प्रगटे कलाको कुद्रतकला कहते है । यह कुद्रतकला सृष्टीके सभी साधू नही जाणते । इस कुद्रतकलाको बिरलेही संत जाणते इसकारण कुद्रतकला को न जानने का दोष तुम्हारे में नहीं है ।।।२६।।

विठलराव अब बोल्या आणी ।। यां बड़ा बड़ा पुरसां नही जाणी ।।
सो कारण किण कहिये मोही ।। आ कुद्रत कळा क्हेत हे सोई ।।२७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजसे विठ्ठलरावने पुछा की महाराज आप जो कुद्रतकला बता रहे हो वह वह कुद्रतकला बडे बडे पुरुषोने नही जाणी जिसका क्या कारण है यह मुझे समझाओ ।।।२७।।

सुखो उवाच ।।

इण को अर्थ ये हे सुण भाई ।। राज बेद कीया जग माई ।।
जहां तहां यांरी बिध गावे ।। जीव सुणे सोई भेव संभावे ।।२८।।

इसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने विठ्ठलरावसे कहाँ की यह बडे बडे पुरुषोने कुद्रत कला की विधि नही पाई कारण जगह जगह कुद्रतकला की विधि नही थी । वेद की विधियाँ जगह जगह घर,घर घट,घटमें राज कर रही थी । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे की,आदि मे छोटे से बडे सभी स्त्रि–पुरुष होणकाल पारब्रम्ह में थे । उन्हे वहॉ सुख नही था उन्हे सुख चाहिये थे । इन सुखोके लिये होणकाल पारब्रम्ह छोड्कर हंस त्रिगुणी माया में निचे आये । जिव को त्रिगुणी माया मे जो जो सुख चाहिये थे वे सभी सुख ब्रम्हाने वेदोमे भांती भांती से गाअे । उन सुखोकी विधीयाँ जीव ने धारण करना चाहिये इसलिए ब्रम्हाने ८८००० ऋषी सृष्टी मे भेजे । ये ऋषी मुनी जहाँ वहाँ त्रिगुणी माया की सुख पाने की विधीयाँ ताण ताणकर जिवोको सुणाणे लगे । जीव यह विधीयाँ बार बार सुनते रहे । जीव जो विधीयाँ सुनते रहे वे ही विधीयाँ धारण करते रहे व उन विधीयोमे रंगते रहे । जीवो को कुद्रतकलामे रंगनेको इसप्रकार जगह जगह विधी मिली नही इसकारण छोटे से बडे पुरुषोने कुद्रतकला की विधी जाणी नही ।।।२८।।

जगा जगा चर्चा आ होई ।। बेद रीत घर घर कहुं तोई ।।
लागे रंग संग सुं भाई ।। यूं कुद्रत कळा की संगत नही कोई ।।२९।।

जगह जगह पर इस वेदकी चर्चा चलते रहती है । इसकारण घर घरमे वेदकी रित होती है । जैसा संग रहता वैसा रंग लगता है । इसप्रकार जीवो को वेदका रंग लग गया । और मैं जीस कुद्रतकला की बात कहता हुँ वह कुद्रतकला की संगत घर घर जगह जगह पे नही

होती । कोई बिरले जगह होती इसकारण इस कुद्रतकलाकी समज जगतके लोगोको नही हुअी । इस कारण बडे बडे पुरुषो को भी कुद्रतकला मिली नही ।।।२९।।

अे बड़ा पुरस पीछे सुण होई ।। पेली सकळ नार नर लोई ।।
युं बेदी सुणो बेद बिध साई ।। युं कुद्रत कळा संगत नही पाई ।।३०।।

जगतमे बडे स्त्रि–पुरुष बादमे बनते पहले ये बडे स्त्रि–पुरुष साधारण मनुष्योके सरीखे स्त्रि–पुरुषही रहते । अे साधारण स्त्रि–पुरुष वेदोकी विधीयाँ सुण सुणकर व उसमे प्रविण हो हो कर वेदके जाणकार ऐसे बडे पुरुष आगे बनते । इन साधारण मनुष्योके सरीखे जो स्त्रि–पुरुष ये उनको कुद्रतकलाकी संगत जगह जगह घर घर मिली नही इसकारण इन स्त्रि–पुरुषोमेंसे कुद्रत कला जाणणेवाले जगह जगह बडे पुरुष बने नही । कोई बिरला जगह पर ही कुद्रतकलाके बडे पुरुष बने । और ऐसे बिरला जगह तक सर्व साधारण स्त्रि–पुरुष पहुँचे नही ।३०।।

करणी कर कर बळवंत होई ।। जां कुद्रत कळा न जागे कोई ।।
इनको अर्थ ये हे सुण भाई ।। बिना प्रेम नही जागे काही ।।३१।।

अे बडे पुरुष वेद की करणीयाँ करके बलवंत हुअे । परंन्तु इन बडे पुरुषोमे कुद्रतकला जागृत हुअी नही । इसका कारण यह है इन बडे पुरुषोने मन का हट व तन का हट करके वेद की पर्चे चमत्कारो की करामत प्रगट कर ली परंन्तु उनको सत परमात्मासे प्रेम नही हुआ । जिस कारण इन बडे पुरुषोमें कुद्रत कला जागृत नहीं हुअी ।।।३१।।

जाग्यां बिना रीत नही पावे ।। नाव नाव कर सोभा गावे ।।
युं अे मोख इसी मे जाणे ।। नाव कळा कूं नाय पिछाणे ।।३२।।

इन बडे पुरुषोमे कुद्रतकला जागृत नही हुई इसलिये कुद्रतकला क्या चीज है यह अनुभव से इन्हे हकीकत में नही समझा । इसलिऐ इन बडे पुरुषोको निजनाम व नाम का फरक ही नही समझा । इसकारण जो भी नाम जपा वह निजनाम ही हैं ऐसा समजकर इस नाम में ही मोक्ष है ऐसा मनसे ही मानकर बैठ गये । इसकारण निजनाम से प्रगट होनेवाली कुद्रतकला का गुण क्या हैं यह इन बडे पुरुषोको अनुभव से नही समझा ।।।३२।।

बड़ा पुरस दोय बिध होई ।। जांरो भेद कहुं मे तोई ।।
अेक ग्यान भेद समझ मे भारी ।। अेक काया अपर बळ इधकी धारी ।।३३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने विठ्ठलराव से कहाँ की जगत में बडे पुरुष कैसे दो तरह के होते है यह समझो । एक सर्व सामान्य लोगोसे काया से अपर बलवाला होता है तो दुजा संसारके ग्यान के समजसे बलवान होता हैं । ऐसे ही एक तीन लोक के माया के ज्ञान मे बलवान होता है तो दुजा अगम के देश के ज्ञान में अपर बलवाला होता है ।।।३३।।

ठोड़ ठोड़ संगत आ नांही ।। जां कुद्रत कळा उदे हुवे मांही ।।

इण कारण कोई भेद न पावे ।। सुणियां बिना कोण बिध आवे ।।३४।।

जगतमें कुद्रतकला प्रगट किये हुये अगम देश के बलवान ऐसे बडे बडे संत होते है परंन्तु ऐ बिरले होते है । उनकी संगत जगह जगह,घर घर में नही होती । उनकी संगत बिरले जगह होती इसकारण जगत के लोगोको कुद्रतकला का भेद सुनने भी नही मिलता जो वस्तु सुनने भी नही मिलती तो वह वस्तु लोगोमें प्रगट कैसे होगी ? ।।३४।।

बेद भेद जग मे ब्हो होई ।। इण कारण जाणे सब कोई ।।
आ कुद्रत कळा नाव की भाई ।। ठोड़ ठोड़ नही जग के माही ।।३५।।

बेद और भेद जाननेवाले जगतमें बहोत है । इसकारण वेद भेदको छोटे पुरुषोसे लेकर बडे पुरुषो तक सब कोई जानते है । परंन्तु यह निजनावकी कुद्रतकला जाननेवाले जगह–जगह जगतमें नही रहते । इसलिये ऐसे जगतके छोटे पुरुषोसे बडे पुरुषो तक कोई जानता नही । ।।३५।।

विठ्ठलराव वाच ।।

विठलराव अब कहे पुकारी ।। तुम तत्त ग्यान सब सूं क्हो भारी ।।
तो जग मांय क्यूं फेल्यो नाही ।। जो कुछ बड़ो प्राक्रम माही ।।३६।।

।। विठ्ठलराव उवाच ।।

विठ्ठलराव आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजसे बोले की आप तत्त ग्यान वेद,भेद,लबेद इन्हे सबसे भारी कहते हो तो वह तत्त ग्यान अपनेही बलसे जगतमें फैला क्यों नही । अगर इस तत्तज्ञानमें वेद,भेद,लबेद इन सबसे बडा पराक्रम है तो वह खुदके बलपर फैलना चाहिये था । ।।३६।।

बेद भेद तुम ऊला कीया ।। तो सबही जक्त धार किऊं लीया ।।
जाग जाग सब के मन भावे ।। खट द्रसण बेराग संबावे ।।३७।।

विठ्ठलरावने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजसे कहॉ की आप तत्तज्ञानसे वेद,भेद,निचे है, हलके है ऐसा बता रहे हो तो वेद,भेद यह जगतके लोगोने धार क्यो लिया जगतके लोगोने वेद भेद न धारण करते हुए तत्त ज्ञान ही धारन करना था । यह वेद भेदका ज्ञान जगह जगह पे सभीके मनमे क्यो भांता?इस वेद भेदके ग्यानको जोगी,जंगम,सेवडा, सन्यासी,फकीर,ब्राम्हण ये छ :दर्शन व बैरागी ये सभी धारण क्यों करते ? ।।३७।।

सुखो उवाच ।।

क्हे सुखराम सुणो बिध आणी ।। बेद भेद फेल्या इम जाणी ।।
जिण कारण अे जगमे आया ।। से सब भोग बेद मे गाया ।।३८।।

।। सतगुरु सुखरामजी उवाच ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने विठ्ठलराव को कहॉ की,वेद भेद जगतमें क्यो फैला उसका कारण सुणो । ये हंस शब्द,स्पर्श,रुप,रस गंध इन इंद्रियो के विषयोके सुखोके लिये पारब्रम्ह से माया के जगत में आये । वेद,भेद ने हंस जिस कारण पारब्रम्ह से माया मे आया वे सभी भोग मिलानेकी विधीयाँ भांती भांती से गाई हैं ।।।३८।।

भोग मिले नाना बिध सारा ।। सो बेदाँ मे कहया बिचारा ।।
इण कारण धारे सब आई ।। मोख सुख नही सुझे भाई ।।३९।।

हंस को नाना प्रकारके पाँच इंद्रियोके भोग मिलेंगे ऐसी नाना प्रकारकी विधीयाँ वेद में बताई है इस कारण जगत के सभी लोग इसे धारण करते हैं । जगत के लोगो को मोक्ष का सुख शब्द, स्पर्श,रुप,रस,गंध इन सुखोसे अनोखा है भारी है यह समजानेवाला मिलता नही । इसलिये मोक्ष का सुख समजता नही इसकारण कुद्रतकला धारण करते नही ।।।३९।।

बेद जक्त स्वारथ ले गाया ।। तीन लोक का सुख बताया ।।
जो आतम कूं भावे भाई ।। सो बेदां मे स्मझ बताई ।।४०।।

ब्रम्हाने जीव मोक्ष में जावे व जीव का काल छुटे इस चाहणासे वेद नही गाये । बनाई हुई तीन लोगोकी सृष्टी टिकनी चाहिये इस स्वार्थ से वेद गाये । जीव यह अमर तत्व है व जीवके साथवाले मन व पाँच आत्मा ये माया तत्व है । मन व पाँच आत्मा अमरलोक में कभी नही जा सकती व ब्रम्हतत्व जीव अमर लोक कभी भी जा सकता यह ब्रम्हा को मालुम हैं । यह मन व पाँच आत्माको भाये ऐसे सुखोकी विधीयाँ बनाई तो मन और पाँच आत्मा उन विधीयोंमे गुते रहेगी । जीव मन और पाँच आत्माके वश है । इसकारण जीव भी इसके साथ तीन लोगो के सुखोमे बराबर अटका रहेगा । जिस कारण सृष्टी उजाड नही होगी । ऐसा स्वार्थ रखके ब्रम्हाने वेदोमें समज बताई है ।।।४०।।

विठलराव तत्त ग्यान न फेल्यो ।। सो कारण इण जक्त न झेलयो ।।
ओ आतम का सुख अेक न गावे ।। उलटा नाव मरण बिध लावे ।।४१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को बोले की,हे विठ्ठलराव ये तत्तग्यान जगत ने इसकारण झेला नही इसलिये जगतमें फैला नही । यह तत्तग्यान मन व पाँच आत्मा का सुख एक भी नही गाता उलटा पाँच आत्मा व मन को मारने की विधी बनाता ।।।४१।।

आत्म राज जक्त मे होई ।। प्रमात्म को राज न कोई ।।
यांरी संगत जीव बुध धारी ।। आनंद लोक कूं दियो बिसारी ।।४२।।

जगतमें मन व पाँच आत्मा का राज है । यहाँ परमात्मा याने वैराग्य विज्ञानका राज नही है । इसकारण हंसोने वेदो मे दिये हुये पाँच विकारोके सुखोकी जिवबुध्दी धारण कर ली । जीस कारण आनंन्द लोक में पहुँचानेवाले हंस बुध्दी में भुल पड गई ।।।४२।।

यारी संगत जीव होय बेठा ।। इण कारण तत्त गहे न सेंठा ।।
क्हे सुखराम राव सुण आई ।। यूं वो ग्यान न फेले भाई ।।४३।।

वेदो के पाँच विकारो के सुखोके संगतसे हंस,हंससे जीव हो बैठा । इस कारण हंसोने तत्त श्रेष्ठ होते हुये भी धारण नही किया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को

बोले की,इसकारण कुद्रतकला का ग्यान जगत में फैला नही ।।।४३।।

सोभा देख सकळ जग गावे ।। कुद्रत कळा सकळ मन भावे ।।
इण की रीत कठण सो होई ।। तिण कारण धर सके न कोई ।।४४।।

अगम के सुखोके जाने की कुद्रतकला सुनकर,कुद्रतकला की सभी लोग शोभा करते है व उनके मन को भी कुद्रतकला खुप भांती है । परंन्तु कुद्रतकलाकी रिती बहुत कठीण होने के कारण कोई धारण नही कर सकता ।।।४४।।

कठण चाल यांकी नही आवे ।। ब्रम्ह तेज सहयो नही जावे ।।
जाणे सही इधक आ होई ।। तो पण धार सके नही कोई ।।४५।।

कुद्रतकला की चाल बहुत कठीण हैं । वह चाल हंसोसे चले नही जाती । इस चाल में हंस को ब्रम्ह तेज सहना पडता जिस ब्रम्ह तेजसे हंससे मन व पाँच आत्मा बिछडते । हंस कुद्रतकला वेदोके कलासे भारी है,कालसे मुक्त करानेवाली हैं,अच्छी है,यह समजता है,फिर भी हंस मन व पाँच आत्माके मोह माया के वश में होने के कारण कुद्रतकला धारन नही कर सकता । ।।४५।।

विठ्ठलराव इण कारण सोई ।। तत ग्यान नही फेल्यो कोई ।।
तीन लोक का सुख उड्रावे ।। अणंद लोक तां को जस गावे ।।४६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने विठ्ठलरावको कहॉ की,इन कारणोसे जगतमें तत्तग्यान फैला नही । तत्तग्यान तीन लोगोमें के पाँच आत्मा के सुख उडाता है (याने विकारोके सुख उडाता है)व आनंद लोग के वैराग्य विज्ञान के सुखोकी महिमा करता है ।।।४३।।

अे करण में वां कुछ नाही ।। किस बिध जीव मिलावे माही ।।
कूंची क्रम ध्रम नही सेवा ।। मंत्र इष्ट नही कोई देवा ।।४७।।

वेदो की विधीयाँ साधने मे कुद्रतकला प्रगट होने की रीत नही है । तो अब किस विधीसे हंसोको आनंन्द लोकमे पहुँचाये जायेगा यह बतावो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने विठ्ठलरावसे पुछा । आनंन्द लोक मे पहुँचाने के लिये योगाभ्यासकी कुंची याने चाबी,वेद के कर्म,धर्म माया के देवताओकी सेवा,मंत्र,इष्ट तथा देवताओकी भक्ती इनका किसका भी उपयोग नही लेते आता ।।।४७।।

आतम रीत सेजे यों होई ।। बो बिद बिना थंबे नही कोई ।।
तत्त ग्यान मे कछु न मावे ।। इण कारण जग नांय संभावे ।।४८।।

वेदकी आत्मा व मनसे होनेवाली विधीयाँ जीवसे सहजमे हो जाती । परंन्तु मोक्षमें पहुँचानेवाली कुद्रतकला,वैराग्य विज्ञान के सिवा घट में प्रगट नही होती । इसकारण तत्तग्यान मे वेद की पाँच आत्माओकी व मन की एक भी बिधी उपयोग में नही आती । व तत्तग्यान मे मन व पाँच आत्मा हंस से बिछड जाती । इसलिये मन व पाँच आत्मा हंस को

तत्त विज्ञान धारण भी नही करने देते ।।।४८।।

विठ्ठलराव वाच ।।

तत्त के मांय कछु नही मावे ।। तो किण रीत कर हंसा पावे ।।
विठलराव अब बोल्या छाणी ।। काय रखे कोण बिध प्राणी ।।४९।।

।। विठ्ठलराव उवाच ।।

तत्तका पद कुंची,कर्म,धर्म,सेवा,मंत्र,इष्ट देवताकी भक्ती इनमेंसे एक भी विधीका उपयोग करके तत्त प्राप्त नही कर सकता तो हंस यह तत्त कौनसे रीतसे प्राप्त कर सकेगा । विठ्ठलरावने विचार करके आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजको पुछा की हर प्राणी तत्तमे मिलना चाहता । मिलनेके लिये कुंची,कर्म,धर्म सेवा,मंत्र आदि एक भी उपाय काम नही आते । तो प्राणी तत्त मे मिलनेके लिये कौनसे उपायोको देहको लगाके रखेगा ।।।४९।।

सुखो वाच ।।

क्हे सुखराम देहे के तांई ।। करो सकळ बिध कारण नाही ।।
मोख काज बिध अेक न चहिये ।। सत्तगुरु सर्णे प्रीत कर रहिये ।।५०।।

।। सतगुरु सुखरामजी उवाच ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने विठ्ठलराव से कहा की,ये सभी विधीयाँ देहके सुखोके लिये मतलब आत्माके सुखोके लिये है । यह विधीयाँ करने से हंस को मोक्ष नही मिलता हंस कालसे नही छुटता । हंस को मोक्ष मे जानेके लिये वेदो मे की माया की एक भी विधी नही करनी पडती । हंसको जीस सतगुरु के देह मे कुद्रतकला प्रगट हुअी है ऐसे सतगुरु के शरण मे जाना पडता व उस सतगुरुसे प्रित करनी पडती । मतलब जैसे मायाके देवताओके देह के शरण जाना पडता व प्रित करनी पडती ऐसे सतगुरु के देह के शरण में नही जाना पडता व सतगुरु के देह से प्रित नही करनी पडती । सतगुरु के देहमें प्रगट हुये वे कुद्रतकला के शरण मे जाना पडता व इस कुद्रतकला से प्रेम करना पडता ।।।५०।।

प्रेम उपावे तत के तांई ।। कुद्रत कळा प्रगटे माई ।।
सत्तगुरु दया राम रटे कोई ।। ने: अंछर प्रगट तब होई ।।५१।।

सतगुरुमे जो तत्त है उससे प्रेम उत्पन्न करनेसे हंसके घटमे कुद्रतकला प्रगट हो जाती । ऐसे कुद्रत कलारुपी सतगुरुकी दया पाकर याने मेहेर पाकर रामका याने परात्परी परमात्माका रटन करेगा याने स्मरण करेगा तो हंसके घटमे ने:अंछर याने तत्त याने कुद्रतकला प्रगट होगी ।।५१।।

प्रेम प्रीत सूं जागे भाई ।। प्रेम प्रेम सुंइ उलटे माई ।।
प्रेम प्रेम सूं पिछम आवे ।। प्रेम प्रेम सब किल्ला ढावे ।।५२।।

यह कुद्रतकला हंसके घटमे सतगुरु के देह में जो तत्त है । उससे प्रेम प्रित करने पे जागृत होती व कुद्रतकलासे प्रेम प्रित करनेसे वह कुद्रतकला हंस के घटमे पश्चिम के रास्ते से उलटती । और उस कुद्रतकलासे प्रेम प्रित करनेसे ही रास्तेमे आनेवाले सभी छोटे बडे किल्ले याने अडंगे कुद्रतकला नष्ट करती व हंस को गिगन में चढा देती ।।।५२।।

नाव प्रेम के सुण बस भाई ।। प्रेम बिना नही और उपाई ।।
प्रेम माय बिध ओर बिचारे ।। तो ज्यूं निमक दूध मे डारे ।।५३।।

यह तत्त याने कुद्रतकला याने ने:अंछर याने निजनाव यह हंस के प्रेम प्रित के बस में है । प्रेम–प्रित के सिवा हंस को घटमे निजनाम प्रगट करानेका कोई दुजा उपाय नही है । हंस को तत्त के साथ के प्रेम–प्रित के उपाय सिवा वेद के,मन और तन के हठके उपाय ये तत्त पानेके कोई भी काम के नही है । जैसे दुध में नमक डाला तो दुध नाश होता वैसे तत्त प्राप्त करने मे वेद के दुजे उपाय किये तो तत्त हंस के घटमें प्रगट नही होता ।।।५३।।

नाव उलट गिगन चड जावे ।। फाड़ पीठ सिखर मे आवे ।।
मिणिया सकळ फोड़ के भाई ।। मेर डंड कुं बींदे जाई ।।५४।।

यह निजनाव हंस के प्रेम से ही घटमे प्रगट होता । हंसके प्रेम से ही घटमे उलटता । हंसके प्रेम से गीगन में चढ जाता । हंसके प्रेमसे ही पीठ के सभी २१ मणीयोको फाड्कर मेरु दंड को छेदकर सीखर में चढ जाता ।।।५४।।

सिर उपर होय त्रुकुटी आया ।। लागो ध्यान नेण पलटाया ।।
अबे चडया नाव अगम दिस भाई ।। बिना प्रेम नही ओर उपाई ।।५५।।

हंस के प्रेम से यह निजनाम सिरके उपर त्रिगुटीमें आता । तब त्रिगुटीमें हंसको तत्तका ध्यान लगता व हंसके नेण पलटते । त्रिगुटीको पार करके निजनाम अगम दिशा मे चढता । ऐसे अगम देशमें जानेके लिये हंस को तत्तसे प्रेम प्रगट करने के उपाय के सिवा दुजा कोई भी उपाय नही है ।।।५५।।

विठलराव वाच ।।

विठलराव अब बूज्यो आणी ।। किण सूं प्रेम करे ओ प्राणी ।।
तुम देवळ देव बिध नही राखी ।। निराधार प्रेम बिध भाखी ।।५६।।

।। विठ्ठलराव उवाच ।।

विठ्ठलरावने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजसे कहाँ यह प्राणी प्रेम तो भी किससे करे? आपने देवल और देव तथा वेदकी,कुंची मुद्रा आदि कोई भी विधी नही रखी । निराधार याने जगत के प्राणी को समझे ऐसे देव,देवल वेद मे की कुंची मुद्रा उनके आधार सिवा प्रेम करनेकी विधि बताई ।।।५६।।

क्हो जी प्रेम कोण सुं लागे ।। बिना सुध केसे कोईभागे ।।
करणी ग्यान ध्यान नही राख्यो ।। निराधार प्रेम तुम भाख्यो ।।५७।।

अब आप बताईअे हंसके सामने देव,देवल,करणी,ग्यान,ध्यान,कुंची,मुद्रा अे कुछ नही है तो अुसे प्रेम किससे लगेगा अुसे किससे प्रेम करना है । यह समज ही नही है तो प्रेम करनेमे दौड कैसे लगायेगा । आपने प्रेम करनेके लीअे करणी,ग्यान,ध्यान अीन किसीका कुछ भी आधार नही रखा तो प्राणी जो आपने निराधार प्रेम करने की रित बताई वह कैसे धारण

करेगा ।५७।।

सुखो उवाच ।।

क्हे सुखराम प्रेम आधारा ।। सत्तगुरु सरण अेक बिचारा ।।
और सरणो कोई नही चहिये ।। आपी उलट आप मे रहिये ।।५८।।

।। सतगुरू सुखरामजी महाराज उवाच ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने विठ्ठलराव से कहॉ कि,मै जो प्रेम बता रहा हुँ वह निराधार नही है । पुरे आधार का है । सतगुरु के तन मे सर्व सृष्टीका मालिक प्रगट हुआ है अुसका आधार है । अैसे सतगुरु के घट मे प्रगट हुअे वे सर्व सृष्टीके मालीक के शरण मे रहनेका एक ही विचार रखना चाहीअे व दुजोके शरण मे जानेका याने ब्रम्हा,विष्णु,शंकर,आदि शक्ती,वेद,भेद के शरण मे जानेका कोई भी विचार नही रखना चाहीअे अिससे सतगुरु के घट मे जो तत्त प्रगट हुआ है अुससे हंस के अपने आपसे प्रेम आता व प्रेम आते ही कुद्रतकला घटमे प्रगट होती व हंस अपने आप ही घटमे उलटकर घटमे के प्रगट हुअे वे तत्त मे अपने आप ही मील जाता ।।।५८।।

जो चावे सो सत्तगुरु होई ।। आनंद ब्रम्ह राम क्हुं तोई ।।
और न दूजी आसा कांही ।। प्रेम लगे गुरु चरणा जांही ।।५९।।

मोक्ष मे जाने के लीअे याने आनंदब्रम्ह मे या रामजी के पदमे जानेके लीअे आनंदब्रम्ह याने रामजी का शरणा चाहीअे । आनंदब्रम्ह यानेही रामजीसे प्रेम होना चाहीअे । आनंदब्रम्ह यानेही रामजी तो सर्व व्यापी है । फीर अैसे आनंदब्रम्ह या रामजी का अुसे पाने के लिअे आधार कैसे ले । अिसपर आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव से बोले की आनंदब्रम्ह याने रामजी सर्व व्यापी है । परंतु व हंस को समजे अैसे प्रगट रुपमे नही है अिसलीए अैसे रामजी से प्रेम नही करते आता तथा शरणमे नही जाते आता वही रामजी सतगुरु के घटमे प्रगट हुआ रहता । अिसप्रकार सर्व व्यापी परंतु न समजनेवाले रामजी व सतगुरु के घटमे प्रगट हुअे वे सतग्यान से समजनेवाले रामजी एक ही है । अैसे समज आनी चाहीअे । अैसे समज आने पे सतगुरु ही आनंदब्रम्ह है सतगुरु ही रामजी है अैसा हंसको समजता है । अैसी समज आने पे हंस को जो महासुख के मोक्ष पद की चाहना है वह पद देनेवाले यह तत्तधारी सतगुरु ही है अैसा समजने लगता है । फिर अैसे आनंदब्रम्ही सतगुरु मिलने पे मायाके किसी देवता या विधी को आशा नही रहती । अैसे हंस के निजमन को कुद्रतकला रुपी गुरु के चरण मे प्रेम लग जाता अैसे शिष्यका गुरु के देह के चरण से नही गुरु मे प्रगट हुअे वे तत्त के चरण मे प्रेम लगता ।।।५९।।

अेसो हेत गुरां सूं लागे ।। तन मन गयां भ्रम नही जागे ।।
तब वो प्रेम उमंग घट आवे ।। ने: अंछर तन माय जगावे ।।६०।।

सतगुरु ही मोक्ष ले जानेवाले सतपरमात्मा है अैसा हंस को समजता तब सतगुरु से हेत होता । अैसे हेत मे तन को कितने भी कष्ट पडे तन भंग भी होने की स्थिती मे आ

गया,मन को कितने भी कष्ट पडे तो भी उस हंस को सतगुरु के प्रती प्रगट हुअे वे हेत मे जरासा भी भ्रम या फरक नही आता । अैसी स्थिती हंस को बनती तब हंस को उसके घटमे सतगुरु से प्रेम उमंग आता । अैसा प्रेम उमंग आते ही घटमे ने:अंछर जागृत होता ।।।६०।।

प्रम मोख का सत्तगुरु दाता ।। सब कर्णी का गुरु ही बिधाता ।।
पार ब्रम्ह सत्तगुरु ही भ्यासे ।। तब उरका कंवळ वो प्रेम प्रकासे ।।६१।।

पारब्रम्ह परममोक्ष के सुखोके दाता है । तथा पारब्रम्ह ही तीनलोक के सभी करणीयो के सुखोके विधाता है अैसे जब भासता तब ही हंस को सतगुरु ही परममोक्ष के दाता है व सतगुरु ही सभी करणीयो के विधाता है अैसे दिखता । अैसा दिखते ही हंस के उर मे सतगुरु से याने कुद्रतकला से याने पारब्रम्ह से प्रेम आता ।।।६१।।

प्रेम जग्यो हर नाव प्रकासे ।। अेक दिवस भर ढील न पासे ।।
दुलभ प्रेंम वो आवे नाही ।। तब लग नाव न जागे माही ।।६२।।

अैसा प्रेम जागृत हो जाने पे हंस के घटमे हर का निजनाम प्रकाशित हो जाता । अैसा प्रेम आने पे यह नाव प्रकाशित होने को एक दिन का भी समय नही लगता । परंतु अैसा प्रेम आना दुर्लभ है । कठीण है । जब तक अैसा प्रेम नही आता तब तक निजनाम हंस के घटमे प्रगट नही होता ।।।६२।।

और उपाव प्रेम के नांही ।। सत्तगुरु दया प्रकासे मांही ।।
मुख केणे को काम न कोई ।। कुद्रत कळा दया वां होई ।।६३।।

सतगुरु की मेहर होकर आनंद पद घटमे प्रकाशित करनेके लीअे सतगुरु से प्रेम करने के शिवा और कोई उपाय नही है । सतगुरु ने जगत के मायावी साधु सिध्दीयोके समान मुख से कुद्रत कला की दया हो गअी अैसा कहा तो भी हंस पे अैसा कहा तो भी कुद्रतकला की प्रकाशित होने की दया नही होती । अिसलीअे हंस के घट मे कुद्रतकला के प्रकाशित करने मे सतगुरु के मुख से कहने का कोई काम ही नही है ।।।६३।।

ओर ग्यान के अनंत उपाई ।। तत ग्यान के अेक ही भाई ।।
सत्तगुरु टाळ प्रेम ही आवे ।। तोई ने: अंछर वो नाव न पावे ।।६४।।

दुसरे सभी ग्यानोको प्रगट करने के लीअे अनंत उपाय है । परंतु अिस तत्त ग्यान को प्रगट करने के लीअे एक ही उपाय है । वह उपाय याने सतगुरु को कुद्रतकला समजकर अुस कुद्रतकला से प्रेम करना । सतगुरु टाळ के अन्य किसी माया के उपाय से प्रेम भी आ गया तो भी ने:अंछर नाम घट मे प्रगट नही होता तथा सतगुरु से भी प्रेम नही व ब्रम्ह माया से भी प्रेम नही तो भी नाव घटमे प्रगट नही होता ।।।६४।।

केतो ब्होत स्मज युं लाई ।। केतो अेक बचन मे भाई ।।
सत्तगुरु सूं दुबधा कछु नाही ।। अेसो मिले नीर पय माही ।।६५।।

इसलिये ने:अंछर को घटमें प्रगट कराने के लिये एक तो बहुत समज लाकर सतगुरु में के ने:अंछर से प्रेम लाओ या एक बचनसे ही सतगुरु मे के ने:अंछर से प्रेम लाओ । व सतगुरु मे के ने:अंछर से कोई दुविधा याने अंतर मत रखो । जैसे दुध में पाणी मिल जाता है वैसे सतगुरु में प्रगट हुये वे ने:अंछर मे याने ब्रम्हतत्व मे मिल जाओ ।।।६५।।

विठ्ठलराव ऊवाच ।।

सत्तगुरु म्हेर सुणी हम आगे ।। आप कहो सो अरथ न लागे ।।
वां तो कहयो दया कर देवे ।। तम कहो कुद्रत कळा कर लेवे ।।६६।।

।। विठ्ठलराव उवाच ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से विठ्ठलराव बोला की,सतगुरु की मेहर तो हमने पहले भी सुनी है । परंन्तु आप जो कह रहे हो उसका अर्थ समज मे नही आ रहा है । पहले जो सन्त मुझे मील उन्होने कहॉ की सतगुरु दया करते तब मोक्ष का काम हो जाता और आप कहते हो की सतगुरु की मेहर कर लेनी पडती ।।।६६।।

आगे दया म्हेर जन गाई ।। गुरु प्रताप सत संग माई ।।
आप कहो सो रीत न्यारी ।। आ गम नही कम को भारी ।।६७।।

पहले जो संत हो गये उन्होंने भी गुरु की मेहर और गुरुकी दया का वर्णन किया है । तथा उन्होने कहा है की,गुरु में जगतके लोगो को संसार से मोक्ष में पठाने का सत्त याने प्रताप रहता । परंन्तु आप कहते हो वह रीत इस विधीसे न्यारी हैं । इसमें मुझे कुछ समज में नही आता की इसमें कम कौनसा है और अधिक कौनसा है ? आप जो कह रहे हो वह अधिक हैं या पहले के संतोने जो कहा है या पहले के संतोने जो कहा है वह अधिक है यह मेरे समज में नही आ रहा है ।।।६७।।

वां तो कही संत कोई आवे ।। म्हेर करे तो भेद बतावे ।।
आप क्हो क्हेणो कुछ नाही ।। जागे नाव प्रेम सुं माही ।।६८।।

पहले मिये हुये संतोने कहाँ की कोई संत आयेंगे वे सतगुरु मेहर करेंगे तो भेद बतादेगे । और आप कहते हो की गुरुके कहनेका कुछ काम नही है । गुरुके मुँहसे कहे बिना ही मेहर हो जाती है । वह मेहर केवल गुरु ये प्रेम हो जानेपर हो जाती । और शिष्य में नाम जागृत हो जाता । ।।६८।।

वां तो कहयो नाँव सुं लागो ।। बेद क्रम कर निस दिन जागो ।।
साझन अेक संबावो आई ।। प्रीत करो साहेब सुं भाई ।।६९।।

पहले मिले हुए संतोने कहा की बेदमें बताये हुए नामसे लगो व वेद कर्म करके उस क्रियाकर्म मे जागृत रहो गाफील मत रहो । और केवल वेद के कर्मो की एक मात्र साधना करो व साहेब से प्रीत करो ।।।६९।।

आप कहो गुरूई हरी होई ।। सत्तगुरु बिना और नही कोई ।।
गुरू ही नाँव नेम पत सारा ।। गुरु ही सिंवरण ध्यान बिचारा ।।७०।।

और आप कहते हो वेद भेद मे साहेब नही है । साहेब सतगुरु में है । आप कहते हो की सतगुरु ही साहेब हैं । सतगुरु के बिना साहेब या हरी और कोई है नही । सतगुरु ही प्रगट निजनाम के रुपमें हैं । उनका ही नियम रखो व उन्हीका ही विश्वास रखो । ऐसे सतगुरु मे प्रगट हुए वे निजनामके ग्यानका ही विचार करो उस निजनाम का ही स्मरण करो,उस निजनाम का ही ध्यान करो ।।।७०।।

विठलराव यूं बोल्यां आई ।। आप न्यावकर दो समझाई ।।
वां तो कहयो तन मन माया ।। हर लेखे कर दो सब भाया ।।७१।।

विठ्ठलराव आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजसे बोला की आप मुझे न्याय करके समजाओ । पहले मिले हुये संतोने ऐसा कहा की यह,तन,मन व माया हरी लेखे कर दो याने हरी को अर्पण कर दो । और आप कहते हो तन,मन व माया हरी को अर्पण करणेसे साहेब मिलता नही । हरी तो सिर्फ सतगुरुके घटमें प्रगट हुये वे साहेबसे प्रिती करने पर ही मिलता । ।।७१।।

सुखो वाच ।।

विठलराव सुण बचन हमारा ।। न्याव करूं भांजूँ भ्रम थारा ।।
इण को अर्थ ये सुण भाई ।। वां हद बेहद की दोड़ बताई ।।७२।।

।। सतगुरू सुखरामजी उवाच ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने विठ्ठलराव को कहाँ की,मेरे बचन सुणो । मैं तुम्हारे सभी भ्रम ग्यान के न्यायसे मिटा देता हुँ । इसका अर्थ यह है वे पहले मिले हुये संतोकी पहुँच हद–बेहद तक की ही थी । इसलीये उन्होंने हद–बेहद तक पहुँचाने की तुम्हे दौंड बताई ।७२।

बेहद तो साझन सुंई जावे ।। वां साध्यो सोई आण बतावे ।।
इण मे झूट कछु नही भाई ।। प्रेम जोग बिध वां नही पाई ।।७३।।

बेहद मे तो वेद की साधना करके जाते आता । उन्होंने जो साधना की वही साधना दुसरोंको बताई । उनका बताना कोई झूठा नहीं है । तुम्हे पहले मिले हुये संतोके पास,मैं जो प्रेम योग बता रहा हुँ वह विधी थी नही । उन्हे यह प्रेम योग की विधी ही मिली नही थी । इसलिये जगत को उन्होने प्रेम योग की विधी नही बताई । उनके पास जो बेहद तक पहुँचने की साधना थी वही बताई ।।।७३।।

जे जे रिषी जोगेश्वर हूवा ।। ग्यान ध्यान वाँरा सब जूवा ।।
पिंडत बेद ब्यास गत न्यारी ।। जन औतार अेक बिध धारी ।।७४।।

और पहले के जो जो ऋषी और योगेश्वर हुए,उनके सभी के ग्यान अलग और ध्यान भी अलग थे । ऋषी (जैमिनी,कणाद,गौतम,पातंजली,कपील,वेदव्यास वगैरे)
जैमिनी ऋषी–कर्म को ठहराता है ।
गौतम ऋषी–ईश्वर परमात्मा को सत्य ठहराता है ।

पातंजली–योग बताता है ।
कपील–आत्मा को मानने को कहता है ।
वेदव्यास–अद्वैत मानकर सभी ब्रम्ह ही है ।
इसतरह से ऋषी,अपने–अपने ज्ञान,अलग–अलग बताते है । इसी तरह से योगेश्वर(कवी,हरी, अंत्रिक्ष,प्रबुद्ध,पिप्लायन,अविर्होत्र,दुर्मिळ,चमस,करभाजन आदी)
कवी–यह भक्ती करने को कहता है ।
हरी–आत्मा स्वरूप को देखने को कहता है ।
अंतरीक्ष–रचना,स्थिती,लय,यही बताता है ।
प्रबुद्ध–मिश्रित भक्ती करना बताता है ।
अविर्होत्र–मूर्ति पूजा करने के लिए कहता है ।
दुर्मिळ–अवतारों को मानने के लिए कहता है ।
करभाजन–हरी किर्तन और विवीध प्रकार से पूजा करना कहता है ।
इसतरहसे ऋषी और योगेश्वरोंके ज्ञान,अलग–अलग है । इसीतरहसे पंडीत और वेदव्यास, इनकी गती अलग–अलग है। जन(संत)और अवतार इन्होने एक विधी धारण किया ।७४।

सिध की म्हेर बचन सुं होई ।। बिना बचन दिल फळे न कोई ।।
इनकी म्हेर फळां की भाई ।। मोख ब्रम्ह नही बचना माई ।।७५।।

जैसे सिध्दकी मेहेर मुखसे वचन बोलनेसे ही होती है वे सिध्दकी मुखसे वचन नही बोलेंगे तो सिध्दाईका फल नही लगता । उनकी मेहर मायाके फलो की ही हैं । उनके मेहरसे मोक्ष का फल कभी नही लगता । मोक्षका फल आनंद ब्रम्हके मेहरसे लगता मायासे नही लगता । मुख यह माया हैं आनंदब्रम्ह नही है । इसलिये मोक्षका फल सीध्दोके मुखके वचनोसे नही लगता । ।।७५।।

आई अवतार रीत सुण होई ।। पिंडत ब्यास रिष की क्हुँ तोई ।।
अे बचना सूं मारे तारे ।। हद बेहद का कारज सारे ।।७६।।

यही रित अवतार,पंडित,व्यास,ऋषी,इन सभी की है । वे बचन से ही तारते । उनके बचनोसे हद–बेहद तक तिरणा होता परन्तु हद–बेहद के परे अगम देश को पहुँचना नही होता ।।।७६।।

पण अगम देस बचना मे नाही ।। बिन कुद्रत कळा न पहुँचे क्हाँ ही ।।
यूं जन की म्हेर दिल्ल की भाई ।। पवन बिना गिगन जाँ जाई ।।७७।।

अगम देश यह मुखके वचनोके मेहेर में नही हैं । अगम देश पहुँचना है,तो कुद्रतकला की मेहेर चाहिये । इसप्रकार संतोकी मेहेर संतोका दिल याने निजमन प्रसन्न होने पे ही होती उन संतोका निजमन प्रसन्न होने बिना श्वासके,साधनासे हंस गीगन याने दसवेद्वार पहुँच जाता है । ।।७७।।

यांरी म्हेर सकळ हद माँही ।। घणा घणी तो बेहद जाँही ।।
आ दिलकी म्हेर अगम घर जावे ।। हद बे हद कोई थाह न पावे ।।७८।।

सिध्द,अवतार,पंडीत,व्यास,ऋषी,इन सभी की मेहेर हद याने तीन लोको तक ही हैं । उनके मेहरका अधिकसे अधिक जोर लगा तो हंस बेहद याने तीन लोको के परे पारब्रम्ह होणकाळ तक पहुँचता । अगम घर नही पहुँचता । परन्तु सतगुरुके निजमन की मेहेर हद–बेहद के परे अगम घर पहुँचाती है । हद तथा बेहद में पहुँचानेवाले संतो को अगम घर पहुँचाने के मेहर की जरासीभी कला अवगत नही रहती ।।।७८।।

तन की म्हेर जीव की होई ।। जड़ माया कर बक्से कोई ।।
बचन म्हेर चेतन की जाणो ।। सोहं लग की मेहेर पिछाणो ।।७९।।

ऐसे मेहेर अलग–अलग प्रकार की रहती । मनुष्य के देह की मेहेर देहसे होती । उस मेहेर से जड माया का काम होता । मनुष्य के चेतन हंस की मेहेर बचन से होती वह पारब्रम्ह सोहम तक का पहुँचानेका काम करती । इन मेहेरोसे अगम देश पहुँचने का कारज नही होता ।।७९।।

ने:अंछर बचना मे नाई ।। ना कागद पर मंडयो न जाई ।।
कोण बिध कहो बक्से आणी ।। विठलराव स्मझो तत्त छाणी ।।८०।।

ने–अंछर यह माया नही हैं । तथा चेतन भी नही हैं । यह ने:अंछर कागजपर न लिखते आनेवाला तथा वचनोमे न बोलते आनेवाली अखंडीत ध्वनी है । ऐसे निजनाम ध्वनी की मेहेर देह माया से या चेतन जीव ब्रम्ह का आधार कैसे होगी इसका निर्णय सतस्वरुप तत्त ग्यान से समजकर कर करो ।।।८०।।

आ तो मेहेर आद सें होई ।। सत्तगुरु बिना न माने कोई ।।
गुरु सब ध्यान बिध्याँ मत सारा ।। सब करणी गुरु मूळ बिचारा ।।८१।।

यह मेहेर तो आदि अनादी से ही होते आ रही है । यह मेहेर उन्हीपे हुई है जीसने सतगुरु के निजनाम के शिवा किसी को भी माना नही हैं । जिसने जिसने तत्तरुपी गुरुका ही ध्यान किया है उन्हीका मत तथा उन्होंने बताई हुई विधी की है । जिसने जिसने यह जाना की,तत्तरुपी गुरु ने ही अलग–अलग करणीयो के अनुसार सुख प्राप्त होने के फल ठहराये है । इसप्रकार वेद,भेद,लबेद इन सब करणीयो के सुखोका मुल दाता यह तत्तरुपी गुरु ही है । ऐसी जिसकी समज बनी है उसीपे तत्तरुपी सतगुरु की मेहेर हुई है ।।।८१।।

ने:अंछर सत्तगुरु मे होई ।। पार ब्रम्ह प्रगट व्हुं तोई ।।
इण कारण सत्तगुरु कुंई माने ।। न्यारो कर ब्रम्ह केम पिछाणे ।।८२।।

सतगुरु मे ही ने:अंछर है । सतगुरु मे ही पारब्रम्ह प्रगट है । इसकारण सतगुरु को ने:अछर या पारब्रम्ह मानकर सतगुरु से प्रित करता है । सतगुरु से पारब्रम्ह या ने:अंछर अलग करके कैसे पहचाणोगे व उस ने:अंछर से कैसे प्रिती करोगे ।।।८२।।

कुदरत कळा नाव की जागे ।। अेसी मेहेर भ्रम सब भागे ।।
बिन करणी दे गिगन चडाई ।। सो गुरु बिना जपे क्या भाई ।।८३।।

सतगुरुके मेहेरसे ही हंस के घटमे कुद्रतकला जागृत होती तथा हंस के सब भ्रम भाग जाते । तथा वे सतगुरु देहकी या मनकी,वेदा मे की,श्वास की कोई भी करणी न कराते हुये गिगन मे याने दसवेद्वार में चढा देते । फिर सतगुरु के बिना किसका जप करे जिससे बिना करणी हंस गगन में चढ जाता हैं ।।।८३।।

अनहद घुरे नाद सिर बाजे ।। आनंद मे जन जाय ब्राजे ।।
अनंद लोक मे पहुँचे जाई ।। ओ गुण सब सत्तगुरु ही माई ।।८४।।

ऐसे सतगुरु के मेहेर से आनंद का नाद सीर मे गुंजता तथा उस अनहद ध्वनी में हंस जाकर विराजमान होता । ऐसे सतगुरु के मेहेर से हंस आनंन्द लोक पहुँचता । यह आनंद लोक में पहुँचानेका गुण सतगुरु के मेहेर मे है । ऐसी आनंन्द लोक में पहुँचाने की सत्ता सतगुरु के सिवा और किसीमे है ही नही तो सतगुरु के सिवा और किसको कैसे माने ।।।८४।।

ओर मेहेर कर मंत्र देवे ।। साझन ध्यान सबे सिष सेवे ।।
राज जोग मे बिध न काई ।। गुरु सुं हेत सोई जप भाई ।।८५।।

और सभी सिध्द ऋषी,जोगी,पंडीत,अवतार मुख के वचनो से मंत्र देकर शिष्योको ग्यान ध्यान की साधना करने बताते वैसे वे शिष्य देहसे या मन से हद–बेहद के ग्यान–ध्यान की सेवा तथा साधना करते । व माया के पदकी प्राप्ती करते । परंन्तु राजयोग में मुखके वचनोसे मंत्र देकर ग्यान ध्यान सिखानेकी साधना नही हैं । हद–बेहद के परेके आनंन्द पद की प्राप्ती करनी है तो गुरु से प्रित करना यही विधी रहती है । इसके अलावा दुजी कोई जप की विधी नही रहती । हंस के प्रिती करनेमे ही ने:अंछर का जप आ जाता है ।।।८५।।

बेद भेद मे ज्यूं बिध होई ।। राज जोग मे गुरु क्हुँ तोई ।।
सत्तगुरु माँय सबे बिध भाई ।। न्यारो हेत करे क्हाँ जाई ।।८६।।

जैसे वेद भेद में करणीयाँ साधने की विधी होती है,वैसे ही राजयोग मे गुरु मे प्रगट हुये तत्त से प्रेम करने की विधी रहती हैं । हद–बेहद के परे आनंन्द पद,आनंद ब्रम्हसे मिलता यह आनंन्द ब्रम्ह सतगुरुमे ओतप्रोत रहता है । अब सतगुरु छोड्कर आनंन्द ब्रम्ह से हेत कहाँ जाकर करे । ।।८६।।

आ सुण मेहेर इसी बिध न्यारी ।। ओर म्हेर मे सब बिध सारी ।।
ओ तो अेक प्रेम सुं जागे ।। दूजो प्रेम अर्थ नही लागे ।।८७।।

इसप्रकार सतगुरु की मेहेर सतगुरु के तत्त से प्रिती सिवा नही होती इस कारण सतगुरु की मेहेर सिध्द,ऋषी,पंडीत इनके मेहेर से न्यारी हैं । सतगुरु की मेहेर सिर्फ एक प्रेम से

जागृत होती है । सतगुरु की मेहेर सतगुरु से प्रेम छोड्कर दुजे उपायोसे हात मे नही आती है । फिर दुजी विधीयोसे कितना भी प्रेम लावो ।।।८७।।

इम्रत जहर दोय हे भाई ।। यूँ अेसे मेहेर जक्त के मांई ।।
इम्रत तो कुद्रत सुंई होई ।। जेहेर ब्होत बिध करले सोई ।।८८।।

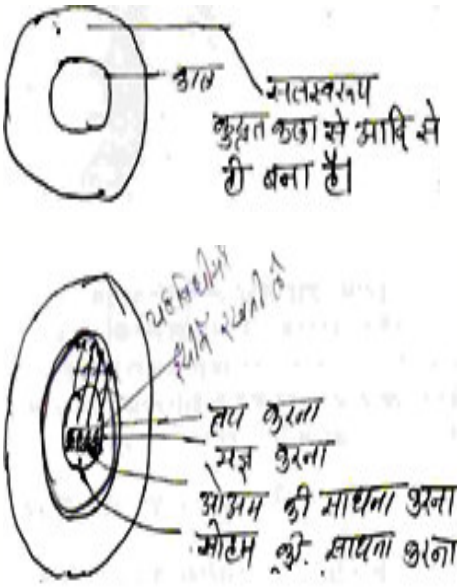

जगतमे अमृत व जहर दो है । इसप्रकार जालीम कालसे निकलनेका तथा जालीम कालके मुखमें पडे रहनेकी दो विधीया । आदिसे सृष्टीमें है । जैसे अमृत कुद्रत से होता है वह बनाया नही जाता । परंन्तु जहर बहोत विधीयोसे करते आता । ऐसे जालीम कालसे मुक्त होनेका सतस्वरुप मार्ग यह कुद्रतसे पहलेसे ही बना है । याने सतस्वरुप सतगुरु की मेहेर कुद्रतसे ही होनेकी रित है । परंन्तु कालके मुखमे गीरनेका मार्ग यह मायाके नाना विधीको धारण करनेसे बनते रहता है । ऐसी अनेक विधीयोसे कालके मुखमे रहते आता । इन सभी विधीयोकी पहुँच कहाँ तक है तो काल तक है । काल से निकालने वाले सतस्वरुप तक नही है ।।।८८।।

के सुखराम अर्थ ओ होई ।। विठलराव भिन्न भिन कहयो तोई ।।
जो निज मन मान्यो भाई ।। तो कसर कोर राखो मत काई ।।८९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने विठ्ठलराव को कहाँ की,मैने वेद क्या है,भेद क्या है,लबेद क्या है?उनकी पहुँच कहाँ तक है । सतगुरु क्या है?सतगुरु की मेहेर कैसे होती? आनंद ब्रम्ह यह सतगुरु ही कैसे है?आदि भांती भांती प्रकारसे बताया यह सभी सुणके तुम्हारा निजमन मैने बताये हुये तत्त ग्यानको मानता है तो मै जो आनंदपद की विधी बता रहा हुँ उसे धारण करने मे कोई कसर मत रखो ।।।८९।।

जो निज मन माने सत्त भाई ।। तो कसर कोर राखो मत राई ।।
तन मन धन अर्पन सब कीजे ।। निराधार गुरु सर्णो लीजे ।।९०।।

यदी तुम्हारा निजमन उस सत को मानता होगा तो हे राजा राजयोग की विधी धारण करने मे जरासी राई उतनी भी कसर मत रखो व तन,मन,तथा धनमे से मोह निकालकर तुम्हारे निजमन को सतगुरु को अर्पण करो व निराधार याने माया के तन,मन,धन का तथा वेदो के कर्मोका कोई आधार न लेते हुये गुरु के तत्त की शरण लो ।।।९०।।

मोसर चूक न जाणो भाई ।। जे तत्त समझ धसी उर माही ।।
ज्यूं संता आगे बिध कीवी ।। सोई तम करो मोख वां लीवीं ।।९१।।

आज तत्त पाने का मौका आया हुआ है । ऐसा भारी मौका चुको मत । यदी तुमारे हंस के उर उरमे तत्त की समज धँसी है तो यह तत्त धारण करने का मौका हाथ से जाने मत दो

। पहले के हुये सन्तोने मोक्ष पाने के लिये जो विधी धारण की थी वही विधी तुम आज धारण करो । ।।९१।।

राज जोग की अे हे उपाई ।। तन मन धन गुरु च्रणा माई ।।
मेल्यो जका तत्त कूं जाण्यो ।। सब बेराग त्याग मन ठाण्यो ।।९२।।

राजयोग प्रगट करने के लिये तन,मन,धन से हंस का मोह निकलना चाहिये मतलब निजमन निकलना चाहिये व हंस का निजमन सतगुरु के तत्त के शरण मे लगना चाहिये ऐसा यह एक ही उपाय है । ऐसा तन,मन,धन से निजमन निकालकर सतगुरु के तत्त मे जिसने जिसने निजमन लगाया है । उन्होंनेही तत्त जाणा है । इस प्रकार तन,मन,धन आदि से बैराग त्याग लेना यह हंस के निजमन से होना चाहिये ।।।९२।।

और त्याग बैराग न होई ।। मन माने ज्हाँ रहो जन कोई ।।
अेक बिध कर्डी आ भाई ।। तन मन धन अर्प्यो नही जाई ।।९३।।

तन,मन,धन को त्याग दिया परंन्तु तन,मन,धन से मोह नही निकला मतलब हंस के निजमन को इन चीजोसे वैराग्य नही आया है ऐसा त्याग निजमन से वैराग्य त्याग नही होता । निजमन से तन,मन,धन से वैराग्य आने वह हंस उसका मन माने जहॉ रहे उससे कोई फरक नही पड्ता । मतलब निजमन से तन,मन,धन का वैराग्य आने पे वह राजा के समान गृहस्थी बनके रहे या साधु के समान बैरागी बनके रहे उससे उसके आनंन्द पद जाने में कोई कसर नही रहती । परन्तु तन,मन,धन गुरु के चरणो में अर्पण करना याने तन,मन,धन से निजमन निकालना व निजमन गुरु के निजनाव को अर्पण करना यह विधी बहुत कठीण है ।।।९३।।

घर कुळ त्याग करे नर कोई ।। ले मुख जाय बन मे सोई ।।
ओ बी त्याग स्हेल रे भाई ।। पण तन मन धन अरप्यो नही जाई ।।९४।।

घर कुलका त्याग करके बनमें सदा के लिये जाना यह विधी भी सहल है परंन्तु तन,मन,धन मे से मोह निकालकर निजमन गुरु को सोपना यह बहोत कठीण काम है ।।।९४।।

डाकर पड़े धेहे मे नर कोई ।। यूं बेराग त्याग सुण होई ।।
सती अगन तन काट जळावे ।। तन मन यूं बेराग कहावे ।।९५।।

जैसे कोई मनुष्य पाणी के भरे हुये डोह में जिसमें से निकलना कठीण होता,उसका मरणा निश्चीत रहता ऐसे डोहमे एकदम छ्लांग लगाकर कुद जाता । उस वक्त उसका मोह तन व मन से निकला रहता । दुजा उदाहरण सती स्त्री जलते अग्नी के लकडो में अपना तन जला देती है तब उसका मोह तन व मन में से निकला रहता ऐसे बैराग–त्याग को तन–मन से मोह–निकला हुआ बैराग–त्याग कहते है ।।।९५।।

तन मन धन अरपण कर भाई ।। निर्भे होय रहिये जग माई ।।

हुवे आण आप सूं आणी ।। सो पासे लॉखा रहो प्राणी ।।९६।।

जैसे मनुष्य डोह मे छलांग लगाता कुद जाता व मर जाता । या जैसे सती स्त्री पतीके प्रितीमे लकडे में जल जाती व मर जाती । उसप्रकार हंस ने तन,मन,धन के लिये मोह ममता से मरना चाहिये व सतगुरु के तत्त से प्रित करनी चाहिये । ऐसा करना याने गुरु को तन,मन,धन अर्पण करना हैं । तन,मन,धन से मोह ममता निकालकर सतगुरु के तत्त के भरोसे निर्भय होकर रहना चाहिये । फिर कोई भी बात अपने आपसे हो गई तो उसे आड नही देना चाहिये । फिर लाखो मनुष्य प्राणी पासमे रहे तो भी खुष रहना चाहिये या सभी गये तो भी दु:ख नही होना चाहिए ।।।९६।।

जो जावे सो जाणे दीजे ।। सेज रहे सो सरणे लीजे ।।
डरपो मती लाज कुळ जाणी ।। बिड़द इधक बधसी जुग आर्णी ।।९७।।

जो मनुष्य प्राणी छोड्के जाते है । उन्हें जाने दो । व सहज मे जो साथमें रहते उन्हे साथ मे रखो । प्राणी छोड्के जाते है इसकारण या और कोई कारण से कुल की लाज जाती है तो डरो मत । इस निर्भयता से तुम्हारा जगत में बिड्द याने पराक्रम बहोत बढेगा ।।।९७।।

जो जो हंस तमारा होई ।। सो सो कदेन बिछड़े कोई ।।
चिंता मती करो तम काई ।। निर्भे तत्त गहो जग माई ।।९८।।

जो जो हंस तुमारे रहेंगे वे वे हंस कभी भी तुमसे बिछड्ेंगे नही । तुमसे हंस बिछड्ने की चिंता मन करो । जबतक संसार में हो यह निर्भय तत्त पकड्कर रहो ।।।९८।।

कुळ पदवी छुछम आ भाई ।। सो पण भरी बिकारां माई ।।
जन पदवी तिहुं लोक सरावे ।। हंसा उलट अगम घर जावे ।।९९।।

कुल की राजा की पदवी यह संत के दिव्य पदवी के सामने अती सुक्ष्म है । सुक्ष्म पदवी होकर भी काल के दु:खोके विकारासे भरी हुई है । इस राजा पद को सिर्फ राज के ही थोडे लोग ही जाणते है । जब की संतपद को तीनो लोक मृत्युलोक,पाताललोक,स्वर्गलोक सब जाणते है व सभी सराते हैं । इस उपरान्त हंस काल का लोक छोड्कर महासुखके अगम घर याने जिसे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव जाणते नही ऐसे अगम घर जाता है ।।।९९।।

ग्यान खोज हिरदे कर लीजे ।। निरस बात सोही नही कीजे ।।
से सूरा साहेब मन भावे ।। तीन लोक तां को जस गावे ।।१००।।

अिस ग्यान की खोज करके हृदय में अिस तत्त को धारण कर लो व काल के मुख में दु:ख भुक्तानेवाली जो जो निरस याने हलकी बाते हैं उसे त्याग दो । ऐसा जो शुरविर रहेगा वह संत साहेब के मन में बहोत भांता है । ऐसे शुरविर संत की तीन लोक,१४ भवन तथा ब्रम्हा का सतलोक,महादेव का कैलास,विष्णु का वैकुंठ तथा शक्ती का शक्तीलोक इन सभी लोको में सभी लोग बहोत महिमा करते है ।।।१००।।

तन मन सूं तज रिजक उपाई ।। तत्त ध्यान धरीये घट माई ।।

रख बिश्वास पूरसी आणी ।। निरपख होय गहो तत्त छाणी ।।१०१।।

तन,मन को वेद के कर्म करके धन कमाने का उपाय छोड दो । तत्त का ध्यान घट में धारण करो । उस रामजी का विश्वास रखो वह रामजी तुम्हे जो चाहिये वह बिना कसर से हरदम सभी पुरायेगा । जगत में माया के अनेक पक्ष है । ऐसे पक्षोसे परे जाकर इन पक्षोसे निरपक्ष हो जाओ व निरपक्ष होकर तत्त को जाणकर धारण करो ।।।१०१।।

मन सुं अेक ध्यान सो कीजे ।। ओर बोझ सिर कछुन लीजे ।।
सेज बिरत मे जो कछु होई ।। ताँ कूं आड़ न दीनी कोई ।।१०२।।

तुम निजमन से सतस्वरुप परमात्मा का एक ही ध्यान करो । और राजका तथा कुटुंम्ब का कोई बोझा सिरपे मत लो । सहज वृत्ती में अपने आप जो कुछ भी होगा उसे आड याने रोक मत दो । जो होगा सो होने दो ।।।१०२।।

कुंडल्या ।।

अण भे हेला देत हूं ।। सुण लीजो निज दास ।।
ब्रम्ह लोक की चाय व्हे ।। से आज्यो मम पास ।।
से आज्यो मम पास ।। ब्रम्ह के माँय मिलाऊँ ।।
जतन करूं ब्हो भांत ।। संग कर ले म्हे जाऊँ ।।
सुख राम हंसाँ के कारणे ।। देहे धारी जग बास ।।
अणभे हेला देत हूं ।। सुण लीज्यो निज दास ।।१।।

।। कुण्डलियाँ ।।

यह मै अणभे देशका अनुभव लेकर सभीको हाँक लगा रहा हूँ । जो निजदास होगे वे सभी सुन लो । जिस किसीको भी सतस्वरुप ब्रम्हलोककी चाहत होगी वे सभी मेरे पास आओ । मेरे पास जो आयेगा उसे मैं सतस्वरुप ब्रम्ह मे मिला दुँगा । और कालसे बहुत तरह जतन करके मैं अपने साथ उसे ले जाउँगा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि मै हंसो के लिये इस जगत मे देह धारण करके आया हूँ ।।।१।।

सब्द हमारा सांभळयाँ ।। अणंद हुवे घट माय ।।
से सब हंस सरूप हे ।। मिलसी हम सूं आय ।।
मिलसी हमसूं आय ।। नाँव मेलूं घट माही ।।
पिछम देस होय हंस ।। उड़ आकासा जाही ।।
सुखराम जीव सुळझाय के ।। जम सूं लेऊं छुड़ाय ।।
सब्द हमारा साँबळयाँ ।। आनंद हुवे घट माय ।।२।।

मेरे शब्द यह सतस्वरुप साहेब के शब्द है । ऐसे मेरे शब्द याने ज्ञान सुनकर जिसके घटमें आनंन्द होगा वे सभी जीव सतस्वरुप मे जानेवाले हंस स्वरुप है । वे हंस स्वरुपी जीव मुझमें आकर मिलेगे तो उनके घटमें मैं यह निजनाम प्रगट करा दुँगा । वे हंस पश्चिम दिशासे याने बंकनालके रास्तेसे होकर उड्कर आकाशमे ब्रम्हंड्मे जायेगे । आदि सतगुरु

सुखरामजी महाराज कहते है कि,मायामे उलझे हुए उन हंसो को सुलझा कर यम से छुडा लूगा । मेरे सतस्वरुप शब्द याने ज्ञान सुनकर जिसके घटमे आनन्द होगा वही मुझसे आकर मिलेंगे । ।।२।।

सबद हमारा पेकं हे ।। भेज दिया जग माय ।।
भ्रम क्रम कूं भांग के ।। हंस ले आवे जाय ।।
हंस ले आवे जाय ।। ब्रम्ह के लोक पठाऊँ ।।
सवा लाख को हुकम ।। हंस संग लेकर जाऊँ ।।
सुखराम दास फटकार क्हे ।। तिण मे कसर न काय ।।
सब्द हमारा पेक हे ।। भेज दिया जुग माय ।।३।।

यह मेरे सतस्वरुप के शब्द बहुत पक्के हैं । इस शब्द याने ज्ञान को मैने माया के जगत मे भेजा है । यह मेरे सतस्वरुप साहेब के शब्द याने ज्ञान संसार मे हंसो के भ्रम तोडकर माया छुडाकर हंसोको सतस्वरुप ब्रम्ह मे ले जाअेगा इसप्रकार मैं हंसोको माया से निकालकर सतस्वरुप ब्रम्ह मे भेजता हुँ । सतस्वरुप ब्रम्हसे सवा लाख हंसो को मेरे मोक्ष जाते समय साथमे ले जानेका मुझे हुकूम हैं । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की यह बात मैं फटकार कर कह रहा हुँ । मतलब चौडे बजा बजाके कह रहा हुँ । जिसमे कोई कसर नही है । ऐसे मेरे सत शब्दके ज्ञान को मैने जगत मे भेजा है,जो सतशब्द का ज्ञान हंसो को मायाके उलझनसे निकालकर सतस्वरुप ब्रम्ह मे भेजने में बहोत पक्का है ।।।३।।

ओऊँ अजपो संग करे ।। सोहं सासा जाण ।।
ररो ममो रट जीभ सूं ।। धरे बिच मे आण ।।
धरे बीच मे आण ।। तबे ने:अंछर पाया ।।
इण छक्के बिन मेल ।। पीठ राहा कदे न आया ।।
सुखराम दास अे अेकठा ।। मथे नाभ मे आण ।।
ओऊँ अजपो संग करे ।। सोहँ स्वासा जाण ।।४।।

ओअम,अजप्पा,के साथ सोहम का संग किया तो श्वास बनता है ऐसे श्वास मे ररो व ममो याने रामनाम इसका जीभ से रटन करनेपे मतलब ओअम,अजप्पा,सोहम के बिचमे ररो व ममो का रटन करने पे छठ्वा शब्द ने:अंछर प्रगट होता है । ऐसे ओअम अजप्पा,सोहम ररो,ममो व प्रगट हुयेवे ने:अंछर ऐसे छे शब्दोके मेल के सिवा पीठ के राहसे हंस को कभी भी दसवेद्वारमे ब्रम्हंड मे जाते नही आता आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि इसप्रकार ये ओअम अजप्पा,सोहम ररो,ममो तथा ने:अंछर इन छ्वो को इकठ्ठा करके इनको नाभी मे मंथन करो जिससे पिठके २१ ब्रम्हंड का छेदन होगा व हंस पश्चिम से दसवेद्वार ब्रम्हंड मे पहुँचेगा ।।।४।।

ओऊँ सोहं लिंग हे ।। स्वासा पुरष सरीर ।।
रंरकार सो बीज हे ।। मंमकार बिंद बीर ।।
मंमकार बिंद बीर ।। भग अंछया सो होई ।।
सुरत कँवळ ताँ माय ।। प्रीत नारी क्हुं तोई ।।
सुखराम भोग जो अे करें ।। जीभ सेझ पर आय ।।
तो जिव उलटर आद घर ।। मिले ब्रम्ह मे जाय ।।५।।

ओअम याने बाहर का श्वास का सोहम याने अंदर का श्वास यह पुरुषका लींग है व श्वास यह पुरुष का शरीर है व रंरकार यह स्त्री का बिंद है व इच्छा यह स्त्री का भग है । सुरत यह गर्भ रुकनेका कमल है व प्रीत यह नारी है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की ये सभी जीभ के सेजपर आकर भोग करेगे तो यह जीव उलटकर आदि घर याने सतस्वरुप ब्रम्ह मे पहुँचेगा ।।।५।।

सिष बचन ।।

सिष बुझे गुरु देव कूं ।। मो कूं कहो समझाय ।।
जीव ब्रम्ह सुं बीछड़यो ।। किस कारण जन राय ।।
किस कारण जन राय ।। काँय आयो जग माँही ।।
भोळप कन रीसाय ।। कन माया रस ताँई ।।
अब तलफे ब्रम्ह लोक कूं ।। क्हो किस कारण आय ।।
सिष कहे गुरु देव कूं ।। मो कूं कहो समजाय ।।६।।

।। शिष्यउवाच ।।

शिष्य विठ्ठलराव राजा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से पुछ्ता है । की हे गुरुदेवजी मुझे यह समझाकर बताईए की यह जीव होणकाल ब्रम्ह से बिछ्डकर जगतमे किस कारण आया है । यह जीव होणकाल ब्रम्हसे बिछ्डकर भोलेपन में आया है मतलब अज्ञानता में आया है या वहाँ से किसीसे रुठकर आया है या माया का रस लेने के लिये यहाँ आया है,यह समझाकर बताओ । अब यह जीव होणकाल ब्रम्ह में फिरसे मिलने के लिये तडफड कर रहा है इसलिये अिसका आनेका क्या कारण हैं यह मुझे समजाके कहो ।।।६।।

क्या दु:ख ब्रम्ह लोक मे ।। क्या सुख थो नाँय ।।
क्यूं आयो तज धाम वो ।। क्युं पडियो फंद माँय ।।
क्यूं पडियो फंद माँय ।। दया कर रीत बतावो ।।
ब्रम्ह जीव हुवो काँय ।। अरथ सो सोझर लावो ।।
अब ब्रम्ह होणो आद रे ।। पेली आयो काँय ।।
क्हा दु:ख ब्रम्ह लोक मे ।। क्या सुख थो नाँय ।।७।।

उस ब्रम्ह लोकमें इस जीवको क्या दु:ख था तथा वहाँ इस जीवको क्या सुख नही था जीसकारण इस जिवने ब्रम्हपद छोडा व मायाके फंदेमे आकर पडा इसकी यहाँ आनेकी रीत

बनी इसका कारण आप दया करके मुझे बताओ । ब्रम्हमे यह जीव ब्रम्हके स्वरुपका था वह ब्रम्ह मायामे आकर जीव क्यों हुआ इसका सभी अर्थ खोजकर मुझे बताओ यह जीव अब ब्रम्ह होनेमे व्याकूळ हैं तो पहले ही ब्रम्हपदसे मायामे क्यो आया यह मुझे समझाओ । वहाँ ब्रम्हमें जीवको क्या दु:ख था तथा वहाँ क्या सुख नही था इसका खुलासा करके मुझे बताओ ।।।७।।

जीव ब्रम्ह ते बीछड़यो ।। युं कहे सब ही ग्यान ।।
वाँ हाँ कुछ न्यारो जीव थो ।। कन ब्रम्ह अेकी ध्यान ।।
कन ब्रम्ह अेकी ध्यान ।। ब्रम्ह सुं बिछड़यो काँई ।।
वांहाँ कांहाँ रहयो निधान ।। काँय आयो जग माँई ।।
ओ आंटो मुज खोल के ।। कहिये हे ज्यूं आन ।।
जीव ब्रम्ह ते बीछड़यो ।। युं कहे सब ही ग्यान ।।८।।

सभी ज्ञानी वेद,शास्त्र,पुराण साधु संतोकी वाणीयाँ यह कहती है की यह जीव ब्रम्हमें से अलग होकर यहाँ मायामें आया हुआ हैं । वहाँ ब्रम्हपद मे अे जीव ब्रम्ह स्वरुपसे न्यारा था,या ब्रम्ह के स्वरुप का था । वह ब्रम्ह स्वरुप का था तो ब्रम्ह से बिछड्या क्यो ? वहाँ से ब्रम्ह रुपी जीव आने के बाद ब्रम्ह का क्या रहा? व ब्रम्हसे बिछड्कर जगतमें क्यो आया । यह आढी खोलकर मुझे जैसे हुआ है वैसे के वैसे बताओ ।।।८।।

वोईज ब्रम्ह ओ जीव हे ।। कन वो न्यारो होय ।।
के आयो यां हाँ फूट कर ।। सो कहिये गुरु मोय ।।
सो कहिये गुरु मोय ।। अेसें कहे सब कोई ।।
सब कोई सत स्वरूप ।। कन पुत्र जिम होई ।।
वांहाँ यहाँ को क्या फेर हे ।। सो बिध कहिये मोय ।।
वो ईज ब्रम्ह ओ जीव हे ।। कन वो न्यारो होय ।।९।।

सभी वेद शास्त्र,पुराण,साधु संतोके ज्ञान मे यह कहते है की जीव ब्रम्हमें से बिछड्या हैं । तो यह जीव वही ब्रम्ह स्वरुपका है या ब्रम्ह से न्यारा हैं । या यह जीव उस ब्रम्हा का अंश फुटकर जीव बनके आया है । गुरुजी यह सभी मुझसे कहीअे । सभी ही ऐसा कहते है की ऐ सभी जीव उस सतस्वरुप के जैसेही है । या उस सतस्वरुप के पुत्र के जैसे है । वहाँ के ब्रम्हपण मे तथा यहॉके जीवपण में क्या फर्क है ? यह सभी भेद मुझे बताओ । यह जीव वही ब्रम्ह हैं या यह जीवब्रम्ह से न्यारा है यह बताओ ।।।९।।

सुखो वाच ।।

जन सुखदेव अब बोलिया ।। सिष सुण दे कान ।।
पार ब्रम्ह इण जीव को ।। निर्णो कहुँ सब आण ।।
निरणो कहुँ सब आण ।। भ्रम राखुं नही कोई ।।

जीव ब्रम्ह हे दोय ।। आँस अेसी बिध होई ।।
पूत पिता सूं बीछड़े ।। यां हां गत सो वांहाँ जाण ।।
जन सुखदेव अब बोलीया ।। हे सिष सुण दे कान ।।१०।।

।। सतगुरू सुखरामजी उवाच ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने शिष्य विठ्ठलराव को कहॉ की हे शिष्य ध्यान देके सुण । मैं तुझे पारब्रम्ह व जीव का निर्णय भांती भांती से समजा कर बताता हुँ । यह ज्ञान सुणने के बाद तुझमें पारब्रम्ह क्या है तथा जीव क्या है यह समझने में कोई भी भ्रम नही रहेगा । जीव व पारब्रम्ह यह दो अलग अलग है । उनकी यह ऐसे विधी है वह सुन । जैसे जगतमे पितामें पुत्र के निकलनेकी गती है वैसेही गती होणकाल पद मे होणकाल पिता से जीव पुत्र की निकलनेकी गती हैं ।।।१०।।

पूत पिता के माँय हे ।। युं ब्रम्ह मे जीव होय ।।
याँ हाँ जिव न्यारो ऊपजे ।। वाँ हां बी आगत जोय ।।
वां हाँ बी आगत जोय ।। नार नर वां हाँ बी होई ।।
सुणो ब्रम्ह बुहार ।। भोग सारा कहुँ तोई ।।
सुखराम क्हे सिष सांभळो ।। वां हाँ भ्रम दु:ख नही कोय ।।
पूत पिताके माँय हे ।। यूँ ब्रम्ह मे जिव होय ।।११।।

जैसे पुत्र पितामें रहता वैसेही यह जीव पुत्र,पारब्रम्ह पितामें रहता । जैसे यहाँ पितामेंसे पुत्र अलग होकर उपजता ऐसेही दोनोकी समान गती है । और स्त्री पुरुष जैसे यहॉ है । वैसेही स्त्री-पुरुष वहाँ होणकाल पदमें है । वहॉ के पारब्रम्हके सभी भोग व्यवहार मैं तुम्हे बताता हुँ । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव शिष्य से बोले की वहॉ दु:ख तथा भ्रम कोई भी नही हैं । जैसे पुत्र पितामें होता वैसेही जीव ब्रम्ह में था यह समझो ।।।११।।

याँ हाँ जीव पेड़यां ऊतरे ।। पड़े दु:ख मे जाय ।।
चोथी पीड़ी रंक होय ।। अे मुख बिष ले खाय ।।
अे मुख बिष ले खाय ।। जीव युं आण कहायो ।।
जात पाँत कुळ छाड ।। संग बेस्या सुं लायो ।।
सुखराम कहे यूं ब्रम्ह सूं ।। बिछड़ जीव हुयो आय ।।
ईयां जीव पेडयाँ ऊतरे ।। पड़े दु:ख मे जाय ।।१२।।

जैसे यहॉ राजा था । उसकी चौथी पिढी रंक बनती । यह कैसे होता यह समझो । राजा है उसे पाँच पुत्र है । उसके बडे लड्केको राज मिलता व अन्य चार पुत्रोको कुछ गाँव मिलते। यह चार पुत्रोका स्वभाव राजा के समान खर्चीला राजेशाही का होता है । उतनी कमाई राजा पितासे मिले हुए गाँवोसे मिलती नही फिर अे पुत्र राजेशाही टिकाने के लिये गाँव के गाँव बेचते व राजेशाही कैसे भी टिकाते यह राजाकी दुजी पिढी है । ऐसे राजाके

पुत्र को चार पाँच पुत्र होते अे राजा के पोते है । मतलब तीसरी पिढी हैं । उन चारो पाँचो में बटवारा होता तो हर किसीके हिस्सेमें उनके पिता को जैसे गाँव मिले थे वैसे हिस्सेमें गाँव नही आते कारण राजेशाही खर्चेमें पिताने गाँव के गाँव बेंच दिये रहते । इसकारण पोतोके हिस्सेमें गाँवके कुछ खेत आते इनका भी खर्चा करनेका तथा शौक करनेका स्वभाव राजा के समान ही रहता इन शौकोमे पैसा पुरता नहीं तो पोते खेती बाडी बेच देते व कैसे तो भी अपने शौक पुरे करते । ऐसे राजा के पोते को ४-५ पुत्र होते । ये राजाके पड्पोते है,यह राजा की पीढी अनुसार चौथी पिढी है । अब राजाके पोतोके पास राजाके पड्पोतोको देने के लिये कुछ धन बचाही नही रहता उलटा राजशाही शोक मे कर्जा हुआ रहता इसप्रकार राजाको चौथी पिढी राजासे रंक बन जाती । राजा की सभी राणीयाँ जात पात कुल की रहती तो राजाके पड्पोते धनहिन होने कारण उन्हे कोई जात पात कुल की सभी स्त्रीयाँ मिलती नही । स्वभाव तो राजा के समान अनेक राणीयो के साथ संसार करनेका बन जाता । जब इनके ऐसे शौक पुरे नही होते तो राजा की चौथी पीढी अपनी जात पात व कुल छोड्कर वेश्यायोका संग करके बिघड जाती । इसप्रकार जब जीव ब्रम्ह था । तब जीव का पारब्रम्ह का स्वभाव था । परन्तु इस जीवका पारब्रम्ह से बिछ्ड के माया मे आनेसे माया के पाँच विषय वासना के प्रकृती का स्वभाव बन जाता । ऐसा स्वभाव बननेसे जीव की ब्रम्ह जात ब्रम्ह पात तथा ब्रम्ह कुल यह जीव भुल जाता व मायाके विषयोमे लगकर मायावी बन जाती व काल के दु:ख भोगता । इसप्रकार पारब्रम्ह पिढीसे उतरकर माया पिढी मे आता व मन के,तन के दु:ख भोगता ।।।१२।।

ब्रम्ह सुन्न प्रब्रम्ह के ।। संगम बण्यो तिण बार ।।
सिव पुत्र सो ऊपजे ।। म्हा सुन्न धिवलार ।।
महासून्न धी लार ।। अबे संजम यांहाँ होई ।।
चेतन सक्त बिचार ।। पूत पुत्री अे दोई ।।
सुखराम क्हे अब सक्त के ।। चेतन लागो लार ।।
ब्रम्ह सुन्न पर ब्रम्ह के ।। संगम बण्यो तिण बार ।।१३।।

होणकाल पारब्रम्ह पदमें पारब्रम्ह तथा ब्रम्हशुन्य ने संसार किया तब उनसे शिवब्रम्ह पुत्र हुआ व महाशुन्य पुत्री हुई आगे शिवब्रम्ह व महाशुन्य ने संसार किया तब चिदानंद व शक्ती जनमें । ।।१३।।

चिदानंद अर सक्त के ।। बण्यो भोग ब्योहार ।।
महतत्त अंछया दोय अे ।। बाळक उपज्या लार ।।
बाळक उपज्या लार ।। अबे याँरे संग होई ।।
मंछ्या पुत्री बीर ।। अहुँ बेटो कहुँ तोई ।।
सुखराम क्हे अंकार के ।। मँछ्या सूं हुवो प्यार ।।

चिदानंद अर सक्त के || बण्यो भोग ब्योहार ||१४||

इन चिदानन्द व शक्ती ने भोग व्यवहार किया उनसे महतत्व यह पुत्र व इच्छा यह पुत्री ऐसे दो बालक जनमे । अब महतत्व व इच्छा का संग हुआ,उनसे मंछा यह पुत्री व अहंकार यह पुत्र उत्पन्न हुआ ।।।१४।।

कवत ||

अहंकार संग होय || नार मंछया क्हुं तोई ||
तासूं उत्पत जीव || तत ब्रम्हंड पण होई ||
इनकी सो ओलाद || दोय मारग होय चाली ||
तब चिदानंद सुण सक्त || आण रीतां सब पाली ||
दोनू चालो अेक्कठा || न्यारी दिसा मत ताण ||
दोनू फूटाँ कुछ नही || कही चिदानंद आण ||१५||

|| कवित्त ||

आगे अहंकार पुरुष के साथ मंछ्या नारी का भोग व्यवहार हुआ । इस भोग व्यवहारसे जीव व आकाश वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी ये पाँच तत्व उत्पन्न हुये । इन चिदानंद व शक्ती से जनमे हुये अहंकार व मंछा ये दो वंशज आगे दो मार्ग से होकर चलने लगे तब चिदानंद और शक्तीने मंछा और अहंकार को अलग अलग मार्गोसे चलनेकी रितीको मना की व दोनोको इकठ्ठा चलनेको कहाँ । अलग अलग मत चलो । अलग अलग दिशाओमें मत ताणो तुम दोनो के फुट जानसे कुछ होगा नही ऐसा चिदानंद ने अहंकार व मंछा को जोर देकर कहाँ ।।।१५।।

कुंडल्यो ||

अहंकार सूं ऊपना || पांच तत्त प्रवाण ||
ब्रहमंड पवन तेज जळ || पुत्री मही बखाण ||
पुत्री मही बखाण || भोग याँरा अब होई ||
चोरासी लख पूत || जीव जाया कहुँ तोई ||
सुखराम कहे इस जीव की || यूं आ उत्पत जाण ||
अहंकार सूं ऊपना || पांच तत्त प्रवाण ||१६||

|| कुण्डलियाँ ||

इस अहंकार व मंछ्याके भोगसे पाँच तत्व ऐसे पाँच बालक उपजे इन पाँच बालकोमें आकाश , वायु,अग्नी,जल ये चार पुत्र व पृथ्वी यह एक पुत्री निपजी अब इनका भोग होने लगा इनके संसारसे८४लाख जातीके जीव जनमें । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने शिष्य विठ्ठलराव को कहॉ की जीव की इस तरह से होणकाल पारब्रम्ह से उत्पती हुई यह समझो । ।।१६।।

कवत ||

जीव पुर्ष के संग || नार ममता केहुँ कोई ||

याँ जायो मन पूत ।। सूर्त कन्या पण होई ।।
यां रे बण्यो संजोग ।। भोग करणे कुं लागा ।।
चोसट जाया पूत ।। घड़ी म्हुरत बंध बागा ।।
सुखराम क्हे यूं ब्रम्ह सूं ।। बंण्यो जीव सिव आय ।।
चोरांसी के बीच मे ।। फिर फिर गोता खाय ।।१७।।

।। कवित्त ।।

इस जीव पुरुषके संग ममता यह पत्नी हुई । इनके मन पुत्र व सुरत कन्या उत्पन्न हुई । अब सुरत व मन आगे भोग करने लगे । इन सुरत व मन के भोगोसे घटका,मुहुर्त जनमे । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य विठ्ठलराव को कहाँ की,जैसे राजासे रंक बनकर दु:ख भोग रहा वैसे ही ब्रम्ह से जीव बनकर ८४ लक्ष्य योनीके बार बार गोते खा रहा ।।।१७।।

कुंडल्या ।।

हे सिष अब तोकुं कहूं ।। तो मे तेरो ग्यान ।।
खंड सोई ब्रहमंड में ।। सोई पिंड मे जाण ।।
सोई पिंड मे जाण ।। तिरथ अपने घट कीजे ।।
खंड़ पिंड़ ब्रहमंड ।। सोझ तीनूं याँ हां लीजे ।।
बिंद ज्हाँ सुँ ऊतरे ।। ताँ ही ब्रम्ह को ध्यान ।।
हे सिष अब तो कुं कहूँ ।। तो मे तेरो ग्यान ।।१८।।

।। कुण्डलियाँ ।।

जो जो खंड में हैं तथा ब्रम्हांड में हैं वह सभी हर किसी के पिंड में है इसलिये तेरे भी पिंड मे जैसा खंड ब्रम्हंड है । वैसे ही ब्रम्हांड व खंड मे पारब्रम्ह जीव से मायावी जीव कैसे बना यह तु तेरे घटमें ही देख ले । खंड ब्रम्हंड व तेरा पिंड ये तीनो तेरे पिंड में ही खोज ले । इसप्रकार यह सब ज्ञान जिसकी समज तुम्हे चाहिये वह तुमारे पिंड्मे ही हैं । यह मैं तुम्हे बताता हुँ । ।।१८।।

दसवे द्वार प्रब्रम्ह हे ।। मेहेल त्रगुटी सीव ।।
त्रगुटी तज पिंड आवियो ।। तबे कहायो जीव ।।
तबे कवायो जीव ।। स्थूळ काया इण धारी ।।
सुख दु:ख देही लार ।। अनंत बिप्ता सब लारी ।।
सुखराम क्हे सिष सांभळो ।। यूं नित पेदा जीव ।।
दसवें द्वार प्रब्रम्ह हे ।। मेहेल त्रुगुटी सीव ।।१९।।

पिंड के दसवेद्वारमें यह पारब्रम्ह स्वभावके जीव का आदि रहनेका स्थान है । जीव दसवेद्वार छोड्कर त्रिगुटी महल मे आता तब जीव का पारब्रम्ह स्वभाव बदलकर जीवब्रम्ह स्वभाव ऐसे स्वभाव बनता । ऐसे स्वभाव को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने इस

साखीमे शिव स्वभाव का जीव बनता यह बताया है । त्रिगुटी याने भृगुटी तजकर माँ के गर्भ मे आकर स्थुल देह धारण करता व उसका स्थुल देह पाँचो आत्माके विकारी सुख लेने के लिये जवान होता तब उस जीव को जीव स्वभाव आया ऐसा समझो । माँ के गर्भ मे आता बालक बनता व जवान बनता तब जीव बनता । इसप्रकार जीव ने पारब्रम्ह के सुक्ष्म कायासे स्थुल मायावी काया धारण की ऐसी स्थुल काया धारण करणे के कारण जीव के पिछे सुख व दु:ख तथा अनेक विपत्तीयाँ लग गयी । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य विठ्ठलराव को कहते है की हे शिष्य सुनो इसप्रकार पारब्रम्ह जीव स्वभाव से निकलकर मायावी जीव स्वभाव मे जीव नित्य पैदा होने लगे व अनेक दु:ख व विपत्तीयोमें पडने लगे ।।।१९।।

दसवे द्वार ब्रहमंड हे ।। सुणो त्रुगुटी खंड ।।
ज्हाँ लग पवन बेहेत हे ।। ता हाँ लग कहिये पिंड ।।
तहाँ लग कहिये पिंड ।। भेद सारो तुज माही ।।
बिन सतगुरु संसार ।। जीव गत जाणे नाही ।।
सुखराम क्हे सिष सांभळो ।। यूं बन रहयो मंड ।।
ब्रहमंड दसवो द्वार हे ।। त्रगुटी कहिये खंड ।।२०।।

जो ब्रम्हंड तीन ब्रम्ह के १३ लोगोका होणकाल सृष्टी में बना है वही ब्रम्हंड पिंड मे त्रिगुटी से दसवेद्वार तक बना है । जो खंड तीन लोक १४ भवन तथा ४ पुरीयोका होणकाल सृष्टीमे बना है वही खंड पिंड मे त्रिगुटी तक बना है । ऐसे खंड-ब्रम्हंड की रचना श्वास चलनेवाले स्थुल शरीर मे बनाई है ऐसे स्थुल शरीर को पिंड कहते है । और श्वास के बहनेसे चलनेवाला पिंड यह तुम्हारा भी है । इसप्रकार तुम्हारे पिंड मे खंड तथा ब्रम्हंड है । इसप्रकार पारब्रम्ह जीव, पारब्रम्ह पद ब्रम्हंड से निकलकर मायाके खंड पद में आकर मायावी जीव स्वभाव कैसे धारण करता व अनेक दु:ख तथा विपता में कैसे पडता यह ज्ञान का सारा भेद तेरे पासही है । परन्तु जिसप्रकार संसार के लोग ज्ञानी ध्यानी सतगुरु के बिना यह गती जाणते नही । उसीप्रकार तु यह भेद जाणता नही । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य विठ्ठलराव को समझा रहे की ब्रम्हंड व खंड की होणकाल में सृष्टी बनी व जीव अनेक दु:ख तथा विपत्तीयों मे पडा यह समझ ।।।२०।।

अब च्यार खान मे ऊपजे ।। जीव ज्हाँ तहाँ जाय ।।
सुख दु:ख ज्हाँ ताहाँ अेक ही ।। कम नही जाफा माय ।।
कम नही जाफा माय ।। नर्क सरगाँ लग जावे ।।
धरी देहे का दंड ।। बिसन आगे लग पावे ।।
तीन लोक सुखराम के ।। यूं जग बणियो आय ।।
अब च्यार खाण मे ऊपजे ।। जीवं जहाँ तहाँ जाय ।।२१।।

इसप्रकार पारब्रम्ह जीवका मायावी जीव बना व कर्मोके अनुसार जीव अंड्ज,जरायुज,उद्विज, अंकुर ऐसे चार खाणीयोमे जहाँ तहॉ कर्म भोगनेके लिये उपजने लगा । इन चार खाणीयोमें जीवके पिछे सुख दु:ख तथा अनेक विपत्तीयाँ कम जादा प्रमाणमें लग गयी कभी दु:ख व विपत्तीयाँ कम पडी तो जीव स्वर्गमें गया तो कभी दु:ख व विपत्तीयाँ जादा पडी तो जीव नरक में गया । इसप्रकार जीव पाये हुये देहका दंड विष्णु का पद पाकर विष्णु बना तो भी छुटता नही ऐसा यह देह का दंड जो है वह दंड देह के पिछे ही रहता । इसप्रकार माया के मृत्यु,स्वर्ग,तथा पाताल ऐसे तीन लोक जीव सुख के बजाय अनेक दु:ख के कष्ट पडे ऐसे बने है ।।।२१।।

सिष बूजे गुरु देव कूं ।। अगत मुक्त गत मोख ।।
इन को भेद बिचार सो ।। क्हो सुख दु:ख दोख ।।
क्हो सुख दु:ख दोख ।। जीव कूं क्हाँ सुख होई ।।
सो बिध कहिये आण ।। भेद दीजे सब मोई ।।
जीव पणो कंहाँ जायगो ।। कब टळे सब दोख ।।
सिष बूझे गुरु देव कूं ।। अगत मुगत गत मोख ।।२२।।

।। विठ्ठलराव उवाच ।।

शिष्य विठ्ठलराव ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से पुछा की अगती क्या है । गती क्या है । मुक्ती क्या है,तथा मोक्ष क्या है वहाँ हर जगह सुख दु:ख दोष क्या है? इसका ज्ञान से भेद बतावो । तथा जीव को कहाँ पहुँचने पर मांगने पर भी दु:ख नही मिलेगा व न चाहनेपे पर भी अनंत सुख आ आ के पडेंगे वह देश बताओ । इस जीव का दुखमें पड्नेका जीवपणा कहाँ पहुँचनेपर छुटेगा तथा इस जीव के सब दोष क्या करनेसे टलेगे यह सभी विधियोंका भेद मुझे दो ।।।२२।।

हे सिष अगत मुक्त अर गत्त लग ।। सुख दु:ख तीनु जाग ।।
उलट मोख लग पूंचसी ।। जब जासी दु:ख त्याग ।।
जब जासी दु:ख त्याग ।। फेर पाछो नही आवे ।।
पार ब्रम्ह के माँय ।। जीव वो जाय समावे ।।
वाँ सुण सुख की जाग हे ।। ज्हाँ नही जम को लाग ।।
अगत गत्त अर मुक्त लग ।। सुख दु:ख तीनु जाग ।।२३।।

।। सतगुरू सुखरामजी उवाच ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने शिष्य विठ्ठलराव को कहॉ की अगती याने मलमुत्र का मनुष्य देह छोड्कर बाकी सभी ८४ लक्ष योनीयाँ,भुत प्रेतके देह,नरक के देह,जमदुतो के पिंड , राक्षसोकी योनीयाँ है । गती याने देवताओ की देह की प्राप्ती है व मुक्ती याने विष्णु के लोक मे जाकर महाप्रलय तक चार मुक्तीया पाना यह है । ऐसे अगती,गती व मुक्ती के तीनो पदोंमे सुख दु:ख पिछे के पिछे लगे रहते है । जैसे जीव पारब्रम्ह से माया

में आया वैसाही जीव माया से उलटकर पारब्रम्ह के परेके सतस्वरुप में पहुँचेगा तब जीव का मोक्ष होगा व जीवके पिछेके सभी दु:ख व विपत्तीयाँ छुट जायेगी इसप्रकार जीव सतस्वरुप पारब्रम्ह मे पहुँच ने के बाद मायाके तीन लोकोमे फिर कभी नही आता इस कारण जीव के पिछे लगे हुये सभी दु:ख व विपत्तीयाँ छुट जाती । ऐसा मायासे उलटकर पारब्रम्ह के परेके सतस्वरुपमें पहुँचा हुआ जीव सदाके लिये सतस्वरुपमें ही रहता ऐसे सतस्वरुप पारब्रम्ह मे अनंत सुखोकी जगह है वहाँ यह जीव महासुख भोगता उस सतस्वरुप पारब्रम्ह के सुख के पद मे तीन लोक के पद के सुख मे जैसा जालीम काल है वह काल वहाँ नही है । उस सुखके पद में काल पहुँचही नही पाता ऐसा वह निर्दोष सुख का पद है । बाकी सभी अगती,गती व मुक्ती तक के पद मे माया व काल के सुख दु:ख है ।।।२३।।

पार ब्रम्ह मे हंस मिले ।। जे जल्मे नही कोय ।।
यूं सब क्हे गुरुदेवजी ।। मेरे सांसो होय ।।
मेरे सांसो होय ।। आद ओ क्हाँ सुं आयो ।।
वोइज ब्रम्ह कन ओर ।। ग्यान मे ज्हाँ तहाँ गायो ।।
पेली कहो किम आवियो ।। सो बिध कहिये मोय ।।
पार ब्रम्ह में हंस मिले ।। जे जन्मे नही कोय ।।२४।।

।। विठ्ठलराव उवाच ।।

शिष्य विठ्ठलरावने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजसे पुछा की पारब्रम्ह सतस्वरुपमे हंस मिलते है वे फिर मायाके ३ लोकमें जनमते नहीं ऐसे सभी साधु संत कहते है,परंतु गुरुदेवजी मुझे एक शंका आ रही है । शंका यह है की पारब्रम्ह सतस्वरुपमें मिलनेके बाद यह हंस मायाके ३ लोकोमें जनमता नही तो आदि मे मायाके तीन लोगोमे वह कहॉसे आया । ज्ञानमें जहाँ तहाँ गाया वही पारब्रम्ह हैं की आप कहते हो वह दुसरा पारब्रम्ह है । आप कहते हो वह पारब्रम्ह ज्ञानमें जहॉ तहाँ गाया है वही पारब्रम्ह है तो पहले उस पारब्रम्हसे जीव मायामे कैसे आया यह सारी विधी मुझे बताओ । आप कहते हो की पारब्रम्ह मे हंस मिलने पे पुन:माया मे जन्म नही लेता तो यह जीव वहाँ से सर्व प्रथम कैसे आया? ।।२४।।

हे सिष पार ब्रम्ह लग जीव की ।। आदू उत्पत होय ।।
पार ब्रम्ह ज्यां आनंद हे ।। उपजे खपे नही कोय ।।
उपज खपे नही कोय ।। सदा थिर रहे अे दोई ।।
पार ब्रम्ह अर आनंद को ।। भेद यांरो क्हुँ तोई ।।
आनंद मिल्यो नही बावड़े ।। हे सिष क्हुँ म्हे तोय ।।
पार ब्रम्ह लग जीव की ।। आदू उतपत होय ।।२५।।

।। सतगुरु सुखरामजी उवाच ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने शिष्य विठ्ठलराव को कहाँ की हे शिष्य पारब्रम्ह जीव व पारब्रम्ह आनंद ऐसे दो पद है पारब्रम्ह जीव से जीव की आदिसे उत्पत्ती है व आज भी उत्पत्ती है । पारब्रम्ह आनंद मे जीव की आदि से भी उत्पती नही थी व आज भी उत्पत्ती खपत नही है । ये दोनो पद आदिसे है । तथा स्थिर है अमर है । पारब्रम्ह जीव व पारब्रम्ह आनन्द पद के सुखो का भेद न्यारा न्यारा है । पारब्रम्ह जीव मे सुख के बाद दु:ख है व अनेक विपत्तीयाँ है तथा पारब्रम्ह आनंद पद में सुख के बाद सुख है व दु:ख तथा विपत्तीयाँ नेक मात्र भी नही है, इसकारण पारब्रम्ह आनंद मे पहुँच हुआ जीव पारब्रम्ह जीव के समान मायामे निचे कभी नही आता ।।।२५।।

पार ब्रम्ह कोई लोक हे ।। ईसो सीव को होय ।।
चिदानंद कोई लोक हे ।। जिसो ई जीव को जोय ।।
जिसो जीव को जोय ।। च्यार अे लोक कहावे ।।
तां आगे आनंद ।। वार कोई पार नही पावे ।।
सुखराम क्हे सिष सांभळो ।। आ गत ज्यूं वा जोय ।।
पार ब्रम्ह को लोक हे ।। इसोई सीव को होय ।।२६।।

जैसे पारब्रम्ह मे उत्पत्ती है । वैसेही शिवब्रम्ह,चिदानंद ब्रम्ह,तथा जीवब्रम्हमें उत्पत्ती है । इसतरह पारब्रम्ह,शिवब्रम्ह,चिदानंद ब्रम्ह तथा जीवब्रम्ह ये चार जीवोकी उत्पत्ती व खपतवाले लोक है । जीवब्रम्ह,चिदानंद ब्रम्ह,शिवब्रम्ह,तथा पारब्रम्हके इन चारो लोगो के आगे आनन्दका लोक है । उस आनन्द में उत्पत्ती व खपत नही है तथा वहाँ के आनंद का वार पार किसीको नही आता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य विठ्ठलराव को कह रहे है की इसप्रकार जीवब्रम्ह,चिदानंदब्रम्ह,शिवब्रम्ह तथा पारब्रम्ह मे उत्पत्ती व खपत है व आनंद ब्रम्ह में उत्पत्ती खपत नही है । इसप्रकार ये जीवब्रम्ह,चिदानंदब्रम्ह, शिवब्रम्ह तथा पारब्रम्ह से आनंद ब्रम्ह की गती न्यारी है ।।।२६।।

जीव ब्रम्ह को लोक हे ।। ज्हाँ लग सुख दु:ख लार ।।
चिदानंद के लोक मे ।। हे दु:ख अेक अपार ।।
हे दु:ख अेक अपार ।। सीव कोई ने:चळ नाही ।।
पार ब्रम्ह को लोक ।। तहाँ लग ओ दु:ख माही ।।
परा आनंद मे मिल गया ।। जे नही जनमण हार ।
जीव ब्रम्ह को लोक हे । ज्हाँ लग सुख दु:ख लार ।।२७।।

जीवब्रम्हके लोक में जीवोके पिछे मायाके सुख व काल के दु:ख तथा विपत्तीयाँ पिछे लगेकी लगी ही रहती जिवब्रम्ह यह अनेक दु:खो का लोक है चिदानंदका लोक,शिवब्रम्ह का लोक, तथा पारब्रम्ह का लोक ऐसे ये तीनो लोक जीवोके लिये निश्चल रहने के नही है । इन तीनो लोकोमे एक पार नही आता ऐसा जीवब्रम्ह मे जनमनेका भारी दु:ख है ।

यह भारी दु:ख आनंद लोकमें मिल जानेके बाद नही रहता । आनंद लोकमे जाने के बाद जीवब्रम्ह मे आके जनमनेकी रित ही नही रहती । इसप्रकार आनंदलोक छोड्के जीवब्रम्ह चिदानंदब्रम्ह,शिवब्रम्ह,तथा पारब्रम्ह में उत्पत्ती व खपत दु:ख है । व जीवब्रम्ह में उत्पत्ती खपत के दु:खोके अलावा ऊच निच कर्म भोगनेके अपार दु:ख है । ये कोई भी दु:ख आनंद लोग मे नही है । उलटा अपार महासुखोके पिछे महासुख भोगनेका वह लोक है ।।।२७।।

च्यार लोक तो थिर सदा ।। अेक लोक मिट जाय ।।
इण अेकेका तीन अे ।। चवदे भवन कवाय ।।
चवदे भवन कुवाय ।। जीव का अे सब होई ।।
वां तीनाँ के माय ।। लोक तेरे क्हुं तोई ।।
आनंद लोक सुखराम के ।। ज्हाँ लोक नही माय ।
च्यार लोक तो थिर सदा । अेक लोक मिट जाय ।।२८।।

जीवब्रम्ह,चिदानंदब्रम्ह,शिवब्रम्ह,पारब्रम्ह तथा आनंदब्रम्ह इन पाँच लोकोमें से चिदानंद ब्रम्ह, शिवब्रम्ह,पारब्रम्ह तथा आनंदब्रम्ह ऐसे चार लोक स्थिर है । निश्चल है । ये चार लोक जैसे स्थिर है वैसे जीवब्रम्हका लोक स्थिर नही हैं । यह जीव ब्रम्ह का लोक सदा मीटते रहता । ये जीव ब्रम्हाके ३लोक मृत्युलोक,पाताललोक,स्वर्गलोक,तथा भुर,भुवर,स्वर,महर,जन,तप,सत, तल,अतल,वितल,सुतल,सतातल,रसातल,महातल ऐसे १४ भवन है । इसीप्रकार चिदानंद ब्रम्ह ,शिवब्रम्ह,पारब्रम्ह इन तीनो ब्रम्ह में १३लोक है । महामाया, प्रकृती,ज्योती,अजर,आनंद,वजर, इखर,अनहद,निरंजन,निराकार,शिवब्रम्ह, महाशुन्य पारब्रम्ह है । परंन्तु आनंदलोकमे जीव ब्रम्हके ३ लोक १४ भवन व चिदानंद ब्रम्ह,शिवब्रम्ह, पारब्रम्ह,के १३ लोगोके समान न्यारे न्यारे लोक नही है ।।।२८।।

तीन ब्रम्ह के लोक सूं ।। अनंद लोक नही जाय ।।
जीब ब्रम्ह के लोक सूं ।। उलट मिले तां माय ।।
उलट मिले तां मांय ।। ब्होर जन्मे अे नाही ।।
तीन ब्रम्ह का लोक ।। तहाँ लग आवे जाही ।।
इण कारण सुखराम के ।। हंस आवे जग माय ।।
तीन ब्रम्ह के लोक सूं ।। अनंद लोक नही जाय ।।२९।।

पारब्रम्ह,शिवब्रम्ह,तथा चिदानंदब्रम्ह इन तीन ब्रम्ह के लोक से आनंद लोक नही जाते आता । आनंदलोक जीव ब्रम्ह के लोग से ही जाते आता । जीव ब्रम्ह के भी स्वर्ग,पाताल तथा १४ भवन व चार पुरीयोसे भी आनंद लोक मे कभी नही जाते आता । जीवब्रम्ह के सिर्फ मृत्युलोक से ही आनंद लोक में जाते आता । जीवब्रम्ह के मृत्युलोक के सभी ८४ लक्ष प्रकारकी योनीयो से भी आनंद लोक नही जाते आता । इन ८४ लक्ष प्रकार के

योनीयो मे से सिर्फ मनुष्य देह से ही जाते आता ऐसा जीवब्रम्ह के मृत्युलोक से हंस घट में ही उलटकर बंकनालके रास्तेसे त्रिगुटी होकर चिदानंद ब्रम्ह जाता,चिदानंदके बाद शिवब्रम्हमें जाता, शिवब्रम्ह के बाद पारब्रम्ह में जाता व पारब्रम्ह के बाद आनंद ब्रम्ह में जाकर मिल जाता । ऐसा आनंद ब्रम्हमे मिला हुआ हंस फिर जीव ब्रम्ह के मायाके लोकमें कभी नही आता परंतु पारब्रम्ह,शिवब्रम्ह तथा चिदानंद ब्रम्हसे जीव,जीवब्रम्हमें आता व फिर पारब्रम्ह,शिवब्रम्ह, चिदानंदब्रम्ह में जाता फिर जीवब्रम्ह मैं आता ऐसा पारब्रम्ह,शिवब्रम्ह,चिदानंदब्रम्ह के तीन लोकोसे जीवब्रम्ह में जनमकर सुख के साथ,दु:ख व अनेक विपत्तीयाँ भोगने के लिये आते–जाते रहता । जब तक जीव आनंद लोक नही जाता तब तक जीवब्रम्ह के लोक मे आकर दु:ख भोगनेकी विधी आनंद लोक छोड्के कोई भी लोक पाया तो भी मिटती नही । व इस आनंदलोक को पारब्रम्ह,शिवब्रम्ह तथा चिदानंदके लोकोसे जाते नही आता,सिर्फ जीवब्रम्हके लोकसे ही जाते आता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य विठ्ठलराव को बता रहे है ।।।२९।।

विठ्ठलराव अब आ कहे ।। उलट मिले किम जाय ।।
हंस आवण की रीत तो ।। सब ही कही बजाय ।।
सब ही कही बजाय ।। दया कर अब आ कहिये ।।
अमर लोक किम जाय । सब्द सुख केसे लहिये ।
सो बिध भिन्न भिन्न तार कर । भेद गुंझ कहो आय ।
विठ्ठलराव अब आ कही । उलट मिले किम जाय ।।३०।।

।। विठ्ठलराव उवाच ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से विठ्ठलराव बोला की जीव उलटकर आनंद लोक में कैसे जाऐगा वह मुझे बताओ । आपने पारब्रम्ह से मायामें हंस के आने की रीत तो भिन्न भिन्न प्रकार से बजाबजा के सबही समजाकर बताई । जैसे आपने पारब्रम्ह से माया मे हंस के आने की रित भिन्न भिन्न प्रकार से बजा बजा के समजा के बताई वैसेही अमर लोक मे जाने की रीत बजा बजाकर समजा के बताने की दया मुझपे करो । ऐसे अमर देश के सतशब्द के सुख लेने के लिये कैसे पहुँचे वे सभी विधीयाँ भिन्न भिन्न प्रकार से तार तार करके याने मेरे समजमे आवे ऐसे खोल खोलके मुझे बताओ । जीवब्रम्ह से अमरलोक जाने का गुह्य भेद मुझे बताओ ऐसा विठ्ठलराव आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से कहता है ।।।३०।।

सुखराम दास जन बोलीया ।। सुण ज्यो बचन हमार ।।
भ्रुगुटी सें बिंद ऊतर्‍यो ।। पड़यो ग्रभ तिण बार ।।
पड़यो गरभ तिण बार ।। प्रेम वो उलटो चहिये ।।
संख नाळ कूं त्याग ।। बंक पिछम दिस गहिये ।।

साझन कूंची बाहेरो ।। चडे सब्द संग लार ।।
सुखराम दास जन बोलीया ।। सुणियो बचन हमार ।।३१।।

।। सतगुरु सुखरामजी उवाच ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने शिष्य विठ्ठलराव से कहाँ की मेरे ज्ञान के वचन सुनो मनुष्यका बिंद भृगुटी से संखनालसे उतरकर गर्भ मे पडता तब हंस को जो प्रेम आता वैसाही प्रेम उलटकर पश्चिम दिशा से बंकनाल के रास्ते से त्रिगृटी मे चढने के लिये लगाता तब ही हंस माया के लोक से उलटकर अमरलोक जाता । इस प्रेमसे वेद की कोई भी साधानाके बिना तथा जोगारंभ के बिना सतशब्द के संग तार लगकर हंस गढपे दसवेद्वार पहुँच जाता ।।।३१।।

कवत ।।

पडे. ग्रभ मे आय ।। प्रेम संग जो वो आवे ।।
फिर दूणो बरसे हेत ।। तब उलटो होय जावे ।।
जिसी भोग की चाय ।। इसी साहेब दिस जागे ।।
जिसो नार सूं नेह ।। इसो साहेब दिस लागे ।।
सुखराम क्हे भग पेम हुवे ।। अंध मुंध तज लाज ।।
ईसो पेम सो चाहिये ।। राम मिलण के काज ।।३२।।

।। कवित्त ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य विठ्ठलराव को बता रहे है की जिस समय हंस गर्भ में पडा उस समय जीतने प्रेम से हंस भृगुटी से यहाँ गर्भ मे आया था उससे दुगुना प्रेम आयेगा तब उलटकर जाना होता । जैसे वासना के भोग की चाहना होने पे पुरुष को नारी के भग से प्रेम आता तब उस समय लाज शरम छोडकर पुरुष अंधा धुंद अंधा हो जाता वैसे ही प्रेम शिष्य को वैराग्यके चाहना से साहेब याने सतगुरु के सतशब्द से प्रेम आता व ऐसा प्रेम आनेसे शिष्य जगत की लाज शरम छोडकर अंधा धुंद अंधा हो जाता तब शिष्यका हंस पश्चिम के मार्ग से उलटकर गढपर चढकर रामजी से मिल पाता ।।।३२।।

कुंडल्या ।।

प्रेम पेम मे फेर हे ।। सुणो पेम को न्याव ।।
च्यार पेम सो पेम व्हे ।। जब लग झूटो चाव ।।
जब लग झूटो चाव ।। पांचवो पेम कहावे ।।
वा गत तब घट होय ।। उलट हंसो तब जावे ।।
आया सोही बिध चाहिये ।। दूजी झूट उपाय ।।
पेम पेम मे फेर हे ।। सुणो पेम को न्याव ।।३३।।

।। कुण्डलियाँ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को कह रहे की प्रेम प्रेम मे बहुत फरक है । मैं अलग-अलग प्रेम बताता हुँ । कौनसे प्रेम की चाहना झुठी है तथा कौन से प्रेम की

चाहना सच्ची है इसका मै तुझे न्याय करके बताता हुँ । नारी के भग के बारे मे सुनना,भग की बास लेना,भग को आँखो से देखना,भग को जीव से चाखना ये चारो प्रेम झूठे है । पाचवा प्रेम जिसमे भग रस की रीत बनती वही सच्चा प्रेम है । इस भग रस के रीत से ही हंस भृगुटी मे उतरकर गर्भ में पड्ता है इसी प्रकार सतगुरु के सतशब्द का ज्ञान सुनने का प्रेम सतगुरु के सतशब्द को हंस के आँखो से देखनेका प्रेम सतशब्द का जगत मे सुवास फैला है ऐसे सुवास से प्रेम जीभ से चाखना ये सभी प्रेम झूठे है । इस प्रेम से गढपे बंकनाल के रास्ते से उलट चढने की गती नही बनती । उसके लिये पांचवा प्रेम चाहिए भग रस के रित में आते वक्त जो प्रेम आया था वैसे ही शुध्द प्रेम की गती हंस के निजमन मे सतशब्द से आती है,तबही हंस उलटकर बंकनाल के रास्ते से दसवेद्वार पहुँचता । अन्य चारो प्रेम के उपाय हंस को उलटकर गढपे चढ जाने के लिये बेकाम है झूठे है ।।।३३।।

चीज देख कर रीजियो ।। दिन मे सो सो बार ।।
तो पण राम न ऊतऱ्यो ।। सो तम करो बिचार ।।
सो तुम करो बिचार ।। जीभ चाख्यां नही आयो ।।
सुण सुण फूल्यो ब्होत ।। काम को मरम न पायो ।।
बासा सुं नही ऊतऱ्यो ।। नही ग्रभ के प्यार ।।
चीज देख कर फुलियो ।। दिन मे सो सो बार ।।३४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य विठ्ठलरावको कह रहे की चिज दिनभर मे सौ सौ बार देखकर रीज गये तो भी बिंदु गर्भ मे नही उतरता । इसका विठ्ठलराव तुम बिचार करो । इसी प्रकार भगको जीभसे चाखनेसे भग संयोगके संबधीत बाते सुणणे से तथा भग की बास लेने से इन किसीसे भी बिंदु भृगुटीसे उतरता नही इसकारण जीव को काम का मर्म समझता नही । काम का मर्म समझता नही इसलिए जीवको गर्भमें आनेका प्रेम आता नही । इसकारण जीव भृगुटी से उतरकर गर्भ में आता नही । इसीप्रकार सतशब्द का ज्ञान दिन मे सौ सौ बार सुणा सतशब्द को जीव के ज्ञान आँखो से सौ सौ बार देखा सतशब्द के सुख सुवास जगत में फेला वह दिन मे सौ सौ बार लिया तो भी राम का मर्म समझता नही । इसलिए हंस को राम से उपर गढपे चढनेवाला प्रेम आता नही इसकारण घट मे राम प्रगट होता नही ।।।३४।।

अेक भग रस रीत की ।। सुणियाँ ई जागे काम ।।
मेहेरी बदन बिचार घटा ।। चंचल व्हे सब धाम ।।
चंचल व्हे सब धाम ।। मथन से भ्रुगुटी छाड़े ।।
ओ सुण ज्यो सुध पेम ।। सिष सत्तगुरु मे गाडे ।।
विठलराव सुखराम क्हे ।। उलट चडे यूं राम ।।

अेक भग रस रीत की || सुणियांई जागे काम ||३५||

भग रस की रीति सुनने से मेहरी का बदन तथा भग निहार ने से मन मे भग रस का विचार करने से जीव का शरीर नख से लेकर चख तक कामकला के लिये जागृत होता है । व इन्द्रीय चैतन्य होता है । इन्द्रीय चैतन्य होने पे भगरस की मैथुन की रीत की तो ही बिन्दु भृगुटी को छोड्ता है । जब बिंदु भृगुटी को छोड्ता है,तब जो प्रेम आता है वह सच्चा शुध्द प्रेम है । इसप्रकार सतशब्द के सुख की रीति सुनने से निजमन मे सतशब्द के सुखोका विचार करने से तथा सतगुरु मे सतशब्द से पाऐ हुये सुखोके कारण सतगुरु के फुले हुए बदन को देखकर हंस के मन में सतशब्द के सुख पाने की चाहना होती । ऐसे संत का हंस संतका निजमन तथा संत का घट नख से चखतक सतशब्द पाने के लिये जागृत हो जाता,चेतन्य हो जाता ऐसा शिष्य का हंस चेतन होने पर सतगुरु ने बताई हुई आते जाते सास मे राम स्मरण करने की रिती को तो सतशब्द हंस के घट मे प्रगट होता व हंस कंठकमल छोड्कर उलटकर पश्चिम के रास्ते से दसवेद्वार रामजी के अखण्डीत ध्वनी में चढ जाता । जैसे काम के रीत मे जीव भृगुटी छोड्कर उतरके स्त्री के गर्भ मे आता वैसे ही राम के रीत से हंस कंठकमल छोड्कर बंकनाल से चढकर रामजी के अखंण्डीत ध्वनी में चढ जाता । भृगुटी छोढते वक्त जीव को प्रेम कैसे आता यह कैसा समझे? जीव पिता के भृगुटी में रहता । उसे बिंदु देह रहता । उस जीव को निचे उतरनेका प्रेम होता तब जीव जीस नर के घट में रहता उसकी भृगुटी चेतन होकर चंचल होती यह चेतन होकर चंचल हुए नर की भृगुटी पुरे नर के देह को काम के लिये जागृत करती । व जहाँ जीव को उतरके जाना है ऐसे नारी के गर्भ के लिये नर की काम वासना चेतन होती काम वासना से भगरस की नर नारी मे रीत बनती व जीव भृगुटी से उतरकर गर्भ में आता यह भगरस की रीत करने पे नारी के उदर मे बिंदु उतरता उस वक्त जीव को जो प्रेम आता वह ब्रम्ह से मायामें उतरनेका शुध्द प्रेम है । यह प्रेम कौनसा हैं यह जीव पुरुष से बिंदु उतरता उन सभी को समझता यही प्रेम उसी पुरुष को जवान होने के पहल कभी नही आता ||३५||

विठलराव अब केत हे || ओ प्रसंग सत्त होय ||
यंहाँ मेहेरी भग मथन हे || सो जाणे हे सब कोय ||
सो जाणे सब कोय || भेद ऊलटण को दिजे ||
कोण रीत लिंग भग || मथन केसी बिध कीजे ||
तार तार बिध छाण के || कहो तीन बिध मोय ||
विठलराव अब क्हेत हे || ओ प्रसंग सत्त होय ||३६||

विठ्ठलराव बोला,कि,यह आपने जो दृष्टान्त बताया,वह सत्य है । यहाँ सभी ही जानते है । परन्तु यह शब्द उलटने का भेद,मुझे दिजीए । इस उलटने में लिंग कौन सा? और भग

कौन तथा मैथून किस रीती से करे? इसकी सभी विधी,तार–तार करके,छानकर,ये तीनों विधी मुझे बताईये ? ।। ३६ ।।

बंक नाळ सो नार हे ।। रस्ना सो भग होय ।।
मंमकार सो पेम हे ।। रंरकार लिंग जोय ।।
रंरकार लिंग जोय ।। रस ओ तां माही ।।
सोहं कहिये बिंद ।। धसे अजपे संग जाही ।।
सुखराम क्हे धस पेट मे ।। ग्रभ बंधे कहुं तोय ।।
बंक नाळ सो नार हे ।। रसना सो भग होय ।।३७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने शिष्य विठ्ठलराव को बताया की जैसे विकार वासना के लिये यहाँ स्थुल देह की स्त्री है । तो वैराग्य विज्ञानके लिये बंकनाल यह स्त्री है । इस स्त्रीको जैसा भग है । वैसा बंकनाल स्त्री को रसना यह भग है । यहाँ नर को लिंग है तो वैराग्य विज्ञान के लिये ररंकार यह लिंग है,यहाँ जीव को गर्भ में उतरते वक्त नर को नारी से प्रेम रहता तो जीव को चढते वक्त ममकार से प्रेम रहता जैसे यहाँ बिंदु व बिंदु के रस रहता वैसे वैराग्य विज्ञान मे सोहम यह बिंदु रहता व ओंअम यह रस रहता यहॉ नारी के पेट में गर्भ कमल मे बिंदु,बिंदु रसके साथ विशेष रसके द्वारा जाता इसप्रकार वैराग्य विज्ञान मे सोंहम यह बिंदु ओंअम बिंदु रसके साथ अजप्पा के विशेष रस द्वारा बंकनाल मे धँसता । जैसे बिन्दुका नारी के पेट मे जाने के बाद नारी के रज के साथ गर्भ बंधता उसीप्रकार हंस का सतशब्द के साथ दसवेद्वार मे सतस्वरुपी देह बनता ।।।३७।।

अेक पोर मे जाग कर ।। चेतन व्हे तन माय ।।
जे मथन ओ कीजिये ।। पेम धसे उर आय ।।
पेम धसे उर आय ।। उलटता बार न लागे ।।
नख चख नाड़ी रोम ।। नांव धुन सब में जागे ।।
सुखराम क्हे गुरु मेहर रे ।। ज्यूं रूतवंती भाय ।।
अेक पोर मे जाग कर ।। चेतन व्हे तन माय ।।३८।।

जैसे नर को नारीसे प्रेम होता वह नर रातको एक प्रहर जागकर अपने शरीर मे काम चेतन करता व वह नारीके साध मैथुन करके गर्भ बांधता उसीप्रकार का शुध्द प्रेम हंसके उरमे आया तो हंसको बंकनाल के रास्ते से उलटते देर नही लगती ऐसे हंस बंकनाल के रास्ते से उलटकर दसवेद्वार पहुँचता तब हस घट के में रोम रोम मे नाडी नाडी मे नख से लेकर चक्षुतक निजमन की अखण्डीत याने न बंद होनेवाली ध्वनी जागृत होती । जैसे रुतवंती स्त्री को गर्भ ठहराने की चाहना होती तब रुतवंती स्त्री नर की चाहणा करती व नर से संजोग करके गर्भ ठहरा लेती उसीप्रकार शिष्यको उलटकर दसवेद्वार जाने की प्रिती होती तब शिष्य सतगुरुसे प्रिती करता ऐसी प्रिती आने पर सतगुरु शिष्यके हंसके

घटमें मेहेर करता ऐसी मेहेर होनेपर शिष्यका हंस दसवेद्वार गीगण पे अखंण्डीत ध्वनीमे सतस्वरुपमे पहुँचता ।।।३८।।

कागल्यो लिंग असल हे ।। रसणा सो भग होय ।।
ओंऊँ सोहँ पेम रस ।। चेतन नर क्हुँ तोय ।।
चेतन नर कऊँ तोय ।। ररो जिम जीव क्हावे ।।
सोहँ कहिये बिंद ।। ममो अंछर अंस लावे ।।
सुखराम अजपे संग धसे ।। धम पेट कहुं तोय ।।
कागल्यो लिंग असल हे ।। रसना सो भग होय ।।३९।।

कागल्या याने पञ्जीभ यह असली लींग है और रसना यह भग है ओंअम व सोंहम यह प्रेम रस है । चेतन नर है । और ररो यह जीव है । सोंहम यह बिंदु है । ममो अक्षर यह अंश लाता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को कहते है की यह सोंहम अजप्पा के संग पेट में धंसता है । व नाम रुपी गर्भ कंठकमल मे रहता है ।।।३९।।

इण मंथन सें ऊतरे ।। पार ब्रम्ह को नांव ।।
ने:अंछर आकार बिन ।। सो आवे घट गाँव ।।
सो आवे घट गाँव ।। जीव का सबफंद काटे ।।
पिछम गेल होय पीठ ।। चले अगम की बाटे ।।
जब पहूँचे सुखराम के ।। प्राब्रम्ह के धाम ।।
इण मथन सुं ऊतरे ।। पार ब्रम्ह को नाम ।।४०।।

इसप्रकार मैथुन करनेसे सतस्वरुप पारब्रम्हका ने–अंक्षर नाम हंसके घटमें सतस्वरुप पारब्रम्ह से उतरता है । यह ने–अंक्षर नाम निराकारी है । यह नाम ५२ अक्षरोंके लिखे जानेवाला मायावी आकारी नाम से अलग है । इसे मायाके शब्दो के रुप मे आकार नही दिए जाता । जैसे अ–ब यह अक्षरोने कागज के उपर आकार देते आता वैसे ने–अंछर के ध्वनी को अ,ब ५२ अक्षरोके आकार समान कागज के उपर नही देते आता । ऐसा निजनाम हंस के घट में प्रगट होता तब हंस के सभी फंद याने आज तक हुए वे सभी कर्म व आगे होनेवाले सभी कर्म कर्म करानेवाली,मुल पाँचो आत्मा कर्म कराने में आत्मा को लगानेवाला मन यह सारे फंद काटता व पश्चिम के पिठ के बंकनाल के रास्ते से होकर अगम के रास्ते हंस को ले चलता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज शिष्य विठ्ठलराव को बता रहे की जब ने–अंछर पश्चिम के पिठके बंकनाल के रास्ते से होकर अगम के रास्ते ले चलता तब हंस सतस्वरुप पारब्रम्ह के धाम पहुँचता ।।।४०।।

इण लिंग भग के मथन सूं ।। जीव आयो जग माय ।।
बिंद नाद ले ऊतऱ्यो ।। संख नाळ होय धाय ।।
संख नाळ होय धाय ।। अबे मथन मुख कीया ।।

ने:अंछर सो नाद ।। बिंद चेतन संग लीया ।।
बंक नाळ मही उलट के ।। अनंद लोक कूं जाय ।
इण लिंग भग के मथन सूं । जीव आयो जग माय ।।४१।।

इस लिंग व भग के मैथुनसे जीव जगत मे आया । वह बिंदु चेतन नाद को जीव ब्रम्ह को लेकर संखनाल के रास्ते से गर्भ मे आता । ऐसे ही हंस राम नाम शब्द का मंथन आते जाते श्वास मे मुख मे करता तब मुख के मंथन करनेसे ने:अंछर यह नाद सतस्वरुप पारब्रम्ह से प्रगट होता व हंस चेतन रुपी बिंदु को साथ लेकर बंकनाल से उलटता व हंस को आनंद लोक ले जाता । ।।४१।।

रटणा की बिध टाळ के ।। साझन करे अनेक ।।
से सब हद का ख्याल हे ।। नाना बिधका देख ।।
नाना बिध का देख ।। प्रम पद कदे न पावे ।।
ने:अंछर बंक नाळ ।। पिछम को भेद न आवे ।।
हद बेहद मे सब थके ।। बेद भेद कल देख ।।
रटना की बिध टाळके ।। साजन करे अनेक ।।४२।।

विधीसे मुख मे आते जाते श्वास मे राम नाम की रटना नही करता व वेद,भेद,लबेद की अनेक साधनाएँ करता व परमपद पहुँचना चाहता ऐसा संत परमपद कभी नही पहुँचता । रामनाम रटन करने के सिवा माया के नाना विधीयो के अनेक साधन है ये सभी साधन हद तथा जादामे जादा बेहद तक पहुँचानेवाले है । ये साधन ने:अंछर प्रगट नही कराते इसकारण हंस बंकनाल के पश्चिम के रास्ते से अगम देश नही पहुँचता ये वेद,भेद की सभी कलाएँ हद याने तीन लोक १४ भवन तथा बेहद याने होनकाल पारब्रम्ह तक पहुँचती व वहाँ ये सभी कलाएँ थक जाती आगे अगम नही पहुँचती ।।।४२।।

बाहिर क्रिया जाप सो ।। याँरी हद लग दोड़ ।।
बेहद पहूँचे ध्यान ओ ।। पूरब सोहँ मोड ।।
पुर्ब सोहँ मोड़ ।। पवन पीवे नर सोई ।।
वे पहुँचे बेहद ।। भंवर ज्याँ गुफाहोई ।।
सुखराम दास बेहद परे ।। अे नही पावे ठोड़ ।।
बाहेर क्रिया जाप सो ।। यांरी हद लग दोड़ ।।४३।।

हंस मन से,देह से,घट के बाहर की त्रिगुणी माया की क्रिया तथा जाप करेगा तो हंस हद तक पहुँचेगा । हदके परे नही पहुँचेगा कारण त्रिगुणी माया की दौड हद तक ही है । हंस घट मे पुरब से सोहम याने श्वास की साधना करेगा तो हंस बेहद मे जहाँ भवर गुफा है वहाँ तक पहुँचेगा । यह साधना श्वास पिनेसे मतलब श्वास का आधार लेने से होती । इसप्रकार घटके बाहर की माया क्रिया जाप हद तक व घट के अदंर की होणकाल

पारब्रम्ह की सोहम जाप की साधना बेहद तक ही पहुँचती है,ये दोनो साधना बेहद के परे के अगम देश नही पहुँचती है ।।।४३।।

साझन सब ही प्रहरे ।। पूरब राहा न जाय ।।
प्रेम प्रीत सूं उलट के ।। चडे पिछम दिस माय ।।
चडे. पिछम दिस माय ।। तके हद बेहद त्यागे ।।
ओ राहां न्यारो होय ।। सुणर बिर्ळा जन जागे ।।
सुखराम मोख जे पहूँच सी ।। सत्तगुरु भेटया आय ।।
साझन सब ही प्रहरे ।। पुर्ब राहा न जाय ।।४४।।

ऐसे घटके बाहरके मायाकी क्रिया जापके तथा घटके अंदर श्वासके आधारसे पुर्व दिशामे जानेके सभी साधन त्याग देता है व ने:अंछर सतगुरुसे प्रेम प्रित करता है तो हंस घटमें बंकनालसे उलटकर पश्चिम दिशासे चढ हद बेहदको पार कर अगमके पदमे पहुँच जाता है । यह अगममे पहुँचनेका रास्ता मायाके साधनावोसे तथा पुर्व दिशासे भृगुटीमें चढनेके साधन से न्यारा है । ऐसे अगमके देशको ने:अछंर प्रगट करा देनेवाले सतगुरु मिलनेपे ही पहुँचते है । ऐसे मोक्षमे सतगुरुसे ने:अछंरका ज्ञान सुणकर बिरला ही जागृत होते है । इसप्रकार माया व ब्रम्हके रास्तेसे अलग ऐसे अगमके रास्तेसे बिरला ही मोक्षके पद पहुँचते है ।।।४४।।

विठ्ठलराव अब बोलीया ।। किसो पेम वो होय ।।
बिन साझन जड़ हंस ओ ।। चड़े पिछम दिस जोय ।।
चड़े पिछम दिस जोय ।। पेम वो मोय बतावो ।।
किस बिध आवे माय ।। रीत सब सोझर लावो ।।
ब्हो ग्यान म्हे ढूंढियो ।। अेसी सुणी न कोय ।।
विठ्ठलराव अब बोलिया ।। किसो पेम वो होय ।।४५।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजसे विठ्ठलराव यह बोला की ऐसा कौनसा प्रेम है की जिसमे जगतके कोई साधन या क्रिया न करते हुए यह जड जीव पश्चिम दिशासे अगमदेश पहुँच जाता । ऐसा जो प्रेम है वह मुझे बताओ । वह प्रेम हंसके अंदर कैसे आता ये सभी रीतीयाँ खोजकर मुझे बताओ मैने भी बहुत ज्ञान खोजे है और बहुत साधु संतोसे मिला हुँ । परंतु ऐसे प्रेमसे अगम देशमें चढने की विधी किसी ज्ञानमें नही बताई है या किसी साधु संत ने नही बताई है । ।।४५।।

सुखराम क्हे जिण पेम सूं ।। हंस आयो जुग माय ।।
वोइज प्रेम सुध भाक्हे ।। व्हे रूतवंती की चाय ।।
व्हे रूतवंती की चाय ।। सत्तगुरू साचा पावे ।।
जो उनमे तत्त होय ।। पेम इण घट मे आवे ।।

नख चख आपे सोझले ।। फाड़ पीठ चड़ जाय ।
सुखराम कहे जिण पेम सूं । हंस आयो जग माय ।।४६।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने विठ्ठलराव को बताया की यह जिस प्रेम से हंस जगत में आया वही प्रेम शुध्द भाव का प्रेम है । हंस को निचे आने में जो शुध्द भाव का प्रेम रहता वही शुध्द भाव का प्रेम अगम में जाने के वक्त होता । निचे आते वक्त यह प्रेम माया वासना के प्रती रहता तो उलटकर उपर जाते वक्त यह प्रेम विज्ञान वैराग्य के प्रती रहता । दोनो वक्त याने निचे आते वक्त और उपर जाते वक्त प्रेम के सरीखेपन में और शुध्द भाव में कोई फरक नही रहता । रुतवंती स्त्री को बालक के लिये चाहना होती तब वह पती से प्रेम करती । ऐसा ही शुध्द भावका प्रेम शिष्यके हंसको सतगुरुसे ने अछंर पानेके लिये होना चाहिये । ऐसा प्रेम जब शिष्यके हंसको आता है तब कई बार ने:अंछर प्रगट करा देनेवाले सच्चे सतगुरु मिलते नही । इसलिये शिष्य में उलटकर गिगन में चढने का प्रेम भी चाहिये और ऐसे शिष्य को सच्चे ने अंछर प्रगट करा देनेवाले सतगुरु भी चाहिये । जब ऐसे सतगुरु शिष्य को मिलते है तब उस सतगुरु में जो ने:अंछर तत्त प्रगट रहता वही का वही ने:अंछर शिष्य में शुध्द भाव के प्रेम से प्रगट हो जाता । वह ने अंछर तत्त हंसके सारे शरीरमें नाखून से लेकर आँखोतक अपने आपसे फैलकर प्रगट हो जाता और हंसके पिठ को फाड्कर हंसको गिगनमें लेकर चढ जाता । ऐसे पीठके रास्तेसे चढनेके लिये हंस जिस शुध्दभावके प्रेमसे जगतमें आया रहता वही शुध्द भावका प्रेम रहता ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलरावको कह रहे है ।।।४६।।

विठलराव क्हे पेम वो ।। किम आवे सिष माय ।।
सो बिध बचन उचार कहो ।। क्या करणो क्या नाय ।।
क्या करणो क्या नाय ।। दया कोणे बिध पावे ।।
धिन वो पेम बिचार ।। उलट आनंद घर जावे ।।
अपणे बस कन ओर के ।। नेक बतावो छाण ।।
विठलराव क्हे पेम वो ।। किम आवे सिष माय ।।४७।।

विठ्ठलराव ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजसे पुछँ की,वह शुध्द भाव व प्रेम शिष्य के अंदर कैसे आयेगा? वह विधी मुझे विचार करके बतावो । उस प्रेम के लिये शिष्य ने क्या करना चाहिये और वह प्रेम जिसकारण नही आयेगा ऐसा क्या नही करना चाहिये ये मुझे बतावो । आपके कहने से ऐसा प्रेम मुझमे प्रगट होगा तो ही मैं अगम देश जाउँगा । तो मुझमें ऐसा प्रेम प्रगट होने की प्रेम की दया किस विधीसे होगी यह मुझे बतावो । (उदा.धन की दया होगी तो ही मैं महल बनाउँगा ऐसे प्रकारसे प्रेमकी दया शब्दका प्रयोग किया है ।)विठ्ठलराव आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से कह रहा है की,जिस प्रेम से

हंस उलटकर आनंद घर जाता है वह प्रेम धन्य है । ऐसा धन्य प्रेम होना यह हंस के अपने बस रहता या और किसी ओर के बस रहता ऐसा प्रेम पाने का ज्ञान विज्ञान मुझे कोरा कोरा बतावो । उस ज्ञान विज्ञान में मुझे कोई भ्रम नहीं रहेगा ऐसा छान छानकर बतावो ।।।४७।।

सुखराम क्हे सुण पेम ओ ।। इस बिध उत्पत होय ।।
काम राम सब माँय हे ।। संगत के गुण जोय ।।
संगत के गुण जोय ।। नार गुरु असल पावे ।।
वाँहां जागे घट काम ।। नाँव उलटर वहाँ जावें ।।
ग्यान ब्रम्ह का चेत हे ।। सो बरण बतावे कोय ।
सुखराम केहे सुण पेम ओ । इस बिध उत्पत्त होय ।।४८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को कहते है की,घट में यह प्रेम कैसे उत्पन्न होता यह विधी मैं तुम्हें बताता हूँ । जैसे काम तन में रहता वैसेही राम भी तन में रहता । काम याने माया के पाँच विकारो के सुख लेने की वासना और राम याने माया के पाँच विकारो से मुक्त होने का विज्ञान वैराग्य यह दोनो भी हर किसी के तन में रहते काम याने माया के सुख लेने की विकारी वासना और राम याने मायाके विकारो से मुक्त होने का वैराग्य इनका गुण किसकी संगत करते उसके अनुसार प्रगट होता । अच्छी सुंदर स्त्री की संगत की तो काम याने वासना जागृत होती तो ने:अंछरी सच्चे सतगुरु की संगत मिली तो वैराग्य याने राम जागृत होता । अच्छे स्त्रीके संगसे काम याने वासना जागृत होती जिससे बिंदू के साथ हंस भृगुटी से निकलकर संखनाल के रास्ते से गर्भ में आता । वैसेही ने:अंछरी सतगुरु मिले तो ने:अंछर के साथ हंस घट में उलटकर जहाँ विज्ञान सतस्वरुप ब्रम्ह का पद है वहाँ पहुँचता व संत सभी चेन वहाँ पहुँचकर विज्ञान सतस्वरुप के ब्रम्ह के देखता और वे चेन सभी जगत के ज्ञानी, ध्यानी,साधु,सिध्द,ऋषी–मुनी तथा जगत के लोगो को बताता । ऐसे विज्ञान देशके पहुँचनेके चरित्र कोई भी माया ब्रम्ह का ज्ञानी,ध्यानी,ऋषी–मुनी ने वर्णन किया क्या?यह विठ्ठलराव तुम मुझे बतावो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव से बोले । ।।४८।।

ने:कामी जग पुर्ष व्हे ।। तां को कहुँ सुण ग्यान ।।
ओषध खुवावो पुष्ट की ।। तांबेसर कहुं आण ।।
तांबेसर कहुं आण ।। फेर मेहेंन्या संग राखे ।।
सेज रमण रस ख्याल ।। गाय समज नही भाखे ।।
जब वो घट भै भित व्हे ।। त्याग्यो संका मान ।।
ने:कामी जग पुर्ष व्हे ।। तां को कहुँ सुण ग्यान ।।४९।।

संसार में ने:कामी पुरुष रहता । ऐसे पुरुष को नारी के साथ भोग की शंका या डर के

कारण काम वासना नही के बराबर रहती । उसमे कामवासना कैसे जागृत करवाते है यह ज्ञान मै तुझे बताता हूँ तू सुन । ऐसे मनुष्य को कामवासना जागृत होने के लिये पौष्टिक दवाईयाँ खिलाते है । ताम्बेश्वर खिलाते है । ऐसे पौष्टिक दवाईयाँ तथा ताम्बेश्वर खिलाके उस ने कामी पुरुष को स्त्रीयोके संग रखते है । सेज का स्त्री संग रस का खेल दिखाते है और स्त्री संग में रमने के वासनिक गाने सुनाते है । ऐसा करनेसे ने:कामीका स्त्री संग करनेका डर और शंका निकल जाती है और वह कामी पुरुष के समान स्त्री संग में रमने लगता है । इसीप्रकार मेरा हंस अमरलोक नही जा सकेगा इसकी शंका या डर रहता इसकारण शिष्य को वैराग्य विज्ञानकी चाहना नही के बराबर रहती ऐसे शिष्यो को गर्भ की यातना कैसे है,बुढापे का दु:ख कैसे है, ८४००००० योनीयोमें दु:ख कैसे है,कोई कारण नही होते हुये आ-आ के पडनेवाले दु:ख कैसे है,जालिम काल नरकमें कैसे कैसे दु:ख भुगवाता तथा अकाली मृत्यु होने पे अगतीके दु:ख कैसे है तथा अमरलोक में पहुँचने के बाद अनोखे सुख कैसे है?वहाँ जालिम काल कैसे नही है ऐसा होनकाल ज्ञान तथा अमरलोकके चरित्र भांती भांतीसे समजाने से हंस अमरलोक पहुँचेगा की नही यह डर या शंका शिष्यकी निकल जाती और ऐसे शिष्यो में सतगुरुके ने:अंछर के प्रती प्रेम हो जाता और शिष्य अपने ही घट में उलटकर अगमदेश पहूँच जाता ।।।४९।।

खट रागाँ को भेद सुण ।। गाया प्रगटे जोय ।।
बिन गायाँ पढबो करो ।। लाख बरस लग कोय ।।
लाख बरस लग कोय ।। राग को गुण नही जागे ।।
बिन पुंगी पढ ग्यान ।। सरप के नेक न लागे ।।
षट गुण की षट राग रे ।। गम बिन लखे न कोय ।।
षट रागाँ को भेद सुण ।। गायाँ प्रगटे जोय ।।५०।।

जगत में भेरु राग,हिडोल राग,श्रीराग,मल्हार राग,दिपक राग तथा पंचम राग ऐसे छ:तरह के छ:राग है । इन रागो को उनके सुरो में गाया तो ही रागो का गुण प्रगटता । इन रागो को ताल सुर में गाया नही और ऐसे ही पढ लिया या गा लिया तो वे राग लाख बरस तक भी पढते रहे या गाते रहे तो भी उन रागो का गुण प्रगट नही होता । जैसे पुंगी याने बिन के बिना सर्प को पुंगीनाद पढ के सुनाया तो सर्प को जरासी भी पुंगी से प्रीत नही लगती तथा सर्प डौल नाच नही करता मतलब जिसे पुंगीनाद बजाते आता उसीसे साप डौलता । जिन्हें पुंगीनाद नही बजाते आता उन्होंने पुंगी,पुंगीनाद छोडके कितनी भी बजायी तो भी नाग कभी नही डोलता इसीप्रकार राग छ:प्रकार की है । यह छे:प्रकार की राग कैसे बजाना इसका ज्ञान जिसने समझा है उसीसे छ:प्रकार की राग बजेगी तो हर राग का जो गुण है वह गुण प्रगट होगा ।।।५०।।

षट रागाँ साथे करे ।। अेकण समचे कोय ।।

तो गुण अेक न प्रगटे ।। अेसो गिनानी जोय ।।
अेसो गिनानी जोय ।। तत्त जागे सो बाणी ।।
वे न्यारा सुण सब्द ।। भेद बिन लखे न प्राणी ।।
सुखराम दास क्हे पेम वो ।। यूं नही प्रगट होय ।।
षट रागाँ साथे करे ।। अेकण समजे कोय ।।५१।।

जैसे छःतरह के राग गाने का ताल सुर नही जानता तथा छःवो राग बेसुर में एक साथ करके गाता तो एक भी राग का गुण प्रगट नही होगा । इसप्रकार जगत के सभी ज्ञानी है । ये ज्ञानी तत्त का ज्ञान जानते नही और माया ब्रम्ह के आधार से तत्त का ज्ञान सुनाते इसकारण तत्त की जागृती शिष्य में होती नही । जैसे बेसुर राग गानेवाले को राग का सच्चा सुर क्या है तथा वह इन सुरोसे न्यारा कैसे है यह मालूम नही इसकारण राग गाने पर भी रागो का गुण प्रगट होता नही । इसीप्रकार मायाब्रम्हके ज्ञानीयोको तत्त क्या गुण है यह मालूम नही । ये ज्ञानी तत्त माया ब्रम्ह से न्यारा कैसे है यह जानते नही और जगत में मायाब्रम्ह के आधार से तत्त के गुण गाते । इसकारण आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को कह रहे है की,शिष्यको सतगुरुके तत्तसे प्रेम प्रगट होता नही । प्रेम प्रगट होता नही इसलिये शिष्य पश्चिम मार्ग चढकर दसवेद्वार शिष्य पश्चिम मार्ग चढकर दसवेद्वार ब्रम्हंड में पहूँचता नही ।।।५१।।

जे कोलू कूं फेरणो ।। तो भेरूं ले राग ।।
जो हिंड़ोल ज छेड़ीये ।। तो झूला को लाग ।।
तो झूला को लाग ।। पाहाण प्रगळे इम भाई ।।
श्री राग भरपूर ।। मेहे मल्लार ले आई ।।
दिपक दीया जोड़िया ।। पंचम गुण गअे भाग ।।
जे कोलू को फेरणो ।। तो भेरूं ले राग ।।५२।।

यदि कोल्हु को बिना बैल के अपने आप चलाना है तो भैरव राग गाना चाहिये,झुले को अपने आप झुलाना है तो हिंडोल राग गाना चाहिये,पाशान को पिगला कर पानी करना है तो श्रीराग गाना चाहिये,मेह से बारीश बरसाना है तो मल्हार राग गाना चाहिये,दिपक जलाना है तो दिपक राग गाना चाहिये और पंचम राग का गुण प्रगट करना है तो पंचम राग बजाना चाहिये । इसीप्रकार शिष्यके घटमें कुद्रतकला जागृत करनी है तो शिष्यको कुद्रतकलासे प्रेम होगा ऐसा शिष्यको ज्ञान देना चाहिये । कुद्रतकलासे प्रेम नही आयेगा ऐसा कितना भी ज्ञान शिष्यको सुनाया तो भी शिष्यको नेःअंछर तत्तके लिये प्रेम नही आयेगा तथा शिष्य सतस्वरुप पद में कभी नही जायेगा । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव राजा को कह रहे है । ।।५२।।

ज्यूं गुण न्यारो राग मे ।। युं चर्चा मे होय ।।

उलट चड़े सो रीत सुण ।। और न सुणणी कोय ।।
ओर न सुणणी कोय ।। पेम वोईस बिध लागे ।।
ज्याँ च्रचा सुध होय ।। भेळ दूजो नही सागे ।।
सुखराम क्हे सुण राजवी ।। सब बिध न्यारी जोय ।।
ज्युं गुण न्यारो राग मे ।। युं च्रचा मे होय ।।५३।।

जैसे छःरागो के न्यारे न्यारे गुण है वैसेही माया के संत,होनकाल पारब्रम्ह के संत तथा सतस्वरुपी संत इन सभी के ज्ञान चर्चा में न्यारे न्यारे गुण है । माया के संत के ज्ञान चर्चा से शिष्य को माया से प्रेम होता और हंस हद तक ही रहता । होनकाल के संत की चर्चा सुनने से शिष्य को पारब्रम्ह के पद से प्रेम होता और हंस होनकाल पारब्रम्ह के बेहद पद तक पहुँचता तथा सतस्वरुप विज्ञानी की चर्चा सुनने से शिष्य को सतस्वरुप से प्रेम होता और हंस घट में बंकनालके रास्ते से उलटकर हद बेहद के परे सतस्वरुप पद में जाता । इसलिये हर किसीने जिस ज्ञान चर्चा से घट में उलटके गिगन में चढने की रीत बनती है ऐसे सतस्वरुप विज्ञानी की ही चर्चा सुननी चाहिये । जिस ज्ञान चर्चासे घटमें उलट चढनेकी रीत नही बनती ऐसे माया ब्रम्ह के ज्ञान की चर्चा ही नही सुननी चाहिये । जिसकी ज्ञान चर्चा सुनोंगे वैसा प्रेम लगेगा । माया तथा ब्रम्ह से प्रेम लगे नही और सतस्वरुप से प्रेम लगे ऐसी सतस्वरुप की शुध्द चर्चा जहाँ है वही चर्चा सुननी चाहिये तथा सतस्वरुप के चर्चा में ब्रम्ह तथा माया के ज्ञानका भेद बिलकूल नही है ऐसे सतस्वरुप संत से ही सतस्वरुप की ज्ञान की चर्चा सुननी चाहिये । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव राजाको कह रहे है इसप्रकार ज्ञान चर्चा माया,ब्रम्ह तथा सतस्वरुप ऐसे तीनो की न्यारी न्यारी है यह समझो । जैसे छःवो रागसे छःअलग अलग गुण प्रगट होते वैसे ही माया,ब्रम्ह तथा सतस्वरुप के भेद से माया का पद,होनकाल पद तथा सतस्वरुप पद ऐसे न्यारे न्यारे पद प्रगट होते ।।।५३।।

जिण तिण सूं सुण राग को ।। गुण नही प्रगटे आय ।।
यूं चर्चा ब्हो जाग हे ।। अेकी गुण नही माय ।।
अेकई गुण नही मांय ।। रीज खाली उट जावे ।।
ज्यूं बादीगर खेल । जक्त देख कर घर घर आवे ।
सुखराम क्हे सुण साच वाँहां । कर दिखावे लाय ।
जिण तिण सूं सुण राग को । गुण नही प्रगटे आय ।।५४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को कह रहे की हे विठ्ठलराव सुन जिसके उसके पास रागको सुरतालमें बजाने का गुण नही रहता इसलिये जिसके उसके पास के राग से राग के गुण नही प्रगट होते इसीप्रकार सतस्वरुप केवल के नाम पर सतस्वरुप केवल की चर्चा तो बहुत जगह होती परंतु सतस्वरुप केवलका एक भी गुण चर्चा करनेवाले

के घट में प्रगट नही रहता । इसकारण जीवने ऐसे जगह ज्ञान की चर्चा सुन भी ली तो भी उस कैवल्य से प्रेम सुननेवाले में प्रगट नही होता । इसप्रकार जीव कैवल्य का ज्ञान सुनता और खाली उठके घर जाता । जैसे बाजीगरका खेल जगह जगह होता और जगत के लोग उस खेल को देखते खुश भी होते और अपने अपने घर बिना कुछ कमाये लौटकर आते । इसीप्रकार बाजीगरके खेलके समान जगह जगह पर कैवल्य के नाम पर कैवल्य का ज्ञान चलता परंतु उस ग्यानी संतके घटमें कुद्रतकला जागृत नहीं रहती इसकारण उनका ज्ञान सुनकर किसी को भी सतस्वरुपसे प्रेम नही आता । इसकारण ऐसे ज्ञान चर्चासे कोई भी अपने घटमें उलटकर बंकनालके रास्ते ब्रम्हंध्रमें नही पहुँचता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलरावको कह रहे है की,विठ्ठलराव सुन जिस सतगुरु संत में सच में कुद्रतकला जागृत रहेगी तो ऐसे सतगुरु संत का ज्ञान सुनने पे शिष्य को सतस्वरुप से प्रेम आयेगा और वह शिष्य अपने ही घट में उलटकर बंकनाल के रास्ते से दसवेद्वार पहुँच जायेगा । यह शिष्य का उलटकर दसवेद्वार में पहुँचने की कला जिस सतगुरु के घट में तत्त है वही कर दिखायेगा ।।।५४।।

प्रेम भक्त का बाण सो ।। छोड़े बदबद आण ।।
फेर भेद की सुध लियाँ ।। जिसो राग घर जाण ।।
जिसो राग घर जाण ।। नेक कसर नही कोई ।।
जाँ प्रगटे निज नाँव ।। ओर बक बक रे सोई ।।
सुखराम क्हे सुण राजवी ।। सोई जन लेय पिछाण ।।
प्रेम भक्त का बाण सो ।। छोड़े बदबद आण ।।५५।।

ऐसे सतगुरु प्रेम भक्ति के ज्ञान के बाण शिष्य के भ्रम नष्ट होने के लिये एक के पिछे एक ऐसे बदबद छोड्ते है । ऐसे सतगुरु के पास सतस्वरुप के भेद की समझ रहती है जैसे रागी को रागका घर समझता,उसके रागके घर समझनेमें जरासी भी कसर नही रहती ठिक इसीप्रकार सतस्वरुपी सतगुरु में प्रगट हुये सतस्वरुपको समझनेमें जरासी भी कसर नही रहती इसकारण ऐसा सतगुरु शिष्य को सतस्वरुप का ज्ञान समजाने में जरासी भी कसर नही रखता । इस कला से शिष्य के सभी भ्रम मिट जाते और शिष्य का सतस्वरुप से प्रेम होता और शिष्य के घट में निजनाम प्रगट होता । बाकी जगह जगह पे होनेवाले सभी ज्ञान बकबक है । याने बिना सतस्वरुप के प्रताप के है । खाली खोकले है । इसलिये हे राजन जो संत सतस्वरुप कैवल्य का ही ज्ञान बताता है तथा शिष्य के घट में कैवल्य तत्त प्रगट करा देता है ऐसा संत पहचान और उस संत के शरण जा ।।।५५।।

कवत ।।

निर्भे सब्द उचार ।। प्रेम सुं बोले आई ।।
ज्हाँ जागे वो प्रेम ।। नाव नख चख के माई ।।

जे दूजो व्हे भेळ ।। कष्ट साजन कोइ लावे ।।
तो नही प्रगटे नाव ।। राग ज्यूं घर तज गावे ।।
च्रचा लिव अर रेण सो ।। अेक सूत होय जोय ।।
जब प्रगटे सुखराम क्हे ।। असल पेम क्हुं तोय ।।५६।।

।। कवित्त ।।

हे राजन जो संत निर्भय देशके निर्भय शब्द उच्चारण करता तथा वह संत तत्तसे उसे हुये वे प्रेम के बोल जगत को सुनाता उसीका ज्ञान सुन । उसीका ज्ञान सुनने से शिष्य के घट में प्रेम जागृत होता है और उस प्रेमसे शिष्यके घट मे नख से चखतक नाम प्रगट होता है । जिस ज्ञान में माया ब्रम्ह का भेल है तथा कष्ट से साधन करने की विधियाँ आयी है ऐसे संत का ज्ञान सुनने से जीव में प्रेम प्रगट नही होता और प्रेम प्रगट नही होने कारण शिष्य के घट में नख से चखतक निजनाम प्रगट नही होता । इस संत की गती ऐसे रहती है । जैसे राग बजानेवाले ने राग,राग के घरमें नही बजाया और दुजे ही घरमें बजाया । उस रागी ने दुजे घर में कितना भी राग बजाया तो भी जिस राग से जो गुण प्रगट करवाना था वह प्रगट नहीं हुवा । इसीप्रकार संत को सतस्वरुप का ज्ञान नही हैं और वह संत माया का और ब्रम्ह का आधार लेकर सतस्वरुप का ज्ञान शिष्य को समझता है परंतु समजानेवाले संतमें सतस्वरुप प्रगट नही रहता । इसकारण ऐसे संतके समझानेसे शिष्य को सतस्वरुप से प्रेम नही आता । तथा शिष्य को सतस्वरुपसे प्रेम न आने कारण शिष्य अपने घटमें बंकनालसे उलटकर अगम नही पहुँचता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे की जिस सतगुरु की ज्ञान चर्चा,लिव तथा रहणी सतस्वरुप की एक सुत की रहेगी मतलब सतस्वरुप के समान रहेगी,किसी प्रकारकी भेल नही रहेगी ऐसे सतगुरु के ज्ञान से ही शिष्य को सतस्वरुप से अस्सल प्रेम आयेगा और उस शिष्य के घट में सतनाम नख से चखतक प्रगट होगा ।।।५६।।

कुंडल्या ।।

विठलराव अब बोलीया ।। कहो भेद ओ मोय ।।
लिव चरचा अर रेण सो ।। अेक कोण बिध होय ।।
अेक कोण बिध होय ।। बात तीनु अे न्यारी ।।
रेणी चरचा बात । लिव अे तीन बिचारी ।
--------।।----------।।
विठलराव अब बोलीया । कहो भेद वो मोय ।।

तब विठ्ठलराव बोला,कि,इसका भेद मुझे बताईये,कि,चर्चा,लीव और रहनी ये तीनो,एक किस तरह से होगें?ये तीनो बाते अलग-अलग है । रहनी,चर्चा,वार्ता और लीव ये तीनो,विचार करो,कि,ये अलग-अलग है,वे एक कैसे होंगे ? ।।

सुखो वाच ।।

बिन गुरु गम निंदे बंदे ।। सो मद भागी होय ।।
पेड़ डाळ फळ पात कूं ।। चाख्याँ गम नही कोय ।।
चाख्यां गम नही कोय ।। दाद दरगा नही पावे ।।
लख चोरांसी माय ।। जूण सो अंधकी जावे ।।
सुखराम ब्रम्ह अगाध हे ।। क्या गत जाणे कोय ।।
बिन गुरु निंदे बंदे ।। सो मद भागी होय ।।५७।।

विठ्ठलराव आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से बोला की इसका भेद मुझे बतावो । चर्चा, लीव तथा रहणी ये तीनो एक कैसे होगी?ये तीनो बाते अलग अलग है ।

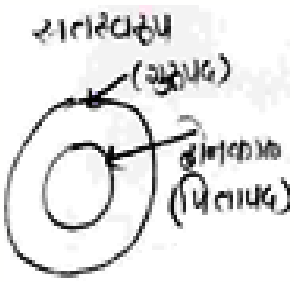

रहणी,चर्चा तथा लीव ये तीनो अलग अलग है फिर ये एक कैसे होगी? इसका विचार आ रहा है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को कहते है की,बिना गुरुके ज्ञान के मतलब बिना सतस्वरुप के समझ से सतस्वरुपी गुरु की निंदा करते है वे भाग्यहीन है ।(बंदन यह शब्द साखीपुरी करने लिये प्रयोग किया गया है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजको सिर्फ निंदा यही शब्द कहना है ।)पेड ,डाल,फल, पात कु चाखा नही तो पेड,डाल,फल,तथा पात में क्या गुण है?इसकी समझ किसीको भी कैसे आयेगी?इसीप्रकार संतमें सतस्वरुप पारमात्मा है उसका अनुभव नही लिया और उस संत में सतस्वरुप नही है ऐसी झूठी ही निंदा की तो ऐसे मनुष्यको दर्गामें दाद नही मिलती ऐसे मनुष्यको सतस्वरुप परमात्मा ८४००००० योनीके उल्लू,चमगादड ऐसे अंध योनी में डालता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलरावको कह रहे की सतस्वरुप ब्रम्ह अगाध है उसकी गती कोई भी नही जानता? उसकी गती सिर्फ वे ही जानते जिस में सतस्वरुप ब्रम्ह प्रगट हुवा है ।।।५७।।

त्रुगुटी तक्त न देखिया ।। काना सुण्यो न कोय ।।
ब्रम्ह देसरी गम नही ।। के मे सत्तगुरु होय ।।
के मे सत्तगुरु होय ।। प्राण की गम न काई ।।
अे जासी किण देस ।। सिष गुरु दोनू भाई ।।
सुखराम दास बातां करे ।। अगम निगम की जोय ।
त्रुगटी तक्त न देखियो ।। काना सुण्यो न कोय ।।५८।।

।। सतगुरू सुखरामजी महाराज उवाच ।।

जिसने घटमें त्रिगुटी का तक्त देखा नही मतलब जो मनुष्य घट में त्रिगुटी में ही पहुँचा नही तथा कानोसे भी कभी त्रिगुटी क्या है यह सुना नही,सतस्वरुप ब्रम्ह के देश का जरासाभी ज्ञान नही,खुद के प्राण की गम नही ऐसा मनुष्य कहता है की,मै सतगुरु हूँ ऐसे मनुष्य को सतगुरु समझकर शिष्य शरण में आता तो वह शिष्य ऐसे सतगुरु के भरोसे

कौनसे देश मे जायेगा? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को पुछ्ते है की,जिस मनुष्यने कभी त्रिगुटी तक्त देखा नही,सतस्वरुप का ब्रम्हदेश कभी देखा नही और अगम तथा निगम ऐसे सतस्वरुप देश की खोकली बाते करता तो वह सतगुरु और उसके शरण में आया हुवा शिष्य परमपद में कैसे जायेगा? यह विठ्ठलराव तुम सोचो ।।।५८।।

कवत ।।

सत्तगुरू सतस्वरूप ।। सत्त सोही क्रणी माही ।।
सत्त जोग बेराग ।। सत बिन कसणी नाही ।।
सत्त सब्द सोई मांय ।। सत्त सुंई उलटर चड़ हे ।।
लागे सेज समाध ।। नरम कबहूं नही पड़ हे ।।
सुखराम दास सत्तगुरु तिके ।। निज नांव सिष मांय ।।
उलट पीठ कूं फोड़ कर ।। लेर अगम घर जाय ।।५९।।

।। कवित्त ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने विठ्ठलरावको सतगुरु सतस्वरुपी है यह कैसा पहचानना इसकी परख बताई । उस सतगुरुकी करनी पूर्णत: सतस्वरुप की रहती । उसकी जोग साधना सतबैराग विज्ञानकी रहती । उसकी सतस्वरुपके सिवा मायाके क्रिया करनीयो की कसनी नही रहती । ऐसे सतगुरुके घटके अंदर सतशब्द रहता । ऐसा सतगुरु घटमें सतशब्द सतके आधार से बंकनालके रास्तेसे उलटकर सतस्वरुप ब्रम्हमें चढा हुवा रहता । ऐसे सतगुरुको सत परमात्मा से सहज समाधी अखंडीत लगी रहती । ऐसे सतगुरुकी सहज समाधी कभी नरम नही पडती । ऐसा जो सतगुरु है वही सतस्वरुपी सतगुरु है । ऐसे सतगुरुके शरणमें जानेसे शिष्य को सतस्वरुपसे प्रेम आता और शिष्य के घट में निजनाम प्रगट हो वह निजनाम शिष्य के हंस को संग करके उलटता और पीठ फाड्कर हंस को अगम निगम के देश में ले जाता । ।।५९।।

कुंडल्या ।।

प्रम मोख यूं केत हे ।। कोई जन बिर्ळा जाय ।।
तां को अर्थ बिचार सो ।। सुणो सकळ नर आय ।।
सुणो सकळ नर आय ।। गेल आ मिले न कोई ।।
जे पावे कोई भेद ।। धारणी मुस्कल होई ।।
सुखराम दास सत्त स्वरूप बिन ।। अमर रहया नही काय ।।
प्रम मोख इण कारणे ।। बिरळा पोहोंचे जाय ।।६०।।

।। कुण्डलियाँ ।।

इस प्रकार की सतस्वरुप की स्थिती जिस संत की बनी है वही जो सभी संत परममोक्ष परममोक्ष कहते है वहाँ पहुँचता है । ऐसे परममोक्ष में कोई बिरला ही संत पहुँचता है । ऐसे परममोक्षमें कोई बिरला ही संत क्यों पहुँचता है इसका अर्थ तथा बिचार सभी जन

आकर सुनो । यह परममोक्ष का रास्ता पहले तो मिलना मुश्किल हैं । यदि किसीको परममोक्ष के रास्ते का भेद मिल भी गया तो वह भेद धारण करना मुश्किल है । ऐसा सतस्वरुप का भेद धारण किये बिना कोई भी परममोक्ष में जाता नही । परममोक्ष में गया नही तो बारबार प्रलय में जाता,सदा के लिये अमर नही होता । इसप्रकार यह परममोक्ष के रास्ते का भेद सभी को मिलता नही, मिला तो धारे जाता नही इसलिये परममोक्ष में बिरला ही पहुँचता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को समजा रहे है ।।।६०।।

राहा मिले पहुँचे नही ।। तिण मे फेर न सार ।।
नही पोहोंचे इण कारणे ।। गेल न मिले बिचार ।।
गेल न मिले बिचार ।। धारणी दुलभ अेसे ।।
बेद भेद दोऊं मुढ ।। रात दिन झूटी केसे ।।
सुखराम दास संसार रे ।। क्हे भेष सो बार ।।
युं ग्यानी पिंडत साध सो ।। मेरो करो बिचार ।।६१।।

परममोक्ष का रास्ता मिल गया और रास्ते का भेद धारण कर लिया फिर भी परममोक्ष पहुँचता नही यह झूठा है । परममोक्ष का रास्ता मिल गया और उस रास्ते का भेद धारण कर लिया तो धारण करनेवाला पहुँचता ही पहुँचता है इसमें कोई फेरफार नही है यह समझो । परममोक्षका रास्ता भी मिल गया तथा भेद भी मिल गया तो भी धारण करनेवाला पहुँचा नही इसका कारण यह है की,रास्ता धारण करनेवाले को सच्चा परममोक्ष का रास्ता ही नही मिला,उसने परममोक्ष का रास्ता छोड्के दुजाही गलत रास्ता पकड लिया और उस रास्ते को परममोक्षका रास्ता समजके चलने लगा इसकारण वह रास्ता धारण करनेवाला परममोक्षमें पहुँचा नही । इसीप्रकार किसीको परममोक्ष का रास्ता मिला परंतु पहुँचा नही इसका कारण यह है की,रास्ता तो सच्चे परममोक्षका ही मिला परंतु उस रास्ते को धारणा मुश्किल था इसलिये उसने वह रास्ता धारण किया नही छोड दिया इसकारण वह संत परममोक्ष में पहुँचा नही । ऐसा वेद तथा भेदने जो रास्ता परममोक्ष कभी नही पहुँचता ऐसा परममोक्ष के नाम पे गलत रास्ता जगत को बताया है ऐसे ये वेद,भेद,दोनो मूर्ख है । ये दोनो वेद तथा भेद उस परममोक्ष के ऐसे गलत रास्तेसे जगत को रातदिन चलने को कहते है । इसकारण जो कभी परममोक्ष नही पहुँचता ऐसे गलत रास्ते को संसार के लोगो ने भेष धारीयो ने,ग्यानियो ने,पंड्तोने,साधूवोने धारण कर लिया है । इसलिये ये संसारके लोग,भेषधारी,ज्ञानी,पंड्त,साधू उसी वेद भेद के गलत रास्ते को ही परममोक्ष का सच्चा रास्ता समझ के बारबार उसी रास्ते का ही जगत में जिकर करते है । ये भेषधारी,ज्ञानी पंड्त,साधू तथा जगत के लोग ये बिचार नही करते की वेद का तथा भेद का परममोक्ष का रास्ता धारण भी किया तथा नित्य चल भी रहे तो

भी हम परममोक्षमें क्यों नही पहुँच रहे ? इसका बिचार ये सभी करेगे तो मै जो समझा रहा हूँ की वेद,भेदके करणीयोंके रास्तेसे परममोक्ष का रास्ता आदि से ही न्यारा हैं इसका इन सभी लोगोको बिचार आयेगा । इन सभीको परममोक्षका रास्ता मिला और उसे धारण भी किया तो भी हम परममोक्षमें पहुँच नही रहे इसका इनको बिचार ही नही आया तो परममोक्षका सच्चा रास्ता हमने धारण किये हुये रास्तेसे न्यारा है ऐसा इन किसीको सोच भी नही आयेगी । इसप्रकार इनको यह सोच नही आयी तो परममोक्ष जाने का कोई दुजा रास्ता है इसका इन्हें बिचार भी नही आयेगा । इसकारण ये सभी लोग परममोक्ष को कभी नही जा पायेंगे । ऐसा विठ्ठलराव को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज समजा रहे है ।।।६१।।

बेद भेद की क्रणीयाँ ।। करे अनंत जुग माय ।।
मोख न पहुंतो आज लग ।। ओ अर्थ सूझे नाय ।।
ओ अर्थ सूझे नाय ।। राहा कोई न्यारो होई ।।
असंख जुग गया बीच ।। काँय ने पूतो कोई ।।
सुखराम दास राहा चालतां ।। नगर न आवे कांय ।।
बेद भेद की करणियाँ ।। करे अनंत जुग माँय ।।६२।।

वेद भेद की करणीयाँ जगत के लोग अनंत युगो से बिना कसर से करते है फिर भी आज तक एक भी परममोक्ष में पहूँचा नही पहुँचता नही यह अर्थ वेद तथा भेद के ज्ञानी,पंडित,साधू तथा जगत के लोगो को सुझता नहीं । आज तक वेद भेद की करणीयाँ करके कोई भी मोक्ष में नहीं गया तब मोक्ष का रास्ता कोई न्यारा ही होना चाहिये । इसकी समझ वेद के तथा भेद के ज्ञानी,पंडित,साधू तथा जगतके लोगोने लाना चाहिये । यह जीव जबसे होनकाल पारब्रम्ह से वेद भेदके देशमें आया तबसे आज दिन तक असंख्य युग व्यतीत हो गये तो भी आज तक वेद की तथा भेद की करणीयाँ साधकर कोई भी परममोक्ष में क्यों नही पहुँचा इसका इन किसीको बिचार नही सुजता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी,साधूवोसे कह रहे की नगरका रास्ता चल रहे चल रहे फिर भी नगर नही आ रहा इसका अर्थ नगर जानेका रास्ता सही नही पकडा,गलत पकडा इसीप्रकार वेद भेदके अनुसार परममोक्ष का गलत रास्ता पकड लिया और वैसी वेद भेदकी करणीयो पे करणीयाँ कर हे फिर भी परमोक्ष पहुँच नही रहे । इसका अर्थ यही होता है की,परममोक्ष में पहुँचनेका रास्ता वेद भेद की करणीयाँ का नही है । इन वेद भेद के करणीयों से अलग कोई दुजा न्यारा रास्ता है ।।।६२।।

केईक मुक्त लग पुंतिया ।। बिस्न लोक लग जाय ।।
केईक पदवी इंद्र लग ।। केइंक अढळ कहाय ।।
केइंक अढळ कहाय ।। सक्त लग पूंता जाई ।।

से प्रगट जग माँय ।। पुराण सायद मे भाई ।।
सुखराम राहा आ बेद की ।। हद बेहद लग माय ।।
केईक मुक्त लग पूंतिया ।। बिस्न लोक लग जाय ।।६३।।

वेद भेद की करणीयाँ करके कई संत विष्णुलोक के चारो मुक्तितक पहुँचे तो कई प्रल्हाद सरीखे इंद्रपद तक पहुँचे तो कई ध्रुव सरीखे अढल पद पहुँचे तो कई शक्तिलोक तक पहुँचे ये जगत में प्रगट है और ये संत मुक्तिपद,अटलपद,इंद्रपद पहुँचे इसकी पुराणो में अनेक साक्ष है । इसप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को कह रहे की वेद का रास्ता यह हद बेहद तक का ही है सत्तलोक को पहुँचने का नही है यह समझो ।।।६३।।

सत्त लोक जे जावसी ।। ज्यां की आ बिध होय ।।
दसवों द्वार उघाड़ के ।। चले संत कहुं तोय ।।
चले संत क्हुँ तोय ।। ओर सुण राह न कोई ।।
नऊं गेला हद माय ।। ताय कूं सुध न होई ।।
दसवे लग सुखराम के ।। मोख पहूंतो कोय ।।
सत्त लोक जे जावसी ।। ज्याँ की आ बिध होय ।।६४।।

जो सत्तलोक जाते उनकी यह विधि होती । वे संत दसवेद्वार खोलकर सत्तलोकमें जाते है । सत्तलोकमें दसवेद्वार खोलकर जानेके सिवा दुजा कोई भी रास्ता नही रहता । जो संत अंतीम समयपे दो आँखे,दो कान,दो नाक,एक मुख,एक लिंग,एक गुदा ऐसे नौ दरवाजेसे जाते है वे हदमें याने तीन लोकमें ही रहते है वे सत्तलोक कभी नही पहुँचते । इन नौ दरवाजे से जानेवाले संतको यह समझ नही है की दसवेद्वार तक याने नौ दरवाजेसे जानेवाले संत आजदिन तक परममोक्ष गये है क्या?नौ दरवाजेसे सतलोकमें आज दिन तक कोई पहुँचा नही फिर ये संत जो अंतीम समयमें नौ दरवाजोसे जानेकी साधना कर रहे हे वे सत्तलोक कैसे पहुँचेंगे? ।।६४।।

म्हे सत्तगुरु हुँ आद का ।। आत्म का गुरु कवाय ।।
मेरी मेहेमा अगम हे ।। क्या जाणे जग माय ।।
क्या जाणे जग माय ।। काग बुध ग्यानी सारा ।।
जे आत्म बिन ग्यान ।। रात दिन करे बिचारा ।।
सुखराम हंस प्रहंस व्हे ।। सो बुध चेंटे नाय ।।
म्हे सत्तगुरु हुं आद का ।। आतम का गुरु व्काय ।।६५।।

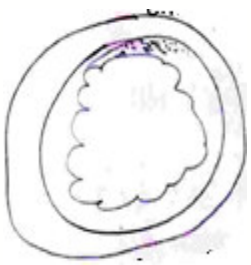

आदि में चार पद है ।
१) सतस्वरुप पद
२) होनकाल पारब्रम्ह

३) इच्छा मायापद
४) जीवात्मा पद
सतस्वरुप याने अखंडीत ध्वनी का विज्ञान सतगुरु पद ।
होनकाल पारब्रम्ह याने ब्रम्ह पिता पद ।
इच्दा माया माता पद ।
जीवात्मा याने चेतन आत्मा पुत्र या शिष्य पद ।
* मै सतगुरु हूँ आद का याने मेरे में जो सतस्वरुप प्रगट हुवा है वह आदि से सतगुरु है।
* आतम का गुरु कवाय याने मेरे में जो सतस्वरुप प्रगट हुवा है वह आदिसे ही सभी आत्मावो का सतगुरु है ।
* मेरी महीमा अगम है । क्या जाने जग माय ।
याने मेरे में प्रगट हुये वे सतस्वरुप की महीमा अगम है ।
ऐसे अगम महीमावाले सतस्वरुप सतगुरु को जगत के ज्ञानी,ध्यानी क्या जानेंगे?जगत के ज्ञानी,ध्यानी,इन सबकी बुध्दी कौवे की बुध्दी जैसी है । जैसे कौवे को हंस परमहंस के समान मोती खाने की बुध्दी नही रहती,मरे हुये प्राणीका मांस खानेकी ही रहती । इसीप्रकार ज्ञानी, ध्यानीयो की बुध्दी आत्म ज्ञानके बिना वेद भेदकी करणीयाँ रातदिन कसके करके कालके हाथमें खपने की ही रहती । ऐसे ज्ञानी,ध्यानीको हंस परमहंसके समान मोती खानेकी बुध्दी नही चिपकती मतलब ब्रम्ह आत्मा को सतस्वरुप सतगुरु करा देंगे तथा ब्रम्ह आत्माको काल से मुक्त कराके सतस्वरुप के महासुख के पद में पहूँचा देगे यह बुध्दी उगती नही । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज मै आदि का सतगुरु हूँ तथा आत्मा का गुरु हूँ यह खुदके हंस भावसे या मन भावसे या देह भावसे नही कहाँ । यह घट में प्रगट हुवे वे सतस्वरुपके भावसे कहाँ । यह सभी ने यहाँ ध्यान में लाना है ।।।६५।।

आतम का गुरु सिष्ट मे ।। ताँ सूं सन्मुख होय ।।
ताँ के सिर नही खून रेहे ।। ब्रम्ह लग कहुँ तोय ।।
ब्रम्ह लग कहुँ तोय ।। जन्म ऊंचे घर पावे ।।
बुध प्रबीण धन पूर ।। राव होय जग मे आवे ।।
सुखराम जनम फिर दोय ले ।। सुख पावे कहुं तोय ।।
आत्म का गुरु सिष्ट मे ।। ताँ सू सनमुख होय ।।६६।।

ऐसे आत्मा का सतगुरु जब संसारमें प्रगटता और ऐसे सतगुरु के सन्मुख कोई जीव जाता तो ऐसे हंस के उपर के माया तथा होनकाल ब्रम्ह तो क्या सतस्वरुप ब्रम्ह के भी कोई भी गुन्हे या दोष नही रहते । ऐसा शिष्य एक ही जनम में आनंदपद में आनंदपद के सुख भोगने जाता किसीकारण नही गया तो जादामे जादा और दो जन्म मृत्युलोक में मनुष्य देह

में आता । ऐसे शिष्य का आगे का जनम उंचे घर में होता,वही बुध्दी से प्रवीन याने तेज रहता,धन से भरपूर रहता और राजाके समान अनेक सुख भोगता । ऐसे सुख वह शिष्य मृत्युलोकमें मनुष्य देहमें अधिक दो जनम भोगता और महासुख के आनंदलोक जाता ।।।६६।।

सतगुरु रूपि संतने ।। जे नही माने आय ।।
जिण सिर खून अपार हे ।। क्हेत बणे नही काय ।।
क्हेत बणे नही काय ।। करे जो निंद्या कोई ।।
तो पड़े अगत के माय ।। ताय की गत न होई ।।
सुखराम दास ओ खून रे ।। कहुं न छुटे जाय ।।
सत्तगुरु रूपी संत ने ।। जे नही माने आय ।।६७।।

और जो कोई सतगुरुरुपी संत को नही मानता उसके उपर कहते नही आते ऐसे अपार खून के आरोप लगते तथा जो ऐसे सतगुरुरुपी संत की निंद्या करता वह भूत,प्रेत,आदि अगतीके योनीमें पड्ता तथा महाप्रलयतक भयंकर भारी दु:ख भोगता उन दु:खोकी मर्यादा नही रहती ऐसे दु:ख पड्ते और महाप्रलय तक इन भयंकर दु:खो से गती नही हो पाती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सतगुरु रुपी संतको न मानने के और निंद्या करनेके गुन्हे, दोष ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,चिदानंद ब्रम्ह,शिवब्रम्ह,पारब्रम्ह तथा खुद सतस्वरुप इन किसी के भी पास गये तो भी मिटते नही ।।।६७।।

कवत ।।

ब्रम्हा को सुण खून ।। बिस्न की च्रणा जावे ।।
सिव को खूनी होय ।। बिष्ण जूं आण मिटावे ।।
याँ तीना को खून ।। सक्त के चर्णा छूटे ।।
सक्त खून सिर होय ।। ब्रम्ह बिन परथन तूटे ।।
सुखराम दास सत स्वरूप को ।। जो खूनी जग माय ।।
सो सुण दोष न छूटसी ।। बिन सत्तगुरु कहुँ जाय ।।६८।।

सतगुरुरुपी संत
↑
सतस्वरुप
↑
पारब्रम्ह होनकाल
↑
शक्ति
↑
विष्णु
↑
ब्रम्हा,महेश

।। कवित्त ।।

यदि ब्रम्हा का गुनाहगार रहा और वह विष्णु के शरणमें गया तो ब्रम्हाका खून छूट जाता है और शंकरका खूनी रहा और विष्णू की शरण में गया तो शक्ति उसका गुनाह छुड्ाती । यदी कोई शक्ति का गुनाहगार रहा तो वह गुनाह होनकाल ब्रम्हके शरणमें गया तो छूट जाता । ऐसे शक्ति का गुनाहगार शक्ति के निचे के पराक्रमवाले ब्रम्हा,विष्णु,महादेव के शरण में गया तो इनके शरण में जानेसे उसके गुनाह छूटते नही । इसीप्रकार होनकाल ब्रम्ह का गुनाह रहा और सतस्वरुप के शरण में गया तो सतस्वरुप के बलसे वे गुन्हे मिट जाते । सतस्वरुप के गुन्हे किये

और वह गुनाहगार सतगुरुरुपी संत के शरण गया तो उसके सभी गुनाह मिट जाते परंतु सतगुरु रुपी संत के साथ गुनाह किये तो ऐसे गुनाहगारके गुन्हे ब्रम्हा,विष्णु,महादेव, शक्ति,पारब्रम्ह,सतस्वरुप इन किसी के भी पास गये तो छूटते नही कारण सतगुरुरुपी संत से उपर माया,ब्रम्ह तथा सतस्वरुप में कोई भी पराक्रमी नही हैं ।।।६८।।

जत्यां को सिष होय ।। जंगम को व्हे आई ।।
तो नही लागे दोष ।। ऊंच पदवी आ भाई ।।
जंगम गुरु कूं त्याग ।। ब्यास को ध्रम संभावे ।।
तो नही लागे दोष ।। ऊंच पदवी नर पावे ।।
सुखराम दास तज ब्यास कूं ।। सन्यासी व्हे कोय ।।
तां कूँ दोष न लागसी ।। सुण ग्यानी क्हुँ तोय ।।६९।।

यदि यती गुरु का शिष्य रहा और वह यती गुरुको छोड्कर जंगम गुरुका शिष्य बन गया तो उसे दोष नही लगता । कारण जंगम गुरु की पदवी यती गुरुके पदवीसे उंची है और यदि कोई जंगम गुरुको छोड्कर व्यास गुरुका धर्म धारण किया तो जंगम गुरु के शिष्य को दोष नही लगता कारण व्यास गुरुकी पदवी जंगम गुरुके पदवी से उंची है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,व्यास गुरु को त्यागके यदि सन्यासी गुरु का शिष्य बना तो उसे दोष नही लगता कारण सन्यासी गुरु की पदवी व्यास गुरु से उंची है ।।।६९।।

कुंडल्या ।।

सन्यास क्रम कूं छोड़ रे ।। हुवे बेष्णू आण ।।
तो नही लागे क्रमरे ।। ओ पद ऊंचो जाण ।।
ओ पद ऊंचो जाण ।। बेष्णव पंथ मे आवे ।।
तो नही लागे पाप ।। सर्ब सूं ऊंचो पद पावे ।।
सुखराम सकळ पंथ त्याग कर ।। बित्त राग व्हे जाण ।।
तां कूँ दोष न सिष्ट मे ।। ओ मत्त ऊंच बखाण ।।७०।।

।। कुण्डलियाँ ।।

यदि कोई सन्यासी गुरु के कर्मकांड त्याग कर वैष्णव गुरु का शरणा लेता और वैष्णव गुरु के क्रिया कर्म करता तो उसे पाप नही लगता कारण वैष्णव गुरु का पंथ यतीगुरु,जंगम गुरु,व्यास गुरु,सन्यासी गुरु इन गुरु पदोसे उँचा पद है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है यतीपंथ,जंगम पंथ,व्यासपंथ,सन्यासीपंथ,वैष्णव पंथ ये सभी पंथ त्याग के वित्तराग विज्ञान का धर्म धारण करता तो उसे इस सृष्टी में दोष या पाप लगता नही कारण वित्तराग यह इन सभी पंथो से उँचा पंथ है ।।।७०।।

बित राग बिग्यान होय ।। इन को सिष व्हे आय ।।
जे सत्तगुरु संसार मे ।। जनम धरे जग माय ।।
जनम धरे जग माय ।। दोष ताँ कूं नही कोई ।।

ओ पद केवळ ब्रम्ह ।। ताय कूँ दुलभ जोई ।।
सुखराम दास अे गुरु किया ।। अब गुरु नही जग माय ।।
बित राग बिग्यान होय ।। इनको सिष व्हे आय ।।७१।।

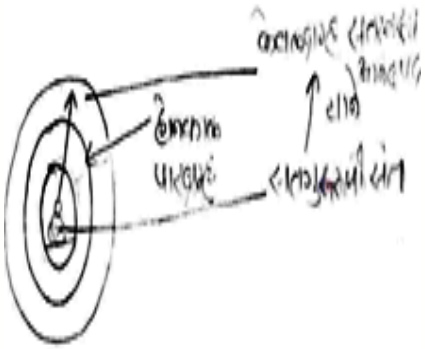

जो कोई वित्तराग विज्ञानी गुरु का शिष्य रहा और उसने वित्तराग विज्ञानी गुरु को त्याग दिया और सतगुरुरुपी संत के शरण में आया तो वित्तराग विज्ञानी शिष्य पे कोई दोष या गुनाह नही रहता ये संसार में ऐसे सतगुरुरुपी संत जनम धारण करते है वे खुद केवल ब्रम्ह ही रहते है । वे सतस्वरुप आनंदपद ही रहते है । ऐसे सतगुरु रुपी संत संसारमें मिलना दुर्लभ है । किसीने यती गुरु,जंगम गुरु,ब्यासगुरु,सन्यासी गुरु,वैष्णव गुरु,वित्तरागी विज्ञानी गुरु त्यागा और सतस्वरुपी सतगुरुके शरणमें आया तो उसके उपर इन किसीका कोई भी दोष नही रहता । परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है ऐसे सतस्वरुपी सतगुरुको गुरु किया और उन्हें त्याग दिया तो वह पाप,दोष तथा गुन्हें मिटाने के लिये सृष्टी में कोई दूजा सतस्वरुपी सतगुरु से पराक्रमी ऐसा गुरु नही है ।।।७१।।

ओर खून सब छूटसी ।। जिण सिर ब्होत उपाय ।।
अेक न छूटे खून ओ ।। सत्तगुरु को जग माय ।।
सत्तगुरु को जग माय ।। पद ईण आगे नाही ।।
कहो कुण छोड़े आण ।। ब्रम्ह लग पूंच न माही ।।
सुखराम दास ओ खून रे ।। सत्तगुरु सर्णे जाय ।।
ओर खून सब छूटसी ।। जिण सिर ब्होत उपाय ।।७२।।

दूसरे सभी दोष छूट जायेंगे कारण दूसरे सभी खूनोपर बहुत से उपाय है परंतु यह सतगुरु का गुनाह संसारमें ३ लोक १४ भवन और ४ पुरीयो में तथा ३ ब्रम्ह के १३ लोगो में कही भी गये तो भी नही छूट सकता । कारण इन सतस्वरुपी सतगुरुके आगे कोई भी पद नही है स्वयंम सतस्वरुप ब्रम्ह को भी इनके लिए खुन छुडाने की ताकद नही है फिर दुसरा कौन छुडायेगा ? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहाँ की,यह सतस्वरुप सतगुरु का खून सतगुरु के शरण में जाकर ही छूटेगा ।।।७२।।

सत्तगुरु सत्तगुरु के दियाँ ।। सत्तगुरु व्हे न कोय ।।
ना सत्तगुरु किण अंग सूं ।। ना प्रचा कर होय ।।
ना परचा कर होय ।। सत्तगुरु अेसा होई ।।
तां के भ्रम रहे नही कोय । सिष निपजे सब लोई ।
सुख राम नाव सिष मे जगे । से सुण साचा होय ।।
सत्तगुरु सत्तगुरु के दियाँ ।। सत्तगुरु व्हे न कोय ।।७३।।

परन्तु सतगुरू–सतगुरू,मुँखसे बोल देनेसे,कोई भी सतगुरू नही हो सकता है । सतगुरू किसी स्वभाव से भी नही होते है । स्वभाव अच्छा रहने से भी,कोई सतगुरू नही हो सकता है । और कोई भी पर्चे(चमत्कार)करनेवाले भी,सतगुरू नही होते है । सतगुरू तो ऐसे होते है,कि,उनसे शिष्यके मिलते ही,उस शिष्यमे किसी भी तरहका,भ्रम नही रह जाता है । उनके जो सभी लोग शिष्य बनेंगे,वे अच्छे निपजते है,(फलद्रुप होते है ।)सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि, जिस सतगुरूके योगसे,शिष्यमे नाम जागृत होता है । वही सच्चे सतगुरू है । ऐसा सतगुरू–
सतगुरू,मुँहसे कह देनेसे,कोई सतगुरू नही होता है ।।७३।।

उत्तम चिज संसार मे ।। सुण बिरळी सी होय ।।
मधम चीज बिन पार हे ।। गिणत न आवे कोय ।।
गिणतन आवे कोय ।। ग्यान कर देखो ग्यानी ।।
मेरो ग्यान अगाध ।। समज सी बिरळा आणी ।।
सुखराम बेद मत जक्त मे ।। घर घर घट घट जोय ।।
उत्तम चीज संसार मे ।। सुण बिर्ळी सी होय ।।७४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज विठ्ठलराव को कहते है की,उत्तम चिज संसार में बिरली सी होती है परंतु हलकी चिजे बिन पार रहती है । वे हलकी चिजे गिने भी नही जाती ऐसी अनगिनत रहती है । इसीप्रकार मेरा ज्ञान अगाध है,मेरे ज्ञान का ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति ,इच्छा,पारब्रम्ह इनको किसीको पार नही आता ऐसा अगाध है इसलिये मेरे ज्ञान को सभी ज्ञानियो ने ज्ञानके न्यायसे देखना चाहिये । इस अगाध ज्ञान की समझ किसी बिरले संत को ही रहती है । इसलिये मेरा ज्ञान घट घट घर घर में नही मिलता । किसी बिरला ठोड ही मिलता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जैसे हलकी चिजे अपार मिलती है,घर घरमें मिलती है इसीप्रकार वेद भेदके क्रियाकर्मका ज्ञान,मत,विधीयाँ,जगतमें घर घर में,घट घट में मिलती है परंतु मेरा ज्ञान बिरले जगह ही मिलता है ।।।७४।।

काच कथील फिर लोहो मे ।। समजे सब सेंसार ।।
कंचन लग जग बुध हे ।। युं मत्त बेद बिचार ।।
यूं मत्त बेद बिचार ।। रतन कोई बिर्ळा जाणे ।।
ज्यूं चीजां की प्रख ।। ब्रम्ह कूं संत पिछाणे ।।
सुखराम दास हीरे परे ।। कोय न समझण हार ।।
कवड़ी कांच कथीर मे ।। समजे सब नर नार ।।७५।।

कांच,कथील,तथा लोहे को सभी जानते है । कंचन तक समझने की जगहके कुछ लोगो की बुध्दी रहती है । इसीप्रकार बेद का मत समजने की बुध्दी जगत के कुछ लोगो में

रहती है । परंतु रतन और हिरे तक जानने की बुध्दी कुछ बिरले व्यक्तीयोमें ही रहती है । इसप्रकार जैसे रतन और हिरा परखने की बुध्दी बिरले व्यक्तीयो में रहती है ऐसे ही होनकाल ब्रम्हतक के संतको पहचाननेकी बुध्दी कुछ बिरले लोगो में रहती । परंतु रतन और हिरे के परे अमर फल , अमृत,अमरजडी की परखनेकी बुध्दी किसी में भी नही रहती है । इसीप्रकार मेरे अगाध ज्ञान को समझनेवाले कोई भी नही रहते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कह रहे है ।७५।।

कवत ।।

कळ ब्रछ कहिये जोय ।। रतन चिंत्रामण होई ।।
अमर जड़ी संसार ।। फेर इम्रत कहुँ तोई ।।
पारस पथर होय ।। नाव जाणे नर नारी ।।
आसा करे कोय ।। चीज प्रगट अे सारी ।।
सुखराम सजीवण ग्यान रे ।। यूं मेरो जग माय ।।
प्रख बिना सब लोप दे ।। पचे बेद सूं आय ।।७६।।

।। कवित्त ।।

कल्पवृक्ष,रतन,चिंत्रामण,अमरजडी,अमृत,पारस पत्थरके नाम सभी जगतके नर–नारी जानते और इन वस्तुओकी आशा भी करते । ये वस्तुये प्रगटरुपमें संसारमें भी है । इसीप्रकार आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते मेरे पास अमर फल,अमृत,अमरजडी,संजीवन जडी सरीखा सदा के लिये बार बार प्रलयमें जानेसे निकालकर अमर कर देनेवाला विज्ञान ज्ञान है परंतु जगतके लोगोको परिक्षा न होनेके कारण मेरा ज्ञान छोड देते है और वेदो में अमर होने के लिये पचते है ।।।७६।।

चोरासी का जीव ।। अनंत जाँ पार न कोई ।।
नर देहे छुछम जाण ।। भेद बिर्ळा कहुं तोई ।।
यूं बिरळा नर नार ।। होय मोख कूं जावण हारा ।।
क्रणी करे अनेक ।। ताय को अंत न पारा ।।
सुखराम कहे सुण ग्यान ओ ।। मेरो बिर्ळी ठोर ।।
ओर ग्यान घर घर फिरे ।। ज्यूं चोरासी ढोर ।।७७।।

जगतमे चौरासी लाख प्रकारके जीव अनंत जिसका पार आता नही इतने है । इसप्रकार वेदोकी करणीयाँ करनेवाले अनंत है । ८४००००० योनीके जीव(मनुष्य देह ८४ लाख योनी के गिणती मे बहुत कम सतस्वरुप संत–बिरले)उसमे मनुष्य देह बहुत कम है उसमे सतस्वरुप का भेद पाऐ हुये संत सतगुरु बिरले है । जैसे ८४ लाख योनी के जीव घर घर मे है उसी प्रकार वेदके करणीयो का भेद धारण किये हुये साधक पार नही आऐगे ऐसे घर–घरमे अनंत है । तथा जैसे मनुष्य ८४०००००योनीके जीवोके सामने सुक्ष्म है । उसीप्रकार होनकाल पारब्रम्ह का ब्रम्हज्ञान धारण करणेवाले ब्रम्हज्ञानी,वेद की साधना

करणेवालो के सामने सुक्ष्म संख्यामें है । इसप्रकार मोक्षमें जानेवाले सतस्वरुपका भेद पाये हुये सतगुरु संत बिरले है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की मेरा सतज्ञान घर घरमें नही है,कोई बिरले घरमें ही हैं । जैसे ८४के जानवर घर घर रहते वैसा भेद का ज्ञान घर घर रहता परंन्तु मेरा सतविज्ञान ज्ञान किसी बिरले घरमें ही मिलता । वह घर घरमें नही मिलता ।।।७७।।

चिंत्रामण कळ ब्रछ ।। फेर पारस कहुँ तोई ।।
यां लग समझे जक्त ।। कसणी करे जन कोई ।।
अे सुण प्रचा होय ।। निजर देखे नर नारी ।।
यूं हूण काळ लग भक्त ।। नार नर लागे प्यारी ।।
सुखराम दास फळ अमर में ।। क्युँ कर समजे लोय ।।
यूं सुण मेरा ग्यान कूं ।। बेद न जाणे कोय ।।७८।।

चिंत्रामन,कल्पवृक्ष,पारस यहॉ तक के चिजो को जगत समजता है । इसीप्रकार होनकाल पारब्रम्ह के भक्ती को जगत समजता है । जैसे इन चिंत्रामण,कल्पवृक्ष,पारस पाने के लिये कष्ट करते है और पाने के बाद इन वस्तुवोके गुणो को देखकर खुश होते है ऐसेही ब्रम्हग्यानी संत होनकाल पारब्रम्ह की भक्ती कष्ट से करते है। होनकाल पारब्रम्ह की भक्ती प्रगट करने पे संत मे परचे चमत्कार के गुण आते है । ऐसे संतो से परचे चमत्कार के गुण नर नारी दृष्टी से देखते है और नर नारीयो को ऐसे संतो के परचे चमत्कार प्यारे भी लगते है । जैसे चित्रामन,कल्पवृक्ष तथा पारस जगतमे है । अैसे अमरफल भी जगत मे है । परंतु जैसे चिंत्रावण चिंता दुर करने का,कल्पवृक्षमे मन की कल्पना पुरी करनेका,पारस मे लोहे को सोना बनानेका गुण है । वैसे अमर फल मे नही है । अमरफल मे नर नारी को महाप्रलय तक अमर करणेका गुण है । अिस अमर फल मे चिंत्रामण के समान चिंता दुर करनेका,कल्पवृक्ष के समान मन की कल्पना पुरी करनेका,पारसके समान लोहेको सोना बनानेका आखोसे दिखे अैसा चमत्कार नही रहते । अुसमे नर नारी अमर होनेका चमत्कार रहता । यह जगतके नर नारी अमर होनेका चमत्कार जीस दीन वह नर नारी अमर होती अुस दिन कीसीके नजरसे नही दिखता । अिन अमर हुअे वे नर-नारीयोके बराबर की नर-नारीयॉ मरती व पिढीयो न पीढी अमर हुअीवी नर नारीयॉ मरती नही तब जगतके नर नारी समझते की अमर फल खाअे हुअे नर-नारी अमर फलके खानेके कारण अमर हुअे है । जैसे होनकाल पारब्रम्हके भक्तीमे जगतके नर नारीयोके दृष्टीमे भावे अैसे चमत्कारोके गुण आते परंतु सतस्वरुपी सतगुरुमे नजरमे आनेवाले कोई गुण नहीं आते । अिसमे घटमे उलटके बकंनाल के रास्तेसे चढकर दसवेद्वार खोलकर अमरलोकमे जानेके परचे होते यह परचे जो अमरलोक जाता अुसीको होते अन्य किसीको समजे अैसे परचे यह नही रहते । अिसलीअे मेरे अमरपद के जाणेवाले ग्यानको कोई किस

प्रकार समजेगा ।।।७८।।

अम्र जड़ी अम्रफळ इम्रत ।। ताय न जाणे लोय ।।
भोळप माँय खाय सो खावे ।। प्रख न लेवे कोय ।।
अेसी भक्त हमारी जग मे ।। समझ हात नही आवे ।।
आतो बात ब्रम्ह सुंई आगे । अरथ कोण बिध लावे ।
सुखराम जक्त की बुधरे ।। रतन पारस परखे आय ।।
चिंत्रामण कळ ब्रछ सूं ।। आगे बुध न काय ।।७९।।

जैसे चिंतामन मे चिंता दूर करनेका परचा है,कल्पवृक्ष मे मन की कल्पना करनेका परचा है,पारस मे लोहे को सोना बनाने का परचा है वैसा जगत के नर नारीयो को नजर से समजे ऐसा परचा अमरजडी,अमरफल,अमृत मे नही है । इसलिये अमरजडी,अमरफल,अमृत को जगत के लोग जानते नही । भोलेपन मे खा गये तो खा गये,जैसे चिंतामन से मन की चिंता दूर होती,कल्पवृक्षसे मनकी कल्पना पुरी होती,पारस से लोहेका सोना बनता यह परखकर के नरनारी इन वस्तुवोको लेते परंतु अमरजडी,अमरफल,अमृत खानेसे अमर होता यह नजर मे आये आवे ऐसा परखे नही जाता । इसकारण अमृत,अमरफल,अमरजडी,को कोई भोलेपन मे खा लिया तो खा लिया,परखके खाने का सोचा तो खाये नही जाता । ऐसी मेरी भक्ती जगतमे है । भोला बनके मेरे पर विश्वास रखके धारण की तो ही यह भक्ती हाथ मे आती है । इससे अमर होता क्या यह परख के लेने की चाहना की तो इसमे जगत के माया ब्रम्ह के नजर मे आवे ऐसे परचे चमत्कार नही रहते इसकारण यह भक्ती यह मेरी भक्ती होनकाल पारब्रम्ह से आगे है । इस भक्ती को ऑखो से दृष्टी मे आवे विधीसे धारण करते आयेगा?आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतके ग्यानी,ध्यानीयोकी बुध्दी रतन,पारस,चिंतामन, कल्पवृक्ष तक की है इसके आगे अमरफल,अमरजडी,अमृतको परखनेकी नही है । मेरा तो ग्यान होनकाल पारब्रम्ह के आगे का है,जिसे होनकाल पारब्रम्ह भी नही जानता ऐसा है तो माया तथा होनकाल पारब्रम्ह तक के ग्यान बुध्दीवाले मेरे सतस्वरुप आनंदपद के ग्यान को कैसा समजेगे? ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोल रहे है ।।।७९।।

कंचन लग की भक्त मे ।। सब जग समझे आय ।।
फेर पारस लग जाणसी ।। बिरळा सा जग माय ।।
सब चीजा की प्रख ।। ओर आगे लग जाणे ।।
चिंत्रामण कळ ब्रछ ।। परख केसी बिध आणे ।।
सुखराम ग्रंथ कोटाँ कथ्या ।। रूम न पावे कोय ।।
ब्रम्ह लगरी भक्त रे ।। अर्था करले जोय ।।८०।।

सोनेतक सभी जगत जानते मतलब सोनेतक की वेद की भक्तीया सभी जगत जानता है ।

बिरले लोग सोने के आगे पारस तक जानते मतलब होनकाल पारब्रम्ह की भक्ती विरले लोक जानते । सोने के आगे पारस की पारख,पारस के आगे चिंतामन,कल्पवृक्ष की पारख सुक्ष्म लोग जानते परंतु अमरजडी,अमरफल,अमृत की परीक्षा सोना,पारस,चिंतामन, कल्पवृक्ष के समान करते नही आती तो जगत के लोग किस बिधीसे अमरजडी,अमृत, अमरफल की परीक्षा करेगे?और अमृत,अमरजडी,अमरफल को खायेगे? जिसप्रकार जगत के लोगो को अमरजडी, अमृत,अमरफल की परीक्षा करते नही आती । इसप्रकार जगतके लोगो को अमरपद के भक्ती की परीक्षा करते नही आती इसकारण जगत के लोग अमरपद की भक्ती धारण नही करते । किसी संत ने माया ब्रम्ह के ग्यान के करोडो ग्रंथ बाच लिये या कथ भी लिये तो भी अमरलोक का भेद एक रुम पर भी वह संत नही पायेगा । करोडो ग्रंथ बाचने से होनकाल पारब्रम्ह तक के भक्ती का भेद समज के होनकाल पारब्रम्हको पा लेता परंतु ऐसे करोड ग्रंथ कथनेसे सतस्वरुप की भक्ती रोमभर भी नही समज पाता । इसकारण करोडो ग्रंथ कथनेवाला संत सतस्वरुप की भक्ती प्राप्त नही कर पाता ।।।८०।।

कुंडल्या ।।

अनंत चीज की परख हे ।। कळ ब्रछ लग कहुं तोय ।।
अेक अमर जड़ी फळ अमर की ।। किमत प्रख न होय ।।
किमत प्रख न होय ।। यूं सुण ग्यान हमारा ।।
जे माने हंस आय ।। जक्त सूं होय रेहे न्यारा ।।
सुखराम अमी रस पीवियाँ ।। मुवा सजीवण होय ।।
यूं हंस मो सूं मिलत ही ।। गिगन चड़े कहुं तोय ।।८१।।

।। कुण्डलिया ।।

कल्पवृक्ष तक अनंत चिजो की परीक्षा जगत मे है यह मैं तुझे बता रहा हुँ परंतु एक अमरजडी ,अमरफल के हिकमत की परख जगत मे नही है । इसीप्रकार मेरा सतविग्यान का ग्यान है जिसकी परख जगत मे नही है यह तू सुन जो मेरे सतविग्यान ग्यान को मानता वही संत माया ब्रम्ह के होनकाल जगतसे न्यारा होकर रहता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की, अमीरस पिलाने से मरा हुवा मनुष्य सजीव हो जाता इसीप्रकार हंस मुझ से मिलने पर घट मे उलटकर हंस बंकनाल के रास्ते से गिगन पहुँच जाता और अमर हो जाता ।।।८१।।

अष्ट धात का पारखू ।। जग मे ब्होता होय ।।
हीरे लग कोई पारखू ।। ज्यूं त्यूं करले जोय ।।
ज्यूं त्यूँ करले जोय ।। प्रख पारस लग होई ।।
चित्रामण कळ ब्रछ ।। तॉ हाँ लग जाणे कोई ।।
सुखराम दास अम्र जड़ी ।। अमर फळ दे कोय ।।

तो पारख नर क्यूं गहे ।। सो बिध कहिये मोय ।।८२।।

अष्टधातु की पारख करनेवाले पारखू जगत मे बहोत रहते और हिरे तथा पारस लग के पारखू भी जगत मे जैसे वैसे ग्यान मिला के बन जाते । इसीप्रकार जैसे तैसे पारस के आगे चिंत्रामन, कल्पवृक्ष तक ग्यान मिलाके चिंत्रामन,कल्पवृक्ष को जाननेवाले पारखू बन जाते परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है अमरजडी,अमरफल,किसीने दिया तो भी लेनेवाला मनुष्य उसे किस प्रकार से पारख करेगा और लेयेगा यह भेद मुझे बतावो ।।।८२।।

हीरो घण सुं परखिये ।। पारस संग लोहो लाय ।।
चित्रामण की परख आ ।। चित्वन करे नर आय ।।
चितवन करे नर आय ।। सर्ब की पारख होई ।।
इम्रत फळ की प्रख ।। कोण बिध कहोनी मोई ।।
सुखराम कहे यूं जक्त सूं ।। मेरी प्रखन होय ।।
ओर संत कूं प्रख ले ।। जे अरथा मे होय ।।८३।।

हिरे को ऐरण के उपर रखकर घण की चोट मारने पे फुटा नही तो वह असली हिरा है ऐसा पारखू हिरे की परीक्षा करके ले लेता और पारस मिलनेपर उसकी परीक्षा करने के लिये लोहे से लगाकर लोहा कंचन हुवा तो वह पत्थर पारस ही है यह परीक्षा हो जाती । ऐसी ही चिंतामनी की यह परीक्षा है कि उसे हाथ मे लकर मन मे जो भी चिंतन करोगे वैसाही हो जाता इसीप्रकार से ये सभी परीक्षा है परंतु अमृतफल की परीक्षा किस विधीसे होगी यह मुझे बतावो । कोई कहेगा की मै अमरफल की परीक्षा करके ही खाउॅगा,परीक्षा किये बिना नही खाउॅगा तो उससे अमृतफल की परीक्षा कैसे होगी? उसकी परीक्षा खानेवाले से होगी ही नही तथा वह परीक्षा किये बिना खायेगा नही तो वह अमर ही नही होगा इसी तरह मेरा विग्यान ग्यान है । जो संत परीक्षा करके लेना चाहेगा तो उससे परीक्षा नही होगी और वह मेरा ग्यान प्राप्त नही कर सकेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,जैसे हिरा,पारस, चिंतामनी इन सभी वस्तु के परीक्षा समान अमरजडी की परीक्षा नही होती इसीप्रकार अन्य संतो की परीक्षा करके उनसे भेद धारण करते आता परंतु मेरा सतस्वरुप का भेद परीक्षा करके धारण नही करते आता । अन्य संतो के भेद की समज अनेक ग्रंथो मे दी है और वे विधीयॉ बाह्य चमत्कारो से समजती भी है परंतु मेरे पास के सतस्वरुप की विधी अमरजडी के परचे समान नजर से न समझनेवाली है ।।।८३।।

कवत ।।

हिरे लग की भक्त ।। आतमा इंद्रि मारो ।।
आ पारख जो होय ।। ओर कुछ नाय बिचारो ।।

पारस लग की भक्त ।। बिष्ण लग प्रचा देवे ।।
चिंत्रामण प्रब्रम्ह ।। सरब दु:ख मेटर लेवे ।।
सुखराम क्हे आ भक्त रे ।। यूँ प्रख न सक्के कोय ।
जे अमर फळ की प्रख रे । तो याँ की पारख होय ।।८४।।

।। कवित्त ।।

हिरे तक की भक्ती पॉचो आत्मा याने पॉचो इंद्रिये मारकर जितते है यह है । हिरे तक की भक्ती याने हिरा घन की चोट सहन करता है और फुटता नही वैसेही पॉचो इंद्रियो को न फूटने देकर दृढ रखनेवाली हिरे जैसी भक्ती है । कच्चा हिरा घन की चोट से फूट जाता है परंतु पक्का हिरा नही फूटता । ऐसी हिरे तक भक्ती की परीक्षा है । इससे जादा .दुजे कोई परीक्षा की समज इसमे नही चाहिये । विष्णूलोक तक की भक्ती पारस के समान है। जैसे पारस लोहेको लगते ही लोहा सोना होता यह चमत्कार होता ऐसे विष्णू लोक तक के भक्तीयो मे माया के परचे चमत्कार होते है । परब्रम्ह की भक्ती चिंतामन के समान है। चिंतामन जैसे मन के चिंतन किये वैसे फल देता और दु:ख मिटाता इसप्रकार पारब्रम्ह की भक्ती मन चाहे ऐसे सिध्दीयो के फल देता और होनकाल पारब्रम्ह मे पहुॅचकर आवागमन का दु:ख मिटाती। जैसे इन भक्तीयो की परख करते आती वैसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,सतस्वरुप के भक्ती की परख करते नही आती । जिसप्रकार हिरा,पारस,चिंत्रामन की परीक्षा करते आती वैसे अमर फल की परीक्षा करते आती थी तो मै बता रहा हुॅ उस सतस्वरुप के भक्ती की भी परीक्षा करते आती थी । ।।८४।।

कुंडल्यो ।।

अम्र जड़ी फळ अम्र सें ।। अमर हुवा जग माय ।।
इण गुण बिन गुण दूसरो ।। और न प्रगटे आय ।।
अवरन प्रगटे आय ।। सुत्त बित्त धन न पावे ।।
यूं पद सत्त स्वरूप ।। भूत परचा नही आवे ।।
यूं वो ग्रभ न पाछो आवसी ।। क्हे सुखदेव बजाय ।
अमर जड़ी फळ अमर सूं । अमर हुवा जग माय ।।८५।।

।। कुण्डलियाँ ।।

अमरजडी,अमरफल खानेवाले जगतमे अमर होते मरते नही ऐसा भारी गुण खानेवाले मे प्रगटता । इस गुण के सिवा पारस,चिंतामनी के समान धन बित्त प्राप्त होने का दुजा कोई सामान्य गुण प्रगट नही होता इसीप्रकार सतस्वरुप के भक्ती मे राक्षस,भूतो के समान जगत के लोगो को सुत बित धन प्राप्त कर देने के परचे चमत्कारो की गुण नही प्रगटता । जैसे अमरजडी खाने से खानेवाला महाप्रलयतक मरता नही और न मरने कारण गर्भ मे आता नही इसीप्रकार मेरे सतस्वरुप के भक्ती मे सदा के लिये अमर होता,कभी मरता नही और इसकारण कभी भी गर्भ मे आता नही ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज

बजा बजाकर कह रहे है ।।।८५।।

अमर फळ जो पावसी ।। सोई सोई जाणण हार ।।
ओर न जाणे प्राणीया ।। तिल भर भेद बिचार ।।
तिल भर भेद बिचार ।। सरब पीछे जस गावे ।।
यूं अमर जग माय ।। ओर मर मर दु:ख पावे ।।
सुखराम हंस मोकूं मिल्या ।। ताँ कूं लाँगू पार ।।
अम्र फळ जो पावसी ।। सोई सोई जाणण हार ।।८६।।

अमरफल जो खाता है वही इस अमरफल के गुण को जानता है जिसने अमरफल खाया नही ऐसा दुजा मनुष्य अमरफल के भेद को तिलभर भी जानता नही । जिसने जिसने अमरफल खाया नही ऐसे दुजे लोग मर मर जाते और खानेवाला अमर रहता,मरता नही यह समजने पे पिछे सभी अमरफल का जस गाते । परंतु जब अमरफलका पेड सुख गया रहता । इसप्रकार समज आने के बाद खाना भी चाहा तो मिलता नही । इसीप्रकार जो हंस मुझको मिलते है उनको मै अमर करता हुँ और प्रलय मे जानेवाले काल के देश पार कर देता हुँ ।।।८६।।

अम्र फळ कूं प्रहरे ।। से सब मर मर जाय ।।
यूं मेरो उपदेश तज ।। जुग जुग गोता खाय ।।
जुग जुग गोता खाय ।। मुढ अब समझे नाही ।।
उलटी निंद्या ठाण ।। सरब प्रळे कू जाही ।।
बड भागी सुखराम क्हे ।। से हंस माने आय ।।
अम्र फळ कूं प्रहरे ।। से सब मर मर जाय ।।८७।।

अमरफल को जो त्याग देते है वे सभी मर मर जाते है इसीप्रकार मेरा सतस्वरुप विज्ञान का उपदेश जो त्याग देते है वे जुग जुगमें गोते खाते है । ये ग्यानी,ध्यानी,पंडीत,ऋषी तथा जगत के लोग मूर्ख है अभी मेरे कैवल्य विग्यान ग्यान को समजते नही उलटी मेरी निंदा करते है । मेरी निंदा करते है मतलब मेरे मे सतस्वरुप प्रगट हुवा है उस सतस्वरुप की निंदा करते है । मुझमे सतस्वरुप प्रगट हुवा है यह न समजने के कारण मेरी निंदा करते । ऐसी निंदा करनेसे निंदा करनेवाले प्रलय मे जाते और काल के महादु:ख भोगते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ग्यानी,ध्यानी,सिध्द,ऋषी,मुनी,षटदर्शनी तथा जगत के लोगो को समजा रहे की वे ही हंस बडे भाग्यशाली है जो मै बता रहा हुँ उस सतस्वरुप के भेद की बात मानते है ।।।८७।।

कवत ।।

कही न माने कोय ।। भेद अर्था मे नाही ।।
किम तारूं जग सेंग ।। सोच मोटो मुझ माही ।।

म्हे आयो सेंसार ।। धार कारण इण सोही ।।
सत्त लोक नर नार ।। लेर जाऊं सब लोई ।।
सुखराम क्हे सत्त स्वरूप की ।। आ अग्या मुज होय ।।
हंस हंस सब भेज दे ।। जग मे रखो मत कोय ।।८८।।

।। कवित्त ।।

आज मेरा कहना ग्यानी,ध्यानी,साधू तथा जगतके लोग ये कोई भी नही मानते और अमरलोक मे जाने का भेद,वेद,शास्त्र,पुराण तथा माया ब्रम्ह के ग्यानीयो के ग्रंथ मे नही है इसलिये यह सभी जगत जो जालिम काल के मुख मे दु:ख भोग रहा है ऐसे सारे जगत को मै कैसे तारु यह मुझमे बहुत बडी चिंता पडी है । मै संसारमे अैसा मनमे धारके आया था की अे जगत के सभी स्त्रि–पुरुष मै सतलोक लेकर जाउँगा । परंतु अैसा मै नही कर पा रहा हुॅ । साथ मे सतस्वरुप परमात्मा से मुझे सभी हंस,हंस कालके मुखसे निकालकर सतस्वरुप मे भेज दो । मायाके जगत मे रखो मत यह आज्ञा भी हुअी है परंतु मै सभी हंसो को अमरलोक ले जाने का काम नही कर पा रहा हुँ ।।।८८।।

कुंडल्यो ।।

मत्त ग्यान माने नही ।। श्रुत ग्यान मे न्याव ।।
अवध ग्यान मे सूझसी ।। लाख कोस को ड़ाव ।।
लाख कोस को ड़ाव ।। मन प्रचे सोई कर हे ।।
आ केवळ की प्रख ।। अमर फळ खाय न मर हे ।।
सुखराम बरस बदीत हुवाँ ।। नर के उपजे भाव ।।
मत्त ग्यान माने नही ।। श्रुत ग्यान मे न्याव ।।८९।।

मतज्ञानी यह अपने मत मे पक्का रहता,वह मतज्ञानी किसी का मत मानता नही श्रृतग्यानी हर छोटी मोटी वस्तु का ग्यान से न्याय करता अवधी ग्यानी लाख कोस की बात बैठे जगह पे देखता मन पर्चे का ज्ञानी मनके चाहीअे वैसे पर्चे क रता । इसप्रकार इन मतग्यानी,श्रृतग्यानी ,अवधी ग्यानी,मनपर्चे ग्यानी ीन सबकी पारख जगतमे समझे अैसी है । परंतु केवल याने सतस्वरुप ग्यानीकी परिक्षा अिस प्रकार समजे अैसी नही है । अैसे केवल याने सतस्वरुप के ग्यान की परिक्षा अमरफल के खाने के समान है । अमरफल खानेवाला मरता नही,अन्य न खानेवाले मर मर जाते तब जगत के लोगो को पारख आती व अमर फल के प्रती भाव उपजता अिसी प्रकार केवल की परख है । आज मै कितना भी समजता हुॅ तो भी जगत के लोगो को मेरी परख नही होती । मेरी परख कुछ समय व्यतीत होनेके बाद ही होगी । अिस व्यतीत हुअे वे समयमे अनेक लोक अमरलोकमे जाअेगे । जब जगतके लोगोको मेरा पराक्रम समजेगा व मेरे प्रति भाव उपजेगा । अुस वक्त जगतके सभी हंस अमर लोक जायेगे ।।।८९।।

।। इति ब्रम्हचारी विठ्ठलराव का सम्वाद सम्पूर्ण ।।